

राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 20.00 रुपए

जिगरूभा

सुपर कमांडो ध्रुव



एक आकर्षक
स्टीकर मुफ्त

इन्सान हमेशा से अपने भविष्य की रोज में व्यस्त रहता है, लेकिन अपने बीते हुए वक्त की तरफ मुड़कर भी नहीं देखता! पर जो इन्सान अपने अतीत को ढूँढ़ने पर मजबूर हो जाता है, वही समझ सकता है कि अपने भूतकाल की तलाश करना कितना मुश्किल होता है। खासतौर से ऐसा इन्सान जिसका अतीत होता तो है, पर उसके बारे में उसने न तो कभी सुना होता है और न देखा। जैसे सुपर कमांडो ध्रुव !



मैं जब से अपना अतीत ढूँढ़ने निकला हूँ, तब से तुम मेरे रास्ते में रोड़े अटका रहे हो, जिवसा ! मैं तब तक अपने अतीत तक नहीं पहुँच पाऊँगा जब तक मैं यह पहली नहीं सुलभा लेता कि तुम कौन हो!

यह रहस्य मेरे अलावा या तो मेरे कुछ चुनिन्दा विद्रोही आदमी जानते हैं, और या फिर ऊपर वाला...

... कुछ ही पलों में तुम ऊपर ही पहुँच जाओगे। फिर खुद ही ऊपर वाले से जान लेना इस पहली का हल, कि कौन है...

जिवसा

कथा एवं चित्र:
अनुपम सिन्हा
इंकिंग: विठ्ठल कांबले
सुलेख व रंग:
सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता

यह एक युद्ध था, जिसका रणक्षेत्र था- फ्रांस-

कुछ पता चला बेरा कि जिवसा ने 'रिसर्च सेंटर' पर किस चीज के लिए हमला किया था? क्या ले गया वह वहां से?

कुछ पता नहीं चला ध्रुव! सिर्फ इतना पता है कि जिवसा वहां से एक खास और गुप्त आविष्कार उड़ाकर ले गया है। उसने उस आविष्कार से संबंधित सारे वैज्ञानिकों की मार डाला है।

इसलिए अभी तक हमको कुछ खास जानकारी नहीं मिल पाई है। वैसे दूसरे सूत्रों के जरिए जानकारी जुटाई जा रही है। जानकारी मिल तो जाएगी, पर उसमें कुछ वक्त लगेगा।

मैं बड़ी दुविधा में फंसा हुआ हूँ। इतना तो मुझे पता चल गया है कि मेरा अतीत ल्योन में है। पर ये जिम्मा बार-बार मुझे वहां पहुंचने से रोक रहा है। जिवसा का जरूर मेरे ल्योन पहुंचने से कुछ संबंध है...

...और ये संबंध जाने बगैरे ल्योन जाकर भी कुछ हासिल होने वाला नहीं है।

काकातुआ शायद ऐसा कुछ जानता हो, जिससे तुमको मदद मिल सके!

काकातुआ कुछ बोल नहीं पा रहा है, बेरा! शायद अपने मालिक पर हुए हिंसक हमले के सदमे के कारण यह अपनी आवाज खो चुका है।

पालतू पशु-पक्षियों में ऐसा ही जाना एक सामान्य बात है।...

...पर अब भी यह हमें ल्योन की स्पष्ट तक जरूर पहुंचा सकता है!

फिलहाल जिवसा, ल्योन में नहीं, यहीं पेरिस में ही है। पर कहाँ, यह किसी की नहीं पता।

मैं पता लगा लूंगा बेरा! जिवसा एक बड़ा सुबूत पीछे छोड़ गया है। अपना 'ब्लिंप' और उसके उड़ाने की दिशा!

उड़ने की दिशा से मुझे इतना तो पता लगा ही गया है कि वह पेरिस के उत्तर-पूर्व भाग में है। और इतने बड़े ब्लिंप को वह आसानी से छिपा नहीं सकता!...

...वह या तो उसकी हवा निकालकर छत पर छिपाएगा, और या फिर टुकड़े-टुकड़े करके फेंक देगा। और अगर उसने इन दोनों में से एक भी काम किया तो मैं उसकी गार्दन तक पहुंच जाऊंगा!

जिग्सा की भी ध्रुव की क्षमताओं का सहसास हो रहा था—

तुम पर मरोसा करके मैंने बहुत बड़ी भूल की थी सात्रे ! तू ध्रुव की 'क्रशर' के हाथों मरवा नहीं पाया। उल्टे ध्रुव उसकी हराकर 'रिसर्च सेंटर' तक पहुंच गया, और उसने तो लगभग मुझे पकड़ ही लिया था। अगर फ्रांसवा वक्त पर वहां न पहुंच जाता, तो मैं तो फ्रांसी चढ़ने के रास्ते पर चल चुका था !

हमने दुश्मन को बहुत कमजोर समझा था जिग्सा। सोचा था चींटी की तरह मसल देंगे। पर यह तो डायना सीर निकला। पर अब मैं...

अब तुम कुछ नहीं करोगे। अब जिग्सा ध्रुव को समझ गया है। क्योंकि मेरे पास ध्रुव से संबंधित सारी जानकारी आ चुकी है।...

अब उसका अगला कदम होगा, मुझे तक पहुंचना और मैं उसकी खुद ही उस जिग्सा पजल' के दुकड़े सफाई करूंगा, जिसकी सुलभता सुलभता वह अपनी मौत तक पहुंच जाएगा !...

... और उस 'पजल' का पहला दुकड़ा होगा यह 'ब्लिंप का कतरा हुआ दुकड़ा'।

और एक बार यह कांटा हमारे सीने से निकल गया तो फिर हमको कोई नहीं रोक पाएगा... फिर हमारी बंधक होगी सारी दुनिया, और हम वसूलेंगे अपनी कीमत !

यह कांटा तो निकल ही जाएगा, पर फिर भी मैं कोई कमी नहीं छोड़ना चाहता !

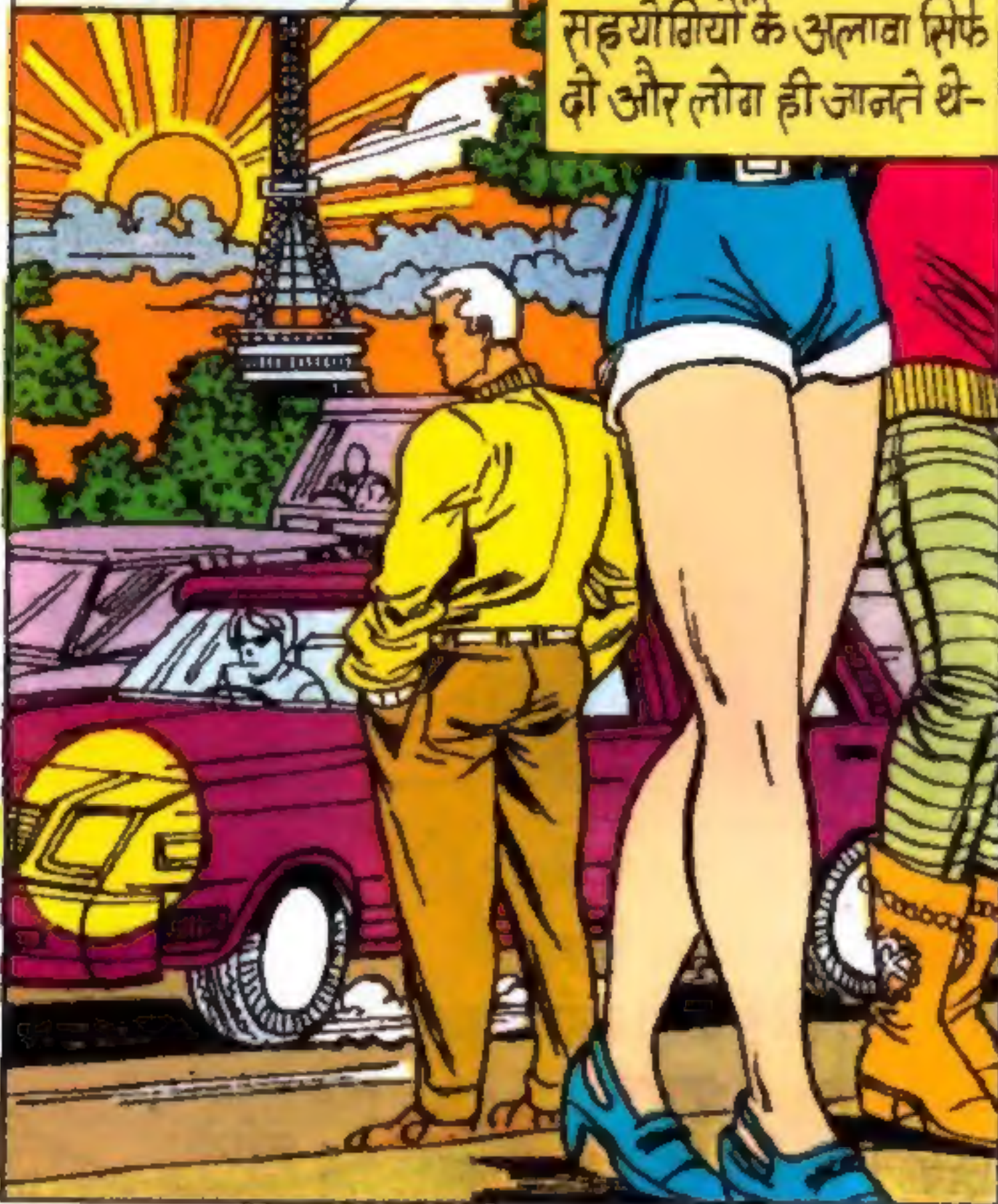
मार्सेल, तुम तुरन्त ल्योन के लिए रवाना हो जाओ ! वहां की सारी तैयारी तुम करोगी !

और अगर ध्रुव अपनी किस्मत के सहारे हमसे बचकर ल्योन तक पहुंच ही गया, तो तुमको पता ही है कि तुमकी क्या करना है ?

आई तो डार्लिंग। तुम फिक्र मत करो !

फिक्र करने की जरूरत तो दूसरे लोगों की थी। लगातार पाँच सप्ताह इन्सानों की-

क्योंकि मुसीबत तो उन पर ही टूटने वाली थी। इस बात की जिवसा और उसके सहयोगियों के अलावा सिर्फ दो और लोग ही जानते थे-



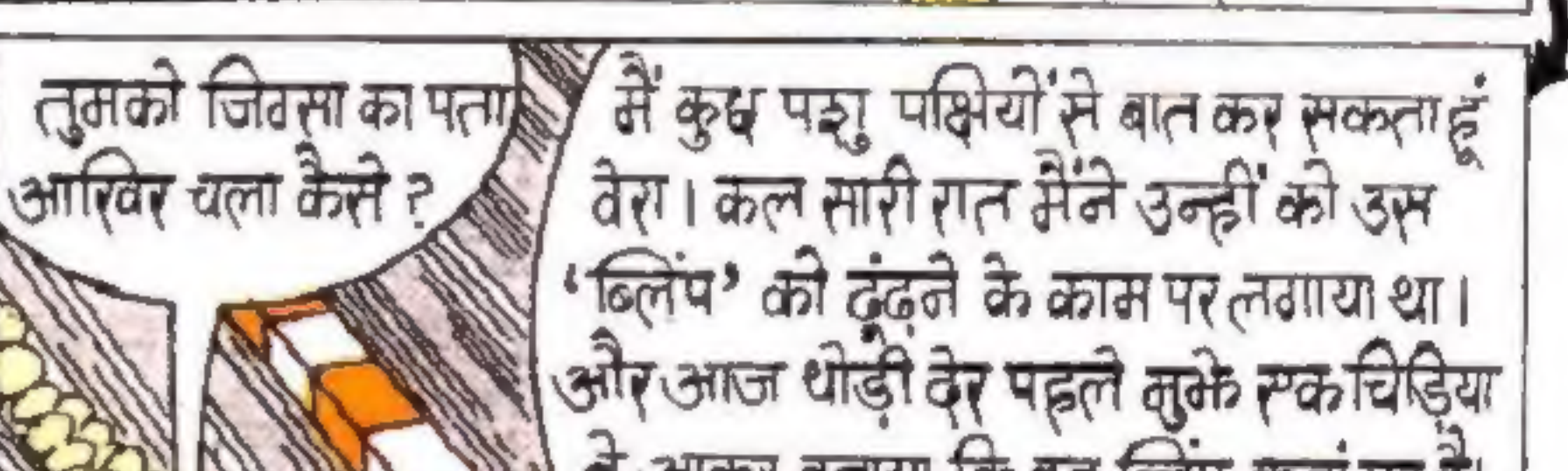
ध्रुव और वेरा-



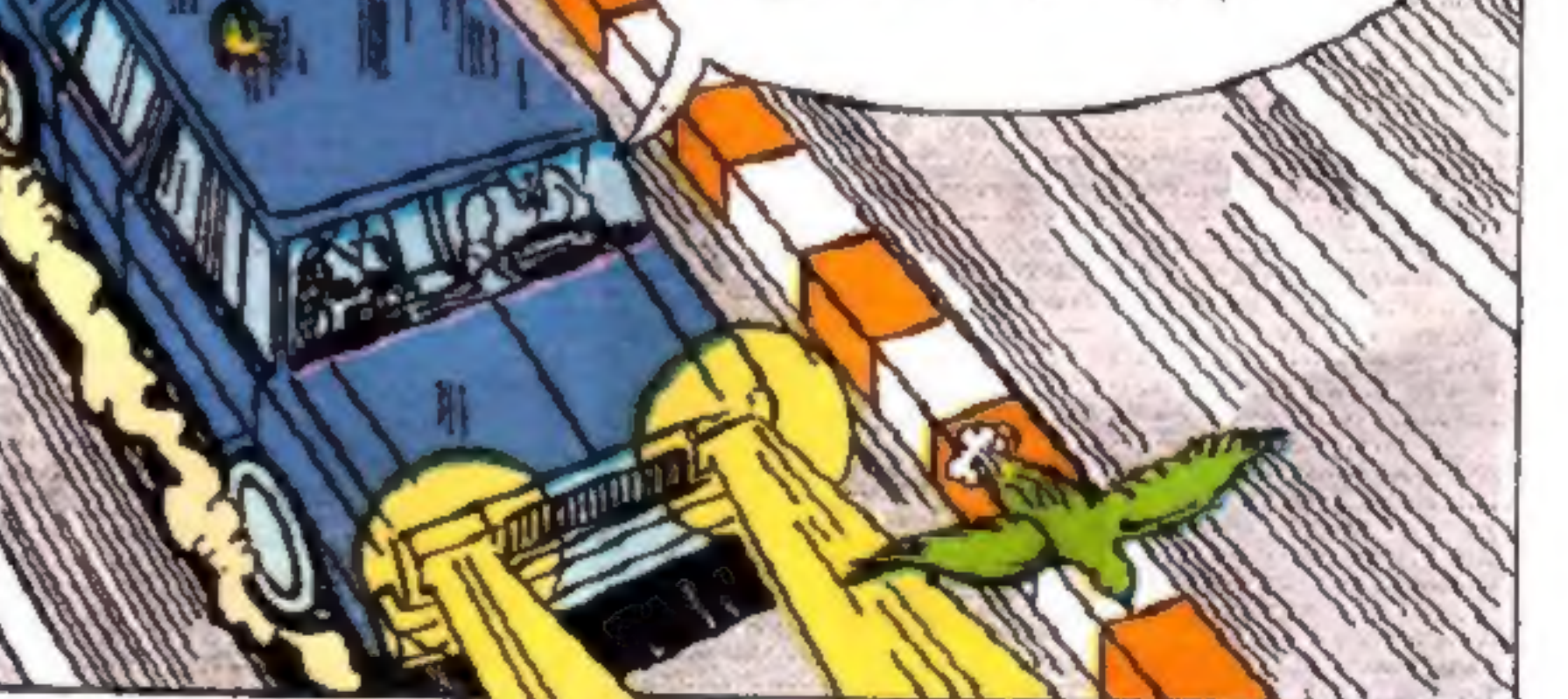
कल सारी रात और आज और फिर स्कदम से पूरा दिन तुम न जाने कहां- तुम आकर कहते हो कहां घूमते रहे ध्रुव! कि मैं इस रूप में तुम्हारे साथ चलूँ! आखिर हम जा कहां रहे हैं?



हम जिवसा के पास जा रहे हैं, वेरा! और तुमको मैंने इसलिए साथ चलने की कहा है, क्योंकि तुम पेरिस की मुकसे ज्यादा अच्छी तरह से जानती हो!...
...और ये रूप इस लिए क्योंकि मैं किसी पुलिस वाले को साथ ले जाना नहीं चाहता!



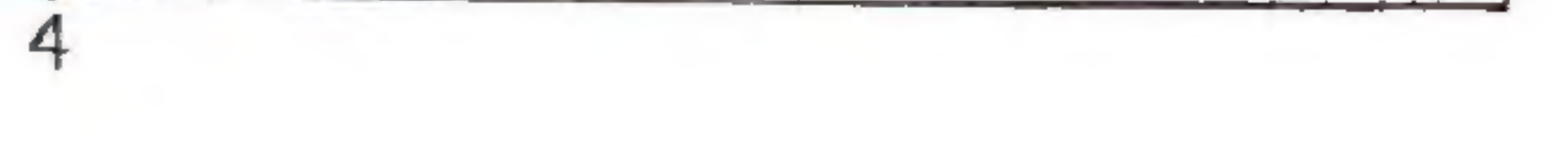
तुमको जिवसा का पता आखिर चला कैसे? मैं कुछ पशु पक्षियों से बात कर सकता हूँ वेरा। कल सारी रात मैंने उन्हीं की उस 'ब्लिंप' की टूटने के काम पर लगाया था। और आज थोड़ी देर पहले तुम्हें एक चिड़िया ने आकर बताया कि वह ब्लिंप कहां पर है। देरवी! वही चिड़िया गाड़ी के आगे उड़कर हमें रास्ता दिरवा रही है।



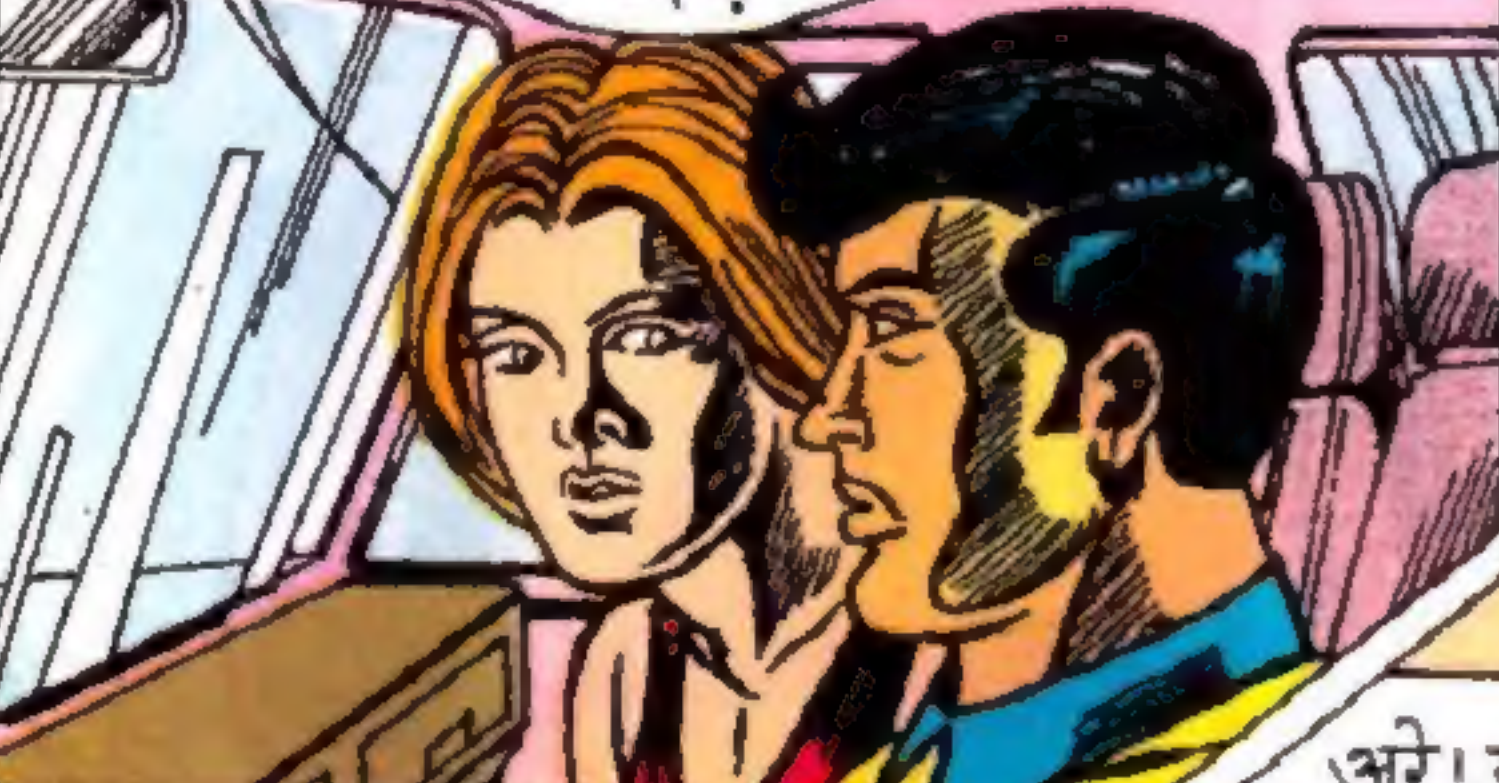
वेरा खुद ही चिंहक उठी-

अरे! यह चिड़िया तो 'पोर्शे-हार्ट' की तरफ जा रही है!

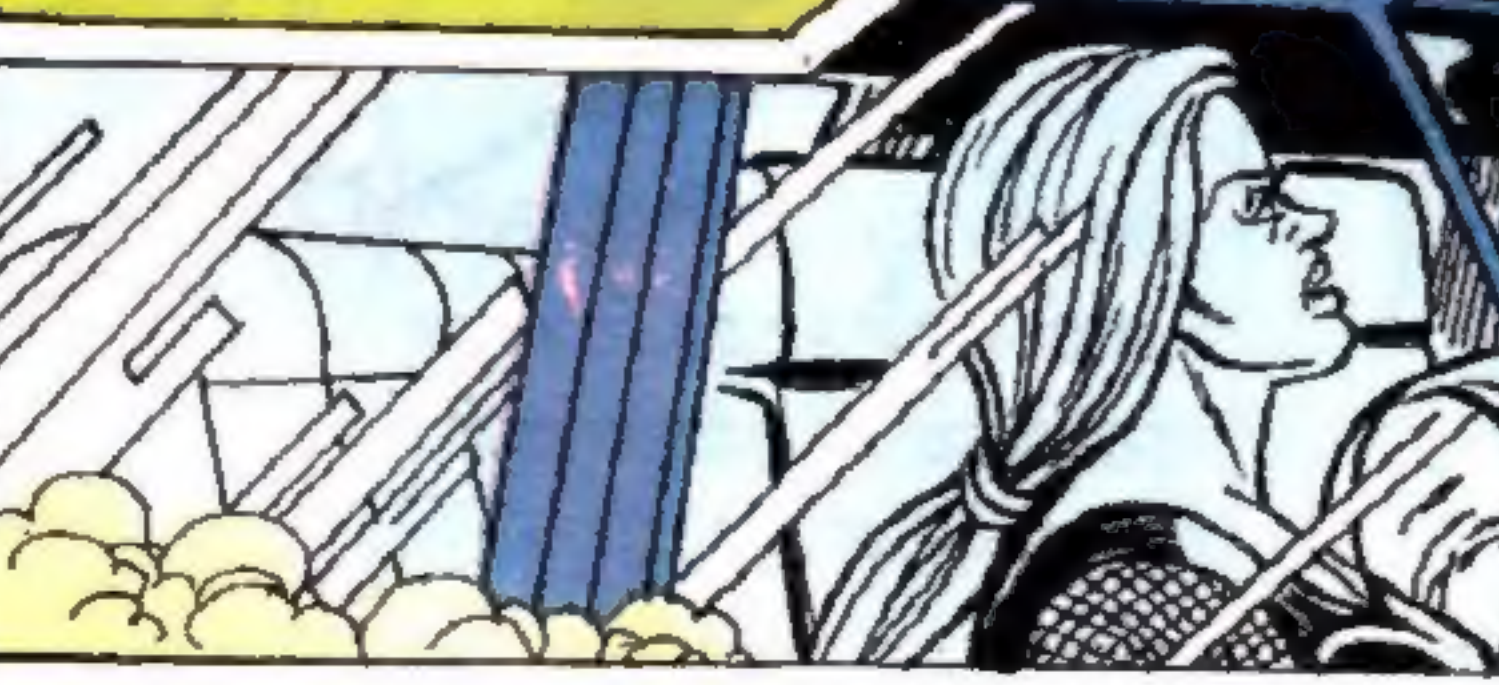
पोर्शे हार्ट? उसमें ऐसी क्या खास बात है?
'पोर्शे हार्ट' ऊंची बर्फाली पहाड़ियों से घिरा हुआ इलाका है ध्रुव! वहां पर सिवाय स्कीइंग के और कुछ नहीं होता!...

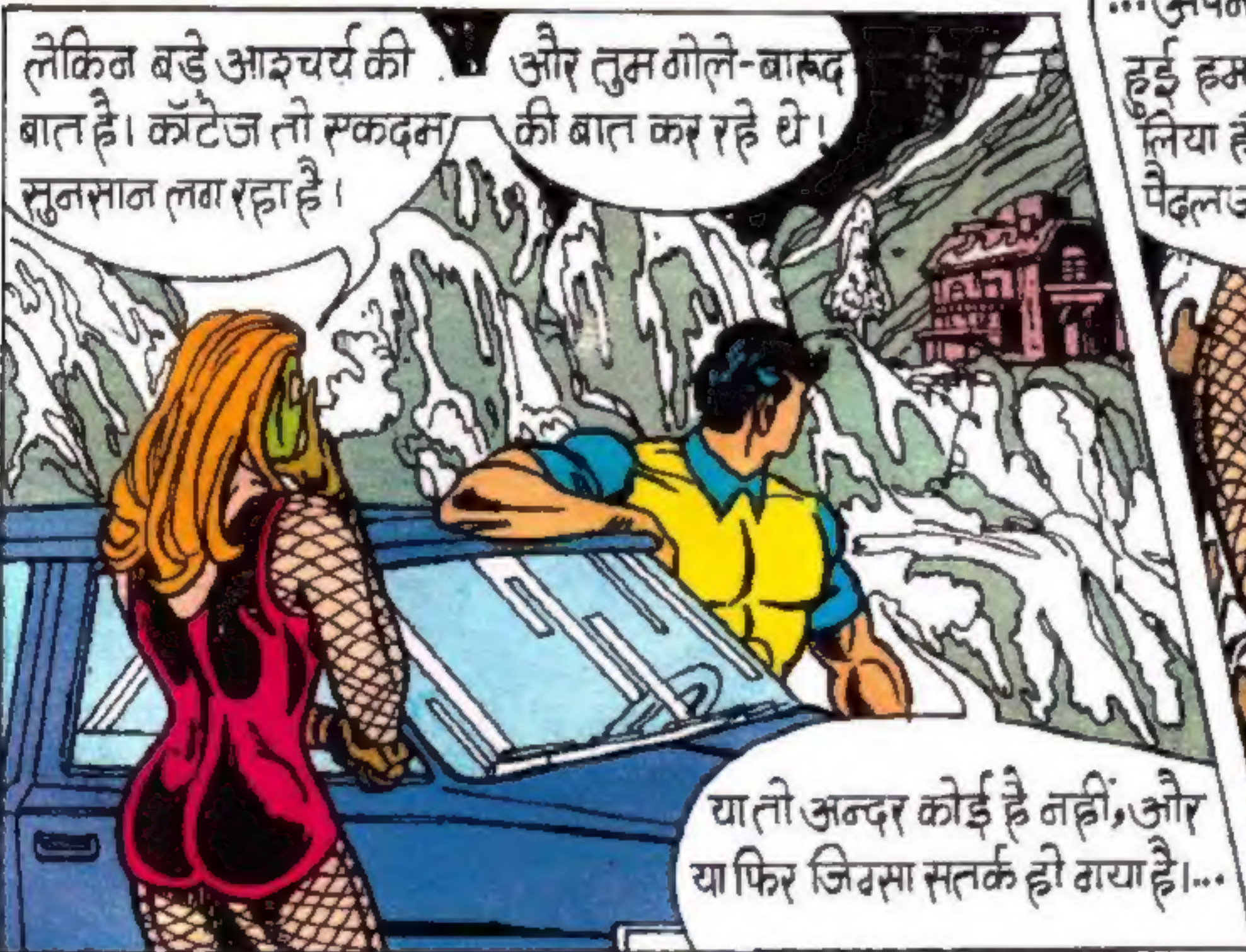
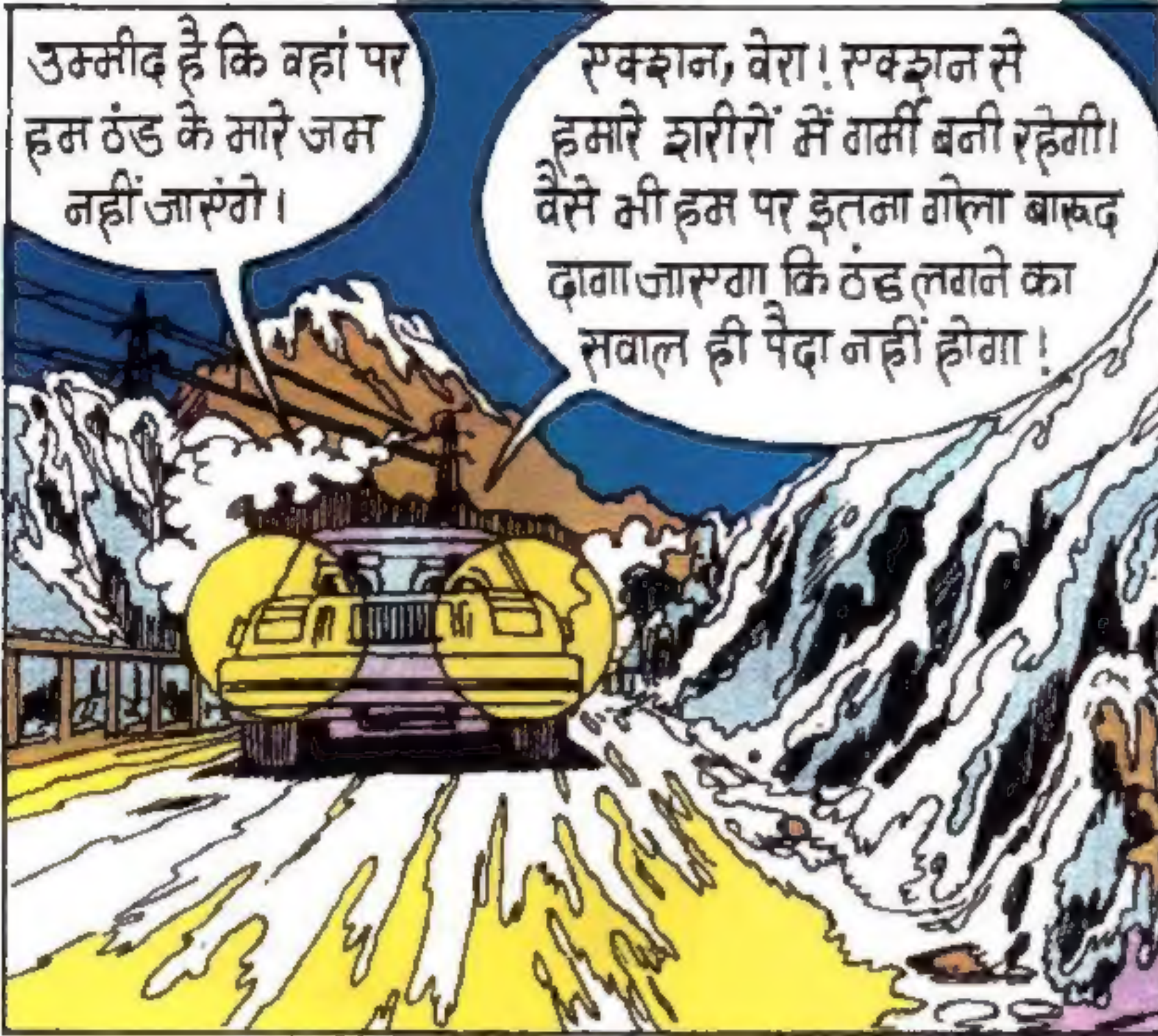


तुम तो कमाल के आदमी हो ध्रुव! पर मुझे अब तक यह नहीं पता कि तुम जिवसा के पीछे-पीछे फ्रांस तक कैसे आ गए?
तुम्हारे 'अतीत' का ये क्या चक्कर है?



वेरा के इस सवाल का ध्रुव जवाब देने ही वाला था कि तभी-







...तूने ही फ्रांस्वा के हाथों मेरे पिता ल्यूबेक का खून करवाया था न! अब उस खून का जो वजन मेरे दिल पर है, उसे तेरा बहता खून ही हल्का कर सकता है!

वेरा का शरीर एक घातक सवाटे किक जड़ने के लिए हवा में उड़ता-

जिग्सा, किक से बचने के लिए एक सूत भी नहीं सरका -

और उसी पल धुव सारा माजरा समझ गया-

नहीं, वेरा! रुक जाओ!

लेकिन क्रोध से सुलझती वेरा की किक, जिग्सा की गर्दन से टकरा चुकी थी-

'कड़क' की एक आवाज के साथ, जिग्सा की गर्दन टूटकर हवा में उड़ गई-

और वेरा की आंखें फैल गई-

यह तो पुतला था!

हाहाहा! हां, बेजान पुतला! जैसे मुर्दा बेजान होता है। जैसे अभी दो सेकंडों में तुम बेजान होने वाले हो!

क्योंकि धक्का लगते ही पुतले के अन्दर लगा बम फटने वाला है।

वेरा, बाहर कूदी!

दोनों के शरीर अभी हवा में ही थे-

कि तभी जिवसा का पुतला, एक कर्णभेदी आवाज के साथ फट पड़ा। और साथ ही साथ उस जर्जर कोंटेज के भी टुकड़े-टुकड़े हो गए-



विस्फोट के उस भीषण धक्के ने ध्रुव और बेरा को भी हवा में उछालकर दूर फेंक दिया-

लेकिन रेन समय पर कूद जाने के कारण दोनों को ही कोई शारीरिक क्षति नहीं पहुंची-

ओह! जिवसा को पहले से ही हमारे यहां तक पहुंचने की आशंका थी। इसी लिए उसने अपने पुतले में बम और कैसेट रखकर तैयारी कर रखी थी।

चाद करो! उसने मेरे साथ तुमको भी 'स्वागतम' कहा था!

इसका मतलब है कि इस वक्त भी जिवसा हमको कहीं से देख रहा है! और उसकी पता है कि हम बच चुके हैं।

लेकिन अब वह कुछ नहीं कर सकता ध्रुव! उसका वार तो खाली चला गया!



नहीं, बेरा! वह कैसेट नहीं थी! जिवसा को पहले से यह नहीं पता हो सकता था कि मेरे साथ तुम भी आ रही हो!

ओह! तुम ठीक कह रहे हो। यानी वह टेप नहीं, स्पीकर था! पर इसका क्या मतलब हो सकता है?



ध्रुव का खयाल सही था, और
वेरा का अन्दाजा स्कंदम गलत-

दूर ऊँचाई पर खड़ा जिग्सा, दोनों
की एक-एक हरकत को देख रहा
था, और उसने एक प्लान फेल हो
जाने की सूरत में दूसरा प्लान भी
तैयार करके रखवा हुआ था-

ओफ़! ध्रुव का दिमाग
बहुत तेज है। वह जरूर पहले
ही समझ गया होगा कि वह मैं
नहीं, मेरा पुतला है। और वहाँ
पर पुतला होने का एक ही
अर्थ हो सकता था कि उसमें
बम रखवा हुआ है।

यानी आप भी
मेरी तरह
असफल रहे
जिग्सा?

जिग्सा कभी असफल
नहीं होता साने। जानता है
क्यों? क्योंकि जिग्सा
असफलता को भी हराने
की तैयारी करके रखता है।
तू देखता जा जिग्सा
का कमाल!



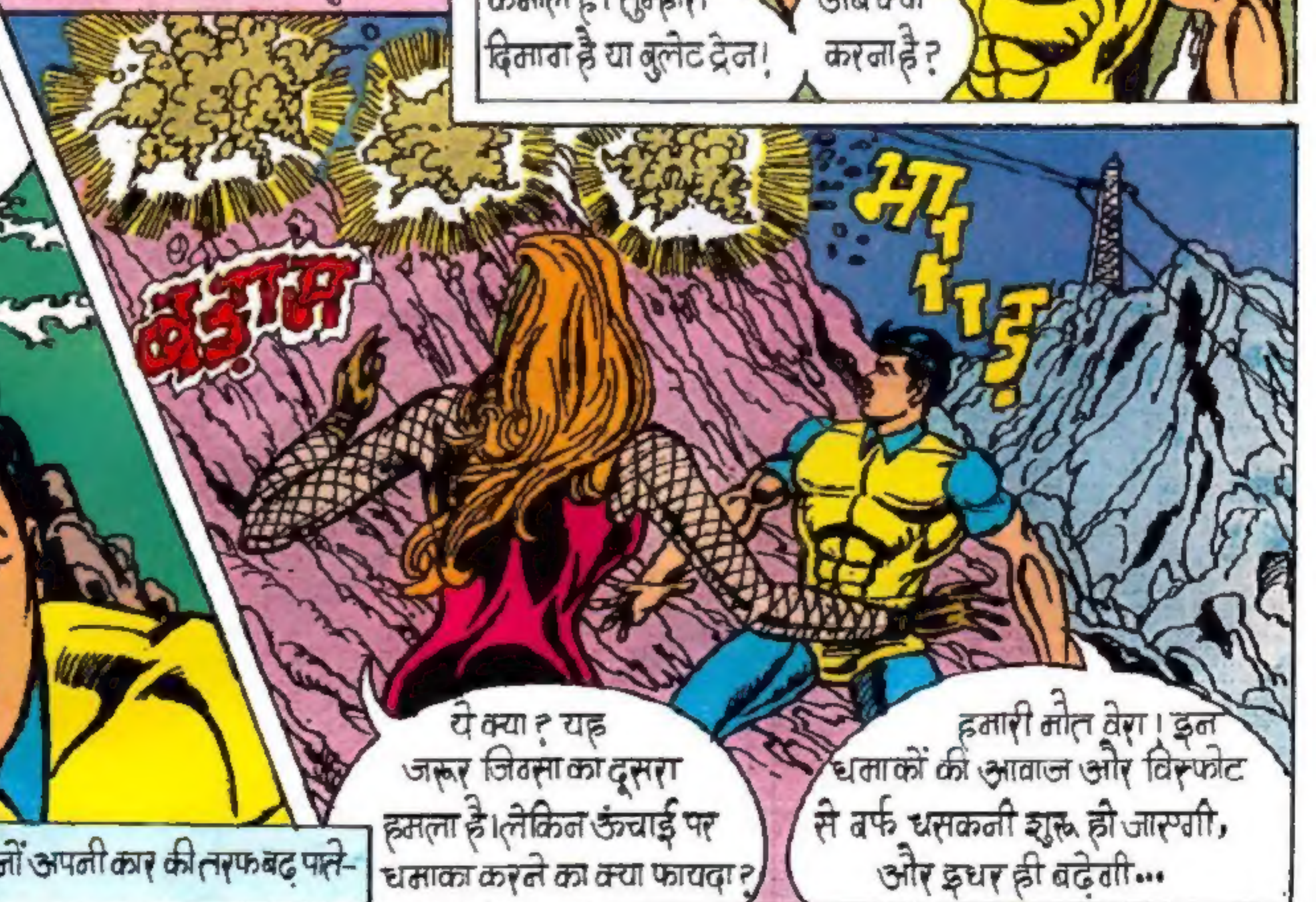
तुम जिग्सा के पुतले
पर वार होने से पहले ही
समझ गए थे कि वह
पुतला है। अंधेरे में भी
तुमने यह कैसे समझ
लिया ध्रुव?

सबसे पहले तो जिग्सा खुद कॉटेज में
होने का खतरा कभी मोल नहीं लेता।
दूसरे चिड़िया ने बता ही दिया था कि
अन्दर कोई नहीं है। यानी कोई जिन्दा
या मुर्दा प्राणी नहीं है। और तीसरा
तुम्हारे वार से बचने की उसने कोई
कोशिश नहीं की। तीनों बातें
मिलाकर मैं सचचाई जान
गया!



फिलहाल तो यहाँ से
जितनी जल्दी हो,
निकल लो। जिग्सा के
दूसरे हमले का इन्तजार
करना बुद्धिमानी नहीं है
वेरा।...

दो-तीन धमाके एक साथ हुए-



लेकिन इससे पहले कि दोनों अपनी कार की तरफ बढ़ पाते-

ये क्या? यह
जरूर जिग्सा का दूसरा
हमला है। लेकिन ऊँचाई पर
धमाका करने का क्या फायदा?

हमारी मौत वेरा। इन
धमाकों की आवाज और विस्फोट
से बर्फ धसकनी शुरू हो जाएगी,
और इधर ही बढ़ेगी...



ओ माई गॉड!
पूरा बर्फ का पहाड़
हमारी ओर गिर
रहा है।...

...हम बचकर
भाग नहीं
पाएंगे।

ये लकड़ी का तरक्ता,
जो केबिन के फटने से टूटकर यहां पर
आ गिरा है, हमको बचा सकता है वेरा!



मुझे कस
कर पकड़
लो!

लकड़ी के तरक्ते की 'स्की' की तरह
इस्तेमाल करते हुए ध्रुव और वेरा बर्फ़ीली
ढलान पर नीचे की तरफ फिसलने लगे-

ध्रुव ने मौत की कई बार छकाया था,
लेकिन इस बार मौत की रफ्तार कुछ
ज्यादा ही तेज थी-

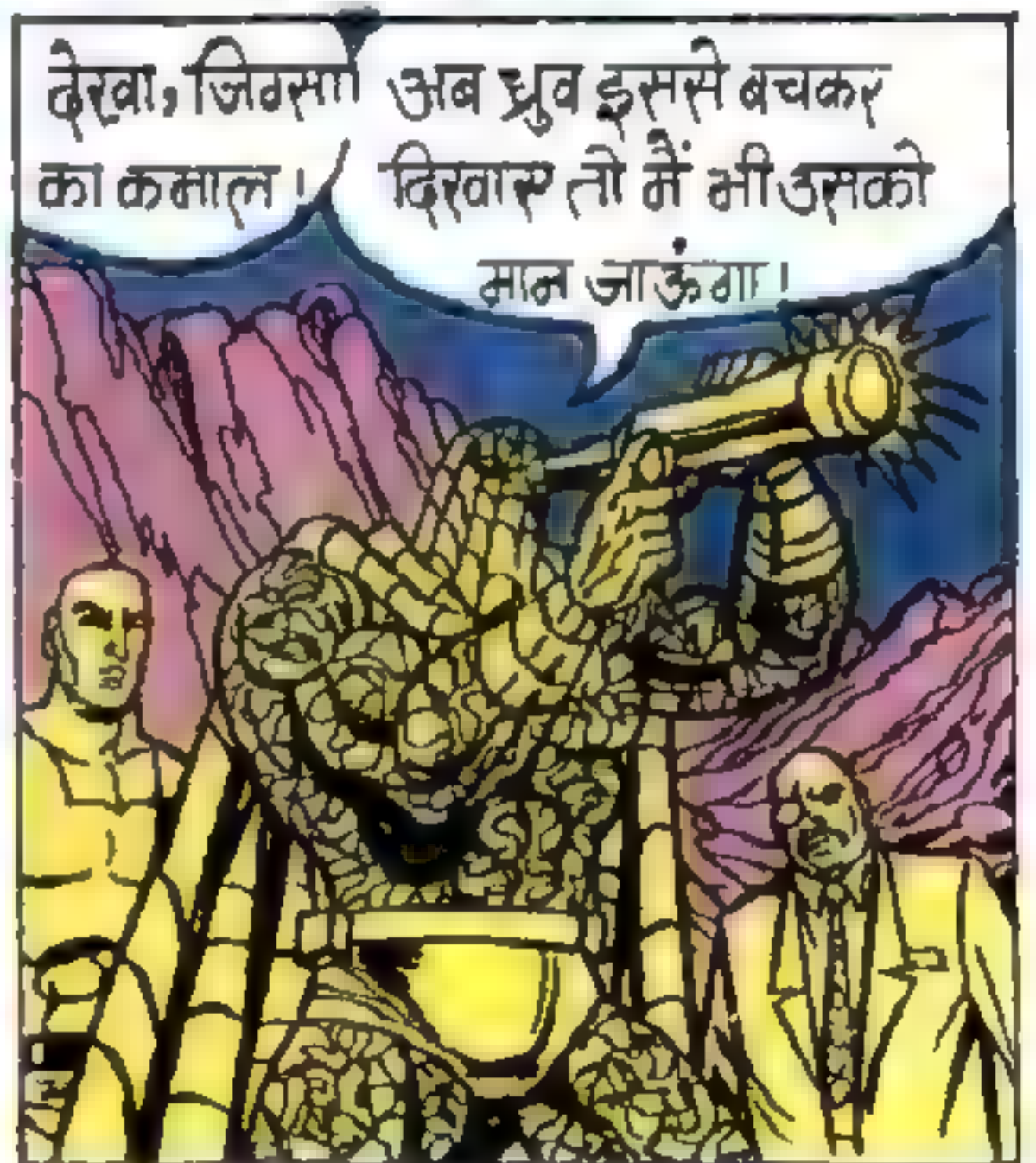


आह! बर्फ़ हम तक पहुंच
चुकी है ध्रुव! कुछ ही पलों में इसके
नीचे दबकर हमारी कब्र बन जाएगी!



और बर्फ़ की गिरती दीवार तेजी से उनका
पीछा करने लगी-

हाहाहा!



देरवा, जिवसा अब ध्रुव इससे बचकर
का कत्ताल! दिरवार तो मैं भी उसकी
मान जाऊंगा।

...हर मुसीबत एक सेसी
हिम्मत मत हारो सुरंग होती है जिससे निकलने
वेरा!... का रास्ता भी होता है।...

इस मुसीबत से निकलने का भी कोई रास्ता मिलेगा... मिल गया। वे 'हार्ड-टेंशन' केबल!

अपने दस्ताने उतार कर मुझे देना, बेरा!

कुछ ही पलों बाद, हाथों में दस्ताने पहने हुए ध्रुव, अपनी नाइलो-स्टील की स्टार लार्डन की हवा में उड़ाल रहा था-

... वापस ध्रुव के हाथों में आ टिकी-

हवा में उड़ती हुई स्टार लार्डन 'हार्ड-टेंशन' के केबलों के ऊपर से होती हुई...

आह! बर्फ हमको दबा रही है ध्रुव!

अब चिन्ता की कोई बात नहीं बेरा!...

... बस, मुझे कसकर पकड़े रहना!

अगले ही पल- बर्फ की गिरती दीवार नीचे ही रह गई-

और ध्रुव और बेरा के शरीर 'हार्ड-टेंशन केबल' को 'रोप वे' की तरह इस्तेमाल करते हुए नीचे की तरफ लहरा गए-

वाह, ध्रुव, वाह! लेकिन तुम्हारे दस्ताने की जरूरत क्यों आ पड़ी?

मेरी स्टार-लार्डन में स्टील के तार भी हैं बेरा, और उनके कारण मुझे झोंक लेना सकता था!

लेकिन तुम्हारे चमड़े के दस्तानों के कारण वह खतरा नहीं रहा!

यह दृश्य देख रहा जिवसा,
क्रोध से पावाल हो गया-

बच गया कमीना ?
हाईटेक्नोलॉजी के बल पर
भूलकर बच गया ?

उस तरफ तो
मेरा ध्यान ही
नहीं गया था !

हंस मत सात्रे ! हंस
मत ! जिवसा की
योजना तो सही थी,
बस उसकी किस्मत
खराब थी !

मैंने ध्रुव पर सारी
जानकारी मंगवाई। उससे
यह अनुमान लगा लिया
कि वह मुझे दुंदने के
लिए पशु-पक्षियों की मदद
लेगा मैंने उसकी ही मदद
के लिए जान बूझकर
ब्लिप का टुकड़ा यहां
कॉटेज के बाहर छोड़
दिया था !

तड़क

हा हा हा ! कह रहे थे कि
जिवसा 'असफलता' को भी
हरा सकता है !

फिर सब कुछ
वैसे ही हुआ, जैसे
मैंने सोचा था...

...पर जरा सी
बाफलत के कारण
ध्रुव बच गया !

सचमुच, मेरी
किस्मत ही खराब
रही होगी !

अब आपके रज्जाल से
ध्रुव क्या करेगा, जिवसा ?

अब वह ल्योन
के लिए खाना होगा,
लूका बेटे ! क्योंकि वह
समझ चुका होगा कि मैं
जान गया हूं कि वह मुझे
दुंद रहा है, और अब मैं
सतर्क हो गया हूं !

अब पेरिस में वह मुझे
दुंद नहीं सकता ! अब वह
मुझे और अपने अतीत को
ल्योन के घोर की पकड़कर
दुंदने की कोशिश करेगा !

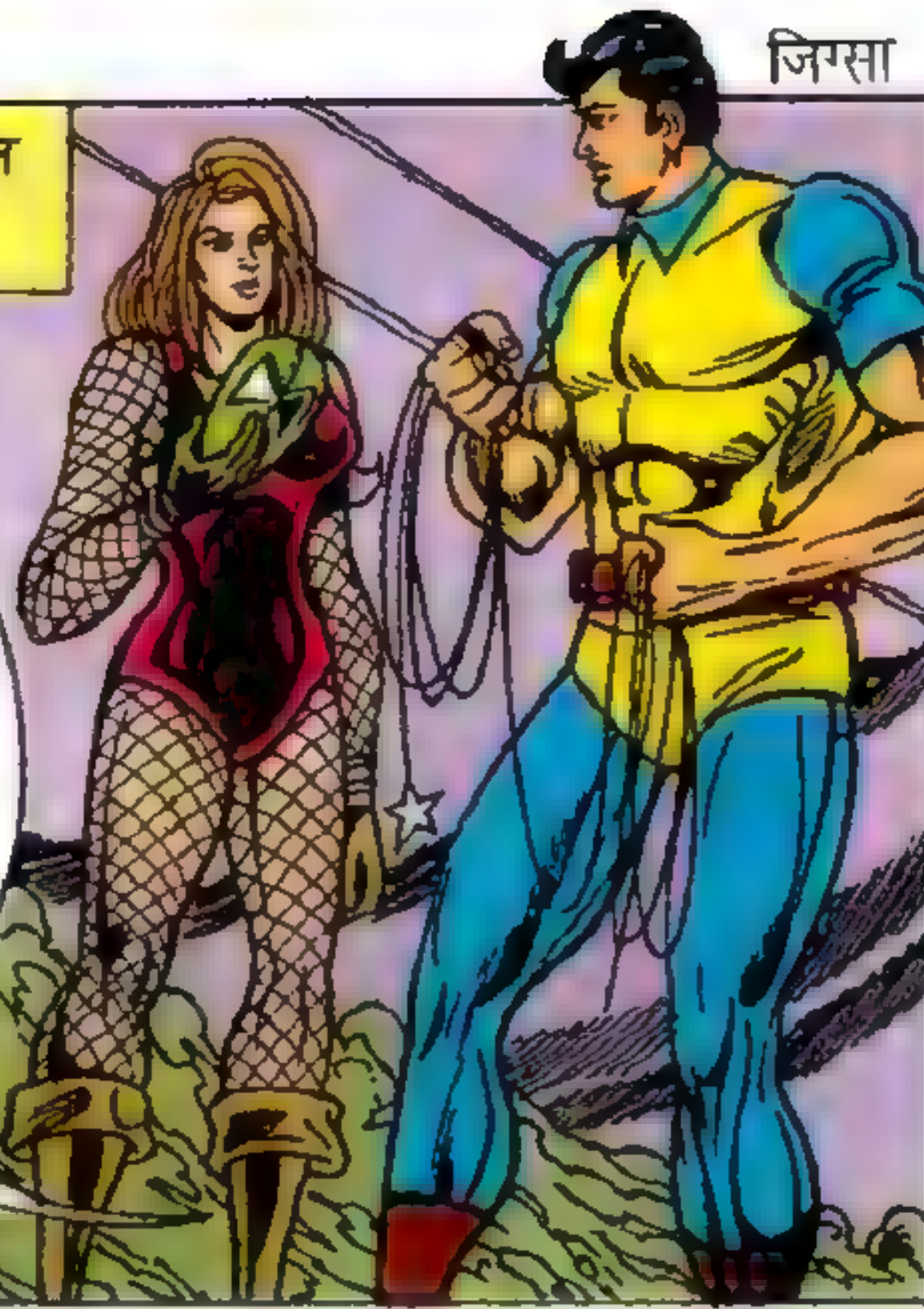
और सबसे बड़ी समस्या
यह है कि हमको भी अब
ल्योन जाना है, और वहीं
जाना है, जहां पर ध्रुव जा
रहा है !

लेकिन इस सात्रे का
क्या करना है जिवसा !
यह हमारे बारे में काफी
कुछ जानता है, और अब
यह हमारे किसी काम
का नहीं रहा है !

घेर्य ररवो लूका ! इसके बारे
में मैंने पहले ही सोच ररवा है !
पहले अपने पेरिस वाले हैड-
क्वार्टर पर चली !

जिग्सा ने ध्रुव के बारे में बहुत
अबुमान नहीं लगाया था-

जिग्सा के इस हमले
से साफ जाहिर है बेरा कि
उसकी मेरी हरकतों की पूरी
जानकारी है। इस हमले के
विफल होने के बाद वह और
अच्छी तरह से छिप जाएगा।
अब यहां रहकर उसकी
दुंदने की कोशिश करनी
बेकार है!



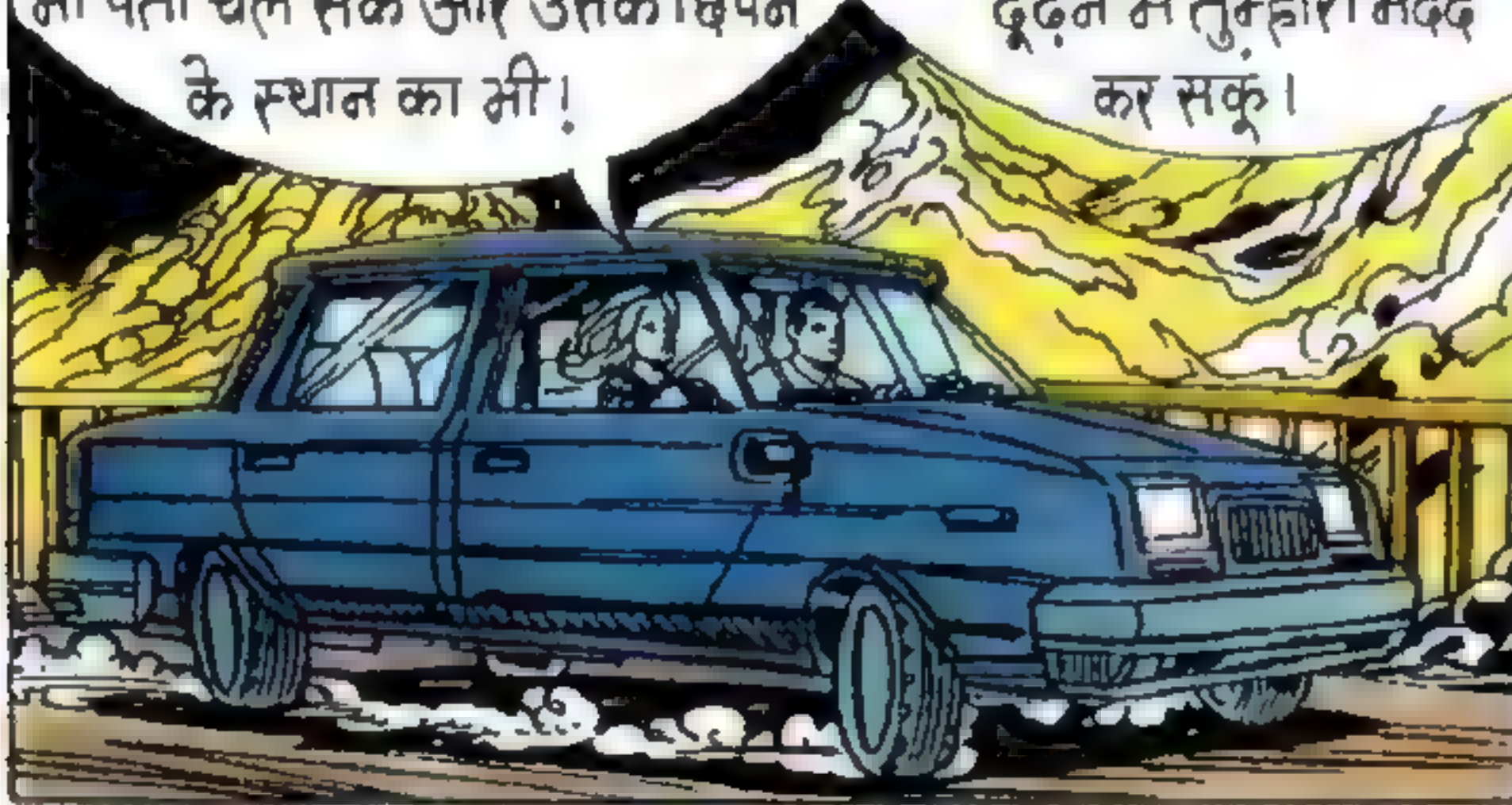
तो फिर तुम
अब क्या करोगे
ध्रुव?

यहां समय बेकार हो रहा
है। अब मैं लियोन जाऊंगा,
शायद वहां से मुझे कुछ
और जानकारी मिल
सके!

अगर ऐसा है तो मुझे
पहले घर जाना पड़ेगा,
और फिर पुलिस स्टेशन!

क्योंकि घर जाकर मुझे कपड़े
बदलने होंगे और पुलिस स्टेशन जाकर
यह पता करना होगा कि जिग्सा ने 'डिफेंस
रिसर्च लैब' से क्या उड़ाया है। शायद
यह पता चलने से जिग्सा के इरादों का
भी पता चल सके और उसके छिपने
के स्थान का भी!

साथ ही साथ मैं
कुछ दिनों की छुट्टी के
लिए भी सफाई कर दूंगी
ताकि तुम्हारे साथ लियोन
जाकर तुम्हारी एस्टेट
दुंदने में तुम्हारी मदद
कर सकूँ।



और फिर-पेरिस के
पुलिस हेडक्वार्टर में-

सबसे पहले तो हम
आपसे माफी चाहते हैं
मिस्टर ध्रुव कि हमने आपके
स्वर्गीय पिता रघुवंशी उर्फ
इयाम पर हत्या का
आरोप लगाया!



हमारे अष्ट कमिशनर फ्रांस्वा के
मृत्युपूर्व बयान से यह जाहिर हो गया है
कि आपके पिता रघुवंशी को इंस्पेक्टर ल्यूबेक
की हत्या की साजिश में फंसाया गया था!

हम यह भी जान चुके हैं कि
यह साजिश जिग्सा के इशारे
पर रचाई गई थी। बस हमको
यह पता नहीं चला कि आखिर
जिग्सा का आपसे या आपके
परिवार से क्या संबंध है। उसने
आखिर ऐसा किया क्या? और
वह भी पच्चीस साल
पहले।



मैं फिलहाल लियोन जा रहा हूँ,
डिप्टी कमिशनर साहब। और
मुझे उम्मीद है कि वहां से
आपके सवालों के जवाब लेकर
ही वापस आऊंगा!

अभी तो आप मुझकी यह
बताइए कि जिग्सा ने रिसर्च
लैब से क्या चुराया है?

ये जानकारी तो गुप्त है, ध्रुव! लेकिन जिवसा से तुम्हारे संबंध और तुम्हारे अपराध के खिलाफ अभियान को देखते हुए मैं तुमको बताने में कोई हर्ज नहीं समझता!

दरअसल, जिवसा एक ऐसा अपराधी है, जो सिर्फ ऐसे आविष्कार और तकनीकों की ही चुराता है जो या तो प्रायोगिक चरण में ही और या पूर्णतया की स्थिति में पहुंचने वाले हों!



इस बार भी उसने वही किया है। एक ऐसा आविष्कार चुराया है उसने जो लगभग पूरा हो चुका था। उस आविष्कार का नाम है...

...स्क्रेमबलर!

यह कोई हथियार है क्या?

हथियार ही समझो! 'स्क्रेमबलर' एक ऐसा यंत्र है जो टीजी 'नामक अदृश्य तरंगों' छोड़ सकता है। इन तरंगों की किसी भी कंप्यूटर सिस्टम पर फोकस करके दूर से ही उस सिस्टम की प्रोग्रामिंग को बदला जा सकता है!

आजकल पूरी दुनिया में तैनात लगभग सारे सुरक्षा सिस्टम, जैसे मिसाइल वगैरह कंप्यूटर सिस्टम से ही जुड़े रहते हैं!



इस 'स्क्रेमबलर' के जरिए किसी भी मिसाइल सिस्टम के प्रोग्राम को बदलकर, अपने कब्जे में लिया जा सकता है!

चीन के इस भाग में अमेरिका और ब्रिटेन सहित कई देशों की आणविक मिसाइलें तैनात हैं...

...स्क्रेमबलर के जरिए जिवसा, इन सारी मिसाइलों की प्रोग्रामिंग बदलकर, उनमें अपनी प्रोग्रामिंग डाल सकता है, और इस तरह मिसाइलों को अपने कब्जे में कर सकता है!...

ओह! तब तो जिवसा तक पहुंचना अब और भी जरूरी हो गया है। बन्दर के हाथ में तलवार आ गई है मुझे इजाजत दीजिए डी.सी.पी. साहब!

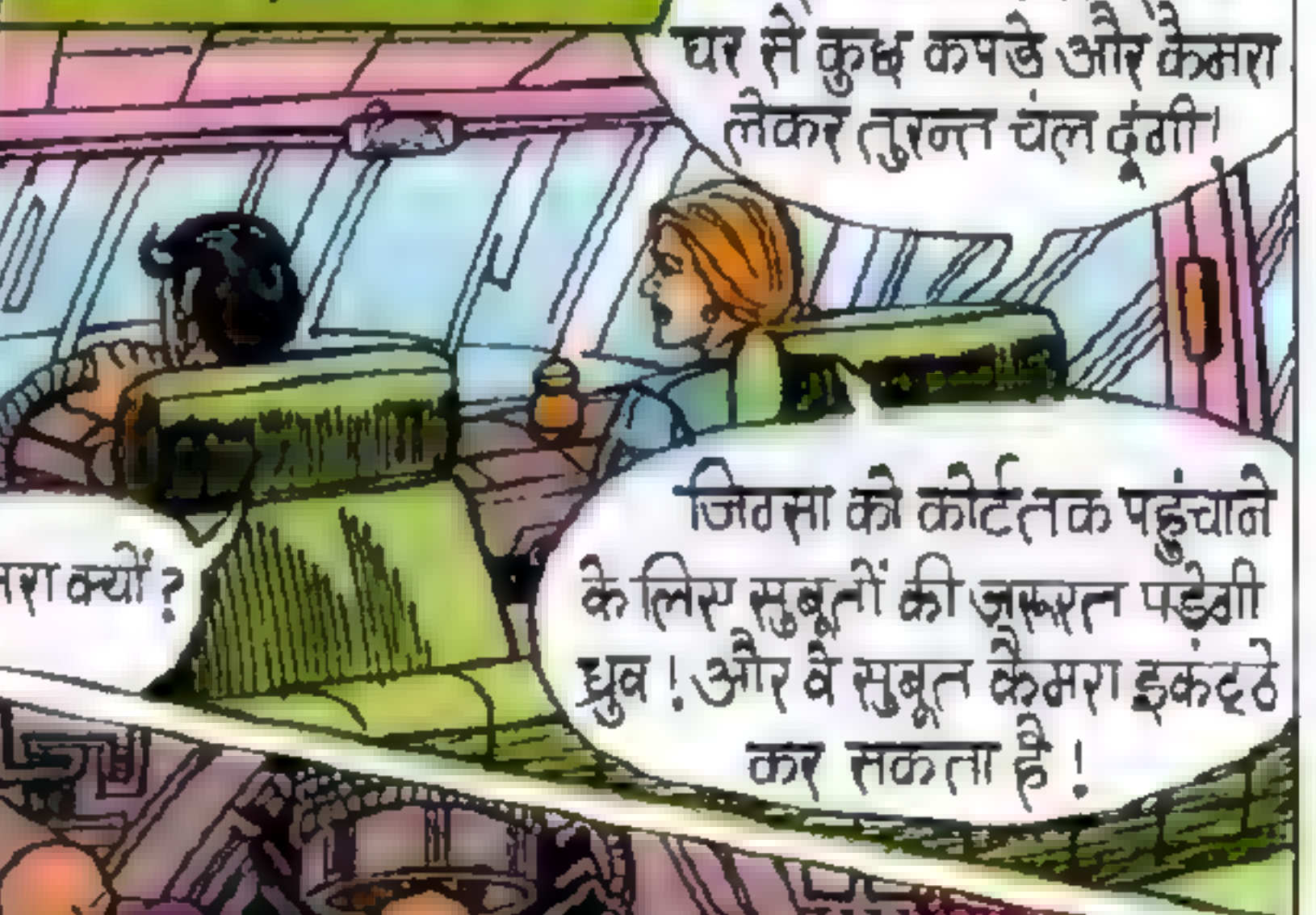


बेस्ट ऑफ लक, ध्रुव! कोई काम लायक जानकारी मिले तो हमको भी सूचित करना!

जरूर, सर!

बेरा के घर की तरफ वापस जाने हुए, ध्रुव के दिमाग में कई तरह सेवाल उमड़ने लगे थे-

हम लखनऊ कार से ही चलेंगे, ध्रुव! कोई दस-बारह घंटे का रास्ता है। मैं घर से कुछ कपड़े और कैमरा लेकर तुरन्त चल दूँगी!

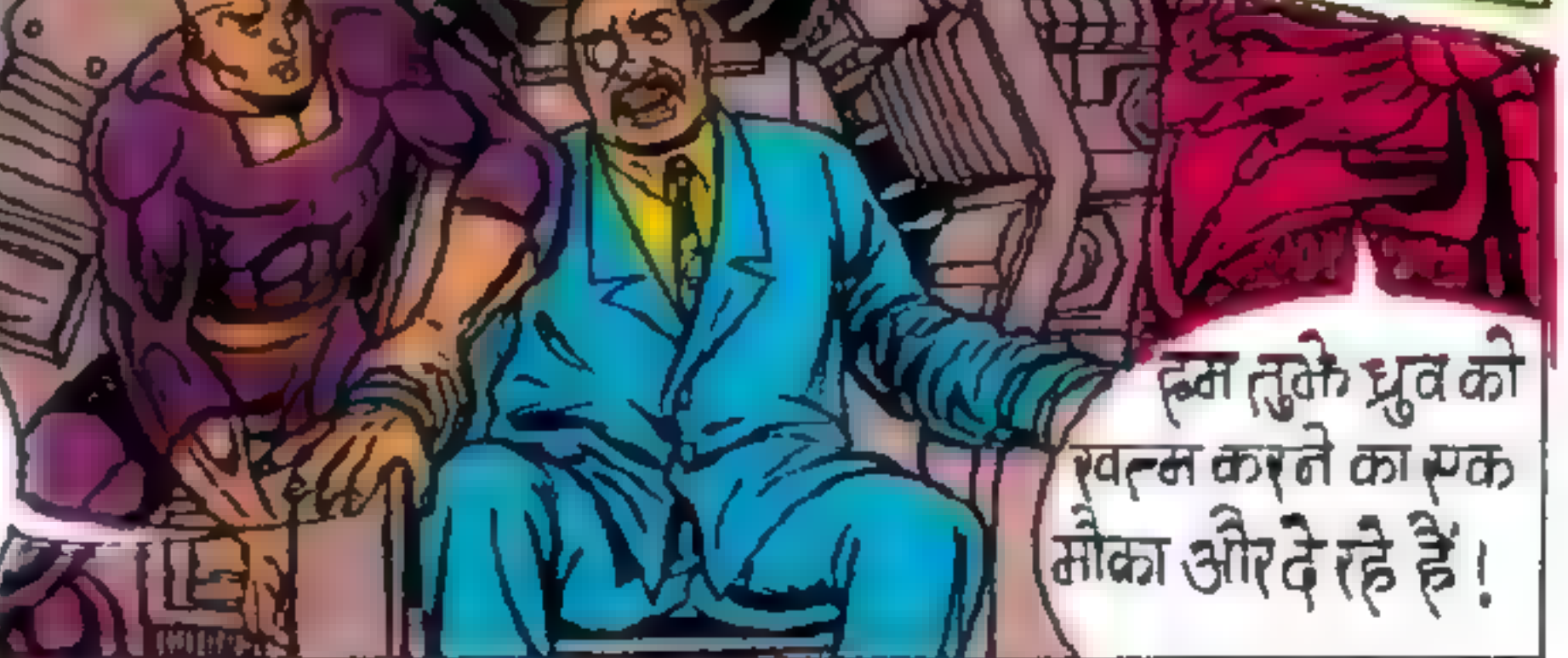


कैमरा क्यों?

जिवसा को कोर्ट तक पहुंचाने के लिए सबूतों की जरूरत पड़ेगी ध्रुव! और वे सबूत कैमरा इकट्ठे कर सकता है!

जिवसा ने भी फिर से अपनी चल चलनी शुरू कर दी थी-

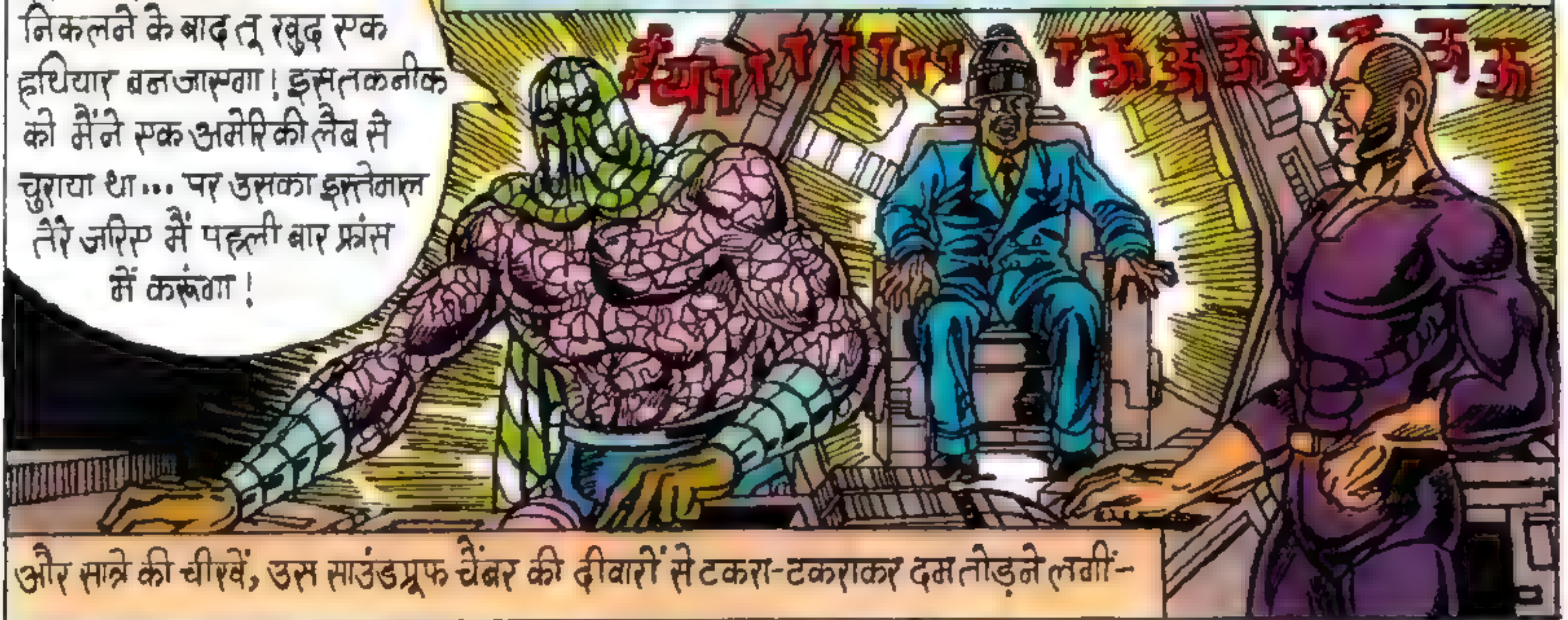
यह... यह क्या कर रहे हो? मुझे बांध क्यों रहे हो?



हम तुम्हें ध्रुव को खत्म करने का एक मौका और दे रहे हैं!

इस 'न्यूक्लियर डेसीमेटर' से निकलने के बाद तू खुद एक हथियार बन जाएगा! इस तकनीक की मैंने एक अमेरिकी लैब से चुराया था... पर उसका इस्तेमाल तूरे जरूर मैं पहली बार फ्रांस में करूंगा!

मशीन में से तीव्र रेडिएशन तरंगें निकलकर, सात्रे के शरीर को सुईयों की तरह भेदने लगीं-



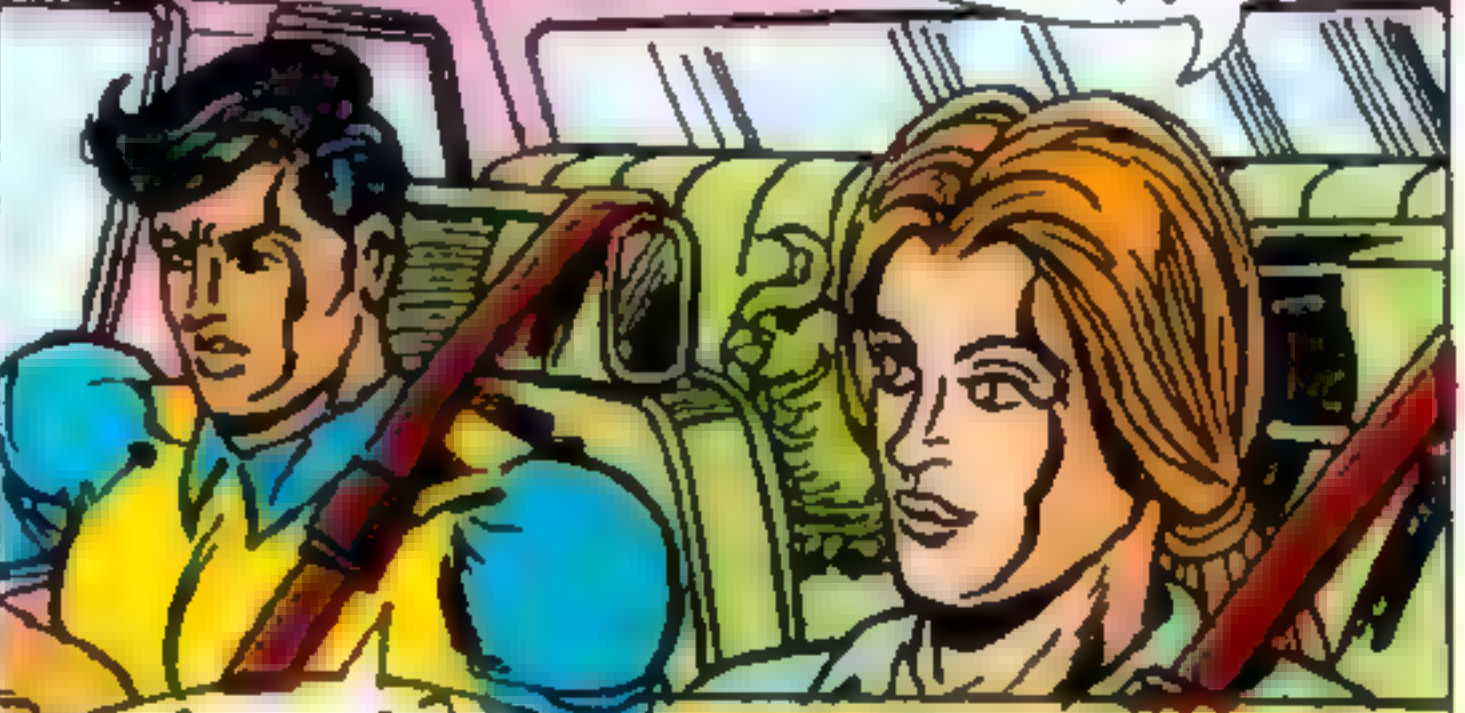
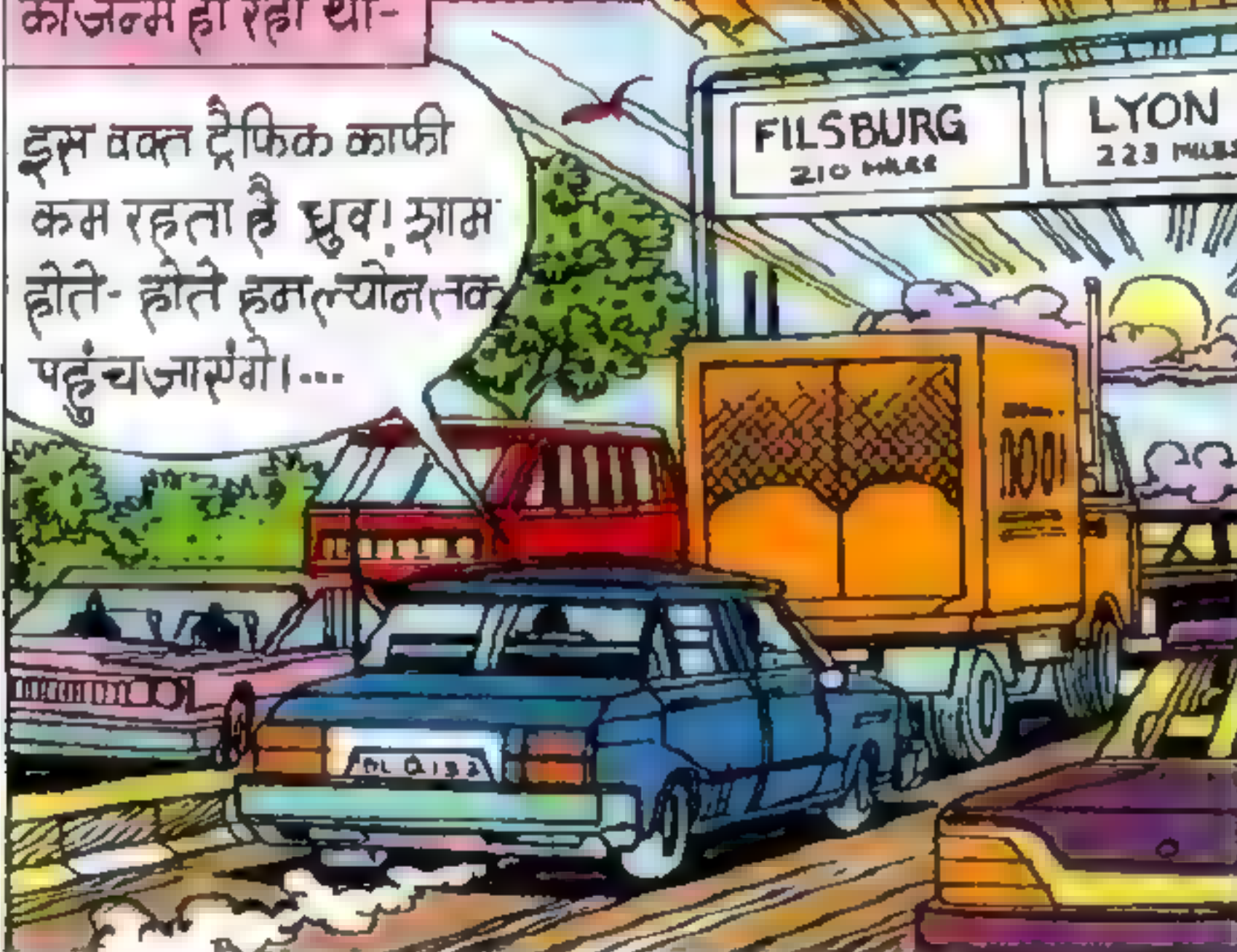
और सात्रे की चीखें, उस साउंडप्रूफ चेंबर की दीवारों से टकरा-टकराकर दम तोड़ने लगीं-

ध्रुव को ल्योन तक पहुंचने से रोकने के लिए एक और रुकावट का जन्म ही रहा था-

लेकिन ध्रुव पहले ही ल्योन के लिए रवाना हो चुका था-

और तुमको रघुवंशी अंकल ... लेकिन तुम्हारे अतीत का पता बताकर मैं तुमको का यह चक्कर क्या है? तुम्हारा अतीत दुंदने का अपना अतीत दुंदने-दुंदने रास्ता दिखवा दूंगा!... तुम फ्रांस तक कैसे आ गए?

इस वक्त ट्रैफिक काफी कम रहता है ध्रुव! शाम होते-होते हम ल्योन तक पहुंच जायेंगे!...



लम्बी कहानी है वेश! लेकिन मैं तुमको संक्षेप में बताता हूं।

ध्रुव के दिमाग में घुमड़ती यादें, उसकी जवान से शब्द बनकर हवा में गूँजने लगीं-

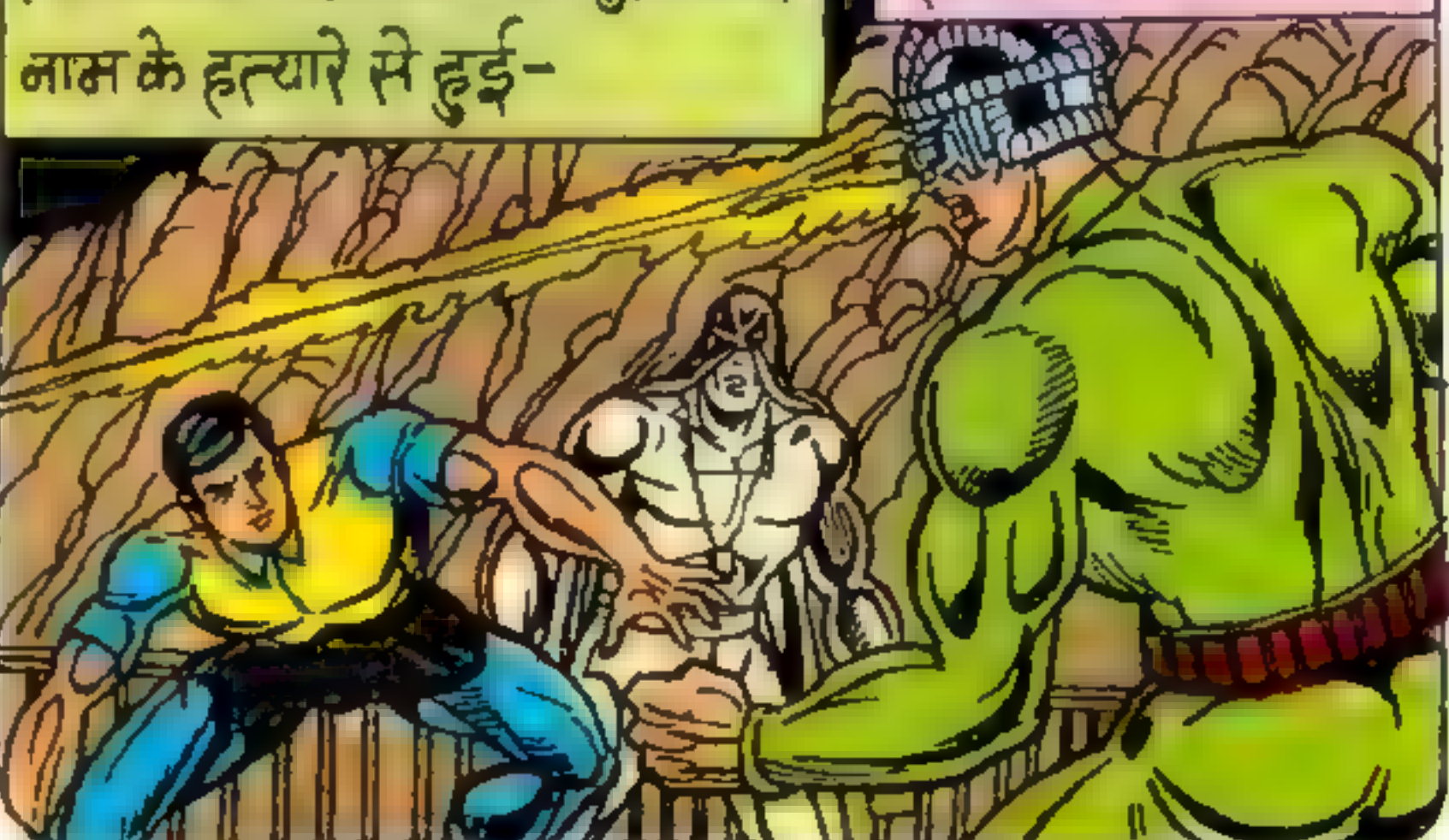
और ध्रुव के दिमाग में ताजा होने लगा वह घटनाक्रम राजनगर में जो एक फोन कॉल से शुरू हुआ था-

तुम्हारा बाप क्या नाम जिसका असली नाम रघुवंशी था, फ्रांस से भागा हुआ एक हत्यारा था ध्रुव! पुलिस को आज भी उसकी तलाश है। सच्चाई जानना चाहते हो तो आर्टिफीशियल वॉटर फॉल पर पहुंचो। अकेले!



वॉटर फॉल पर ध्रुव की मुलाकात एक नकाबपोश और एक 'बुल्स आई' नाम के हत्यारे से हुई-

दोनों ने ही ध्रुव पर हमला किया-



बुल्स-आई को ध्रुव ने अपने दिमाग से परास्त कर दिया-

और नकाबपोश की उस गुरिल्ला से टकराना पड़ा, जो न जाने कहाँ से वॉटर फॉल पर ध्रुव की मदद के लिए आ गया था-

ध्रुव ने मदद बुलाने के लिए 'सिविल फ्लेयर' को हवा में दागा-



और उसकी रोशनी में ध्रुव को नजर आया ऊपर खड़ा हुआ एक रहस्यमय शरका-

ध्रुव के ऊपर पहुँचने तक वह गायब हो चुका था-

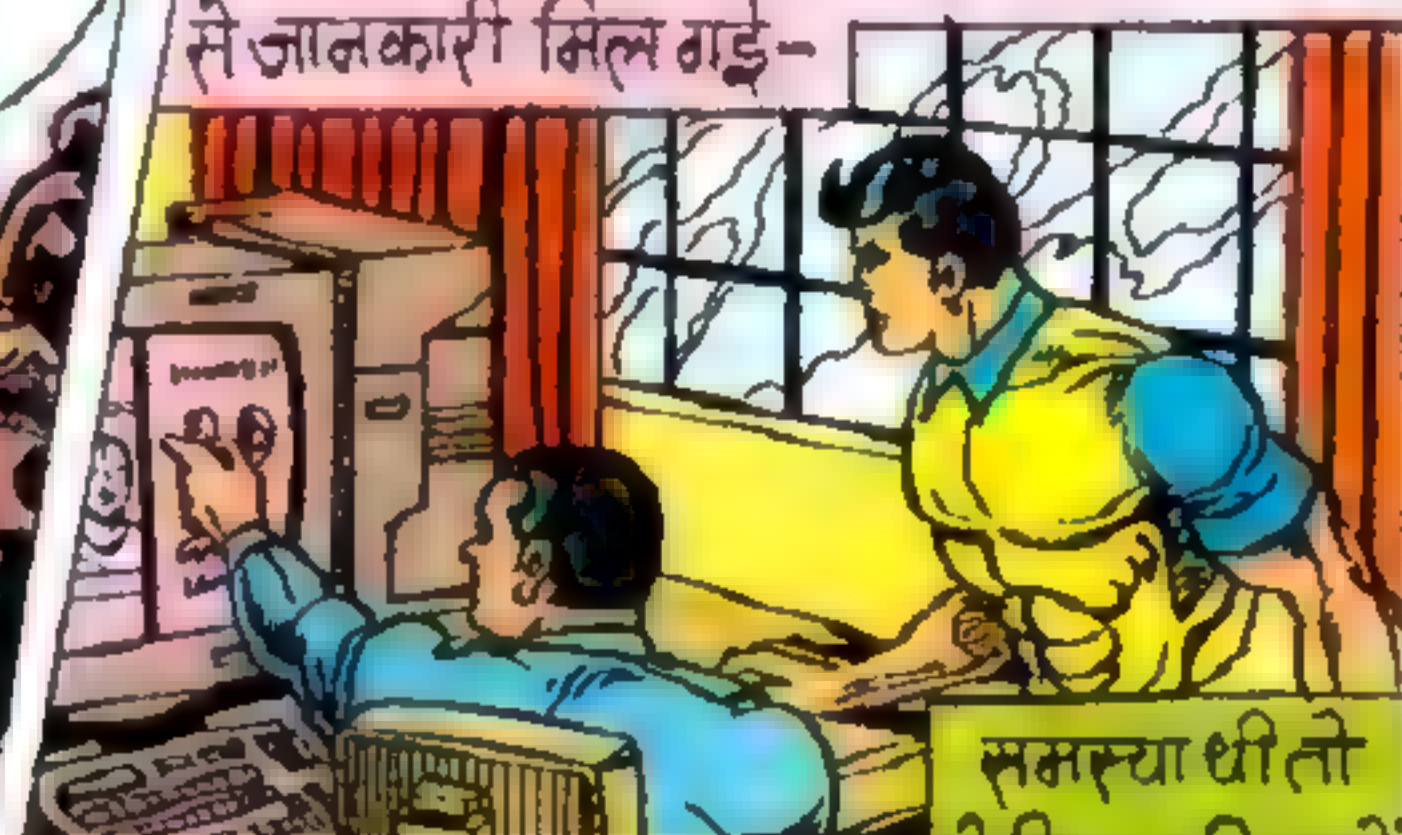
और ध्रुव के नीचे उतरकर आने तक नकाबपोश और बुल्स आई दोनों ही भाग चुके थे, और वहाँ पर रह गया था सिर्फ एक बेहोश गुरिल्ला-

ओह! नकाबपोश ने गुरिल्ला को हरा दिया। अद्भुत शक्ति रही होगी नकाबपोश में।



गुरिल्ला को ध्रुव ने 'सिविल हॉस्पिटल' में भर्ती करवा दिया-

और कमांडो हेडक्वार्टर पहुँचकर करीम से रघुवंशी नाम के अपराधी की तलाश करने को कहा! जल्दी ही 'इंटरपोल' की फाइलों से जानकारी मिल गई-



उस फाइल में रघुवंशी उर्फ इयाम के फिंगर और डेंटल प्रिंट भी थे ★

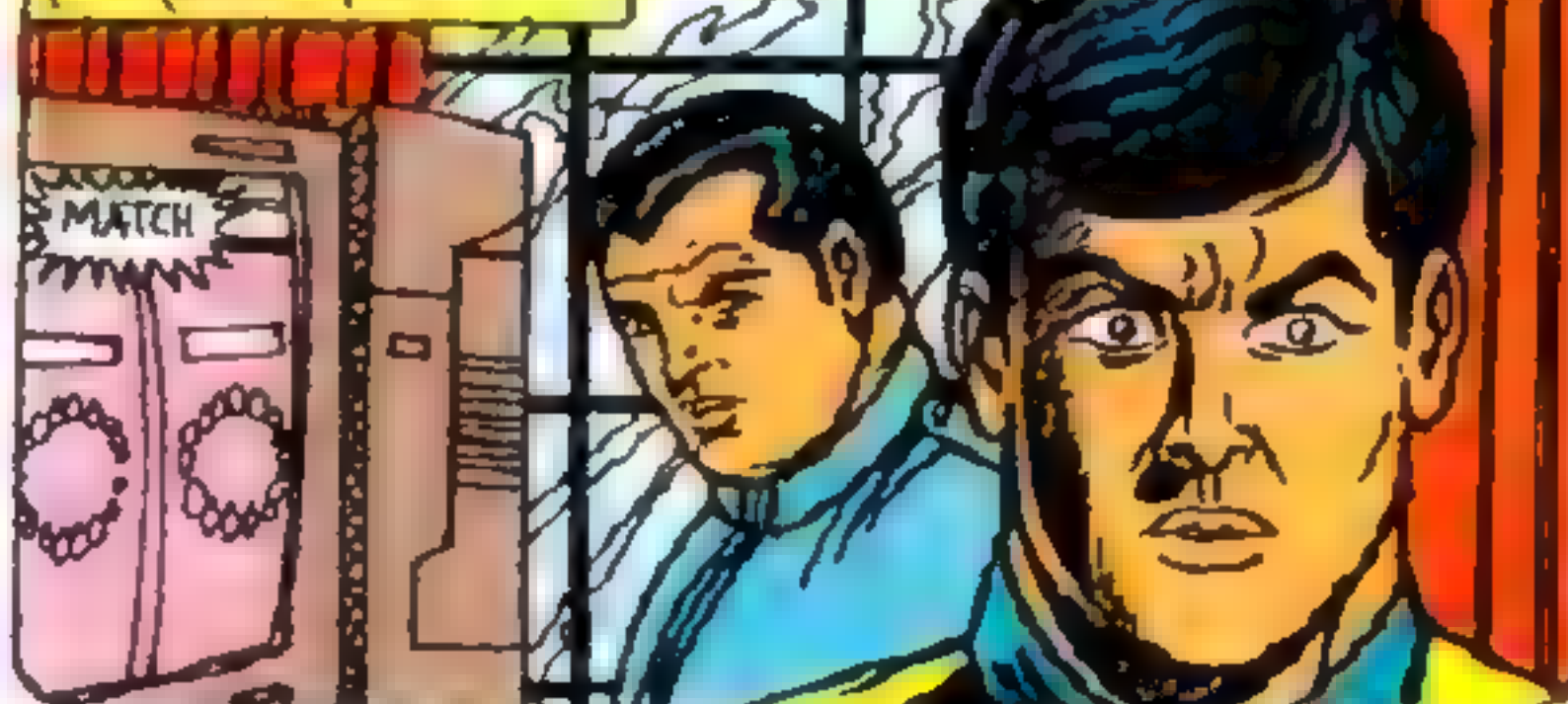
समस्या थी तो ये कि उन निशानों का मिलान कैसे करें-

और इस समस्या के हल का रास्ता दिखाया वैशाली नाम की रिपोर्टर ने-

जुपिटर सर्कस पर आर्टिकल लिखते-लिखते उसके हाथ इयाम के डेंटल-प्रिंट लवा गए थे-



मिलान करने पर पता चला कि वे दोनों निशान एक ही आदमी के थे। यानी इयाम और रघुवंशी एक ही आदमी थे-



ध्रुव को नकाबपोश की बातों में सचवाई नजर आने लगी-

लेकिन ध्रुव की इस खबर पर ज्यादा सोचने का वक़्त नहीं मिला-

क्योंकि उसी वक़्त मिली उसे एक और खबर-

अस्पताल में ध्रुव की मुठभेड़ हुई एक और हत्यारे 'बी-चंड' से, जिसकी दाढ़ी पर जहरीले डंक वाली मक्खियाँ चिपकी हुई थीं-

ध्रुव ने इस मुसीबत से भी निपटने का रास्ता खोज लिया-

हां, इंस्पेक्टर खत्री! हॉस्पिटल से बोल रहे हैं आप? हां... उस गुरिल्ले के शरीर पर एक निशान है? गोले में बना 'जे'। मैं अभी आता हूं!

यह निशान तो जुपिटर सर्कस के जानवरों पर लगा होता था। यानी वह गुरिल्ला जुपिटर सर्कस का है।

और वहीं पर स्टोर रूम में ध्रुव को मिला एक और आश्चर्य-

ध्रुव की मुलाकात उसी हैट कोटधारी से हुई जिसको ध्रुव ने वॉटर फॉल पर देखा था। और वह था-

आप जुपिटर सर्कस वाले अंकल जैकब हैं सर्कस के मालिक!

जवाब में ध्रुव को सुनने की मिली वह कहानी, जिसने कुछ रहस्यों पर के पर्दों को उठा दिया-

मुझे गुरिल्ले किंगकांग ने बचाया था ध्रुव! मैं बेहोश हो चुका था। उसने मुझे एक नाव में डाला और समुद्र में ले गया। काकातुआ तोता भी उड़कर नाव में ही आ गया था। उसने मॉरिशस जा रहे एक जहाज की दूंद निकाला!

पर आप सर्कस में लगी आग से बचे कैसे? और अब तक आप मुझसे मिले क्यों नहीं?

हां, ध्रुव!

मॉरिशस ही मेरा घर है। होश में आने पर मैंने अपने माई की सूचना भेजी और मॉरिशस में ही मेरा इलाज होने लगा। स्वस्थ होने में और ताकत वापस आने में मुझे सालों लगा गए। मेरे माई को डर था कि शायद सर्कस में आग मेरी जान लेने को ही लगाई गई है। इसलिए उसने किसी को भी मेरे बचने की खबर नहीं दी। यही कारण है कि मैं तुमसे मिल नहीं सका। मेरे सर्कस का बचा-खुचा सामान भी मॉरिशस भेज दिया गया। और उसी में मिली मुझे...

... इराम की वह सन्दूकची, जो इराम के पास उस वक़्त थी, जब वह घायल अवस्था में मुझे फ्रांस के एक शहर ल्योन में मिला था, जहां पर उस वक़्त मेरा सर्कस चल रहा था!

ल्योन में? पिताजी वहां क्या कर रहे थे?

वह फ्रांस में ही रहता था। और उसके घायल अवस्था में मिलने के ठीक बाद मैंने एक पुलिस वाले और दो गुंडों को उसको मारने के लिए उसका पीछा करते देखा। उसकी जान खतरे में जानकर मैं उसे अपने सर्कस में छिपाकर भारत ले आया!

वह ठीक तो हो गया, लेकिन सिर में गोली का घाव होने के कारण उसकी याददाश्त जाती रही। वह एक कुशल कलाबाज तो बन गया, लेकिन अपनी कहानी मुझे कभी बता नहीं पाया। उसको 'इयाम' नाम भी मैंने ही दिया था...

... उसी बंगले के सहारे मैं ल्योन पहुंच गया ताकि इयाम के परिवार वालों को दंडकर मैं उनकी इयाम के बारे में दुखद समाचार सुना सकूं। लेकिन उस स्टेड की ढूंढ कर...

... हां, तो मैं बता रहा था कि जब मुझे इयाम की सूचना मिली तो मैंने उसे खोलकर देखा। उसमें इयाम की उसके परिवार के साथ की एक फोटो थी।

बैक ग्राउंड में एक भव्य बंगला भी था।...

बस, बुझे! आगे तु कुछ नहीं बता पाएगा। कभी भी नहीं।

उसी स्टोर में कोई छिपा हुआ था-

जी अंकल जैकब के लिए मौत का फरिश्ता साबित हुआ-

लूका, अंकल जैकब को खत्म तो नहीं कर पाया-

जैकब के एक नार्वून के नीचे मिले त्वचा के एक टुकड़े के डी.एन.ए. टेस्ट से यह तो साबित हो गया कि वह न तो ध्रुव की त्वचा का टुकड़ा था और न ही जैकब की त्वचा का-

लेकिन टेस्ट से यह भी पता चला कि उस त्वचा के टुकड़े का मालिक ध्रुव का नजदीकी रिश्तेदार था-

लेकिन वहां से भागने में सफल जरूर हो गया-

और इस हत्या के प्रयास का इल्जाम आया ध्रुव पर-

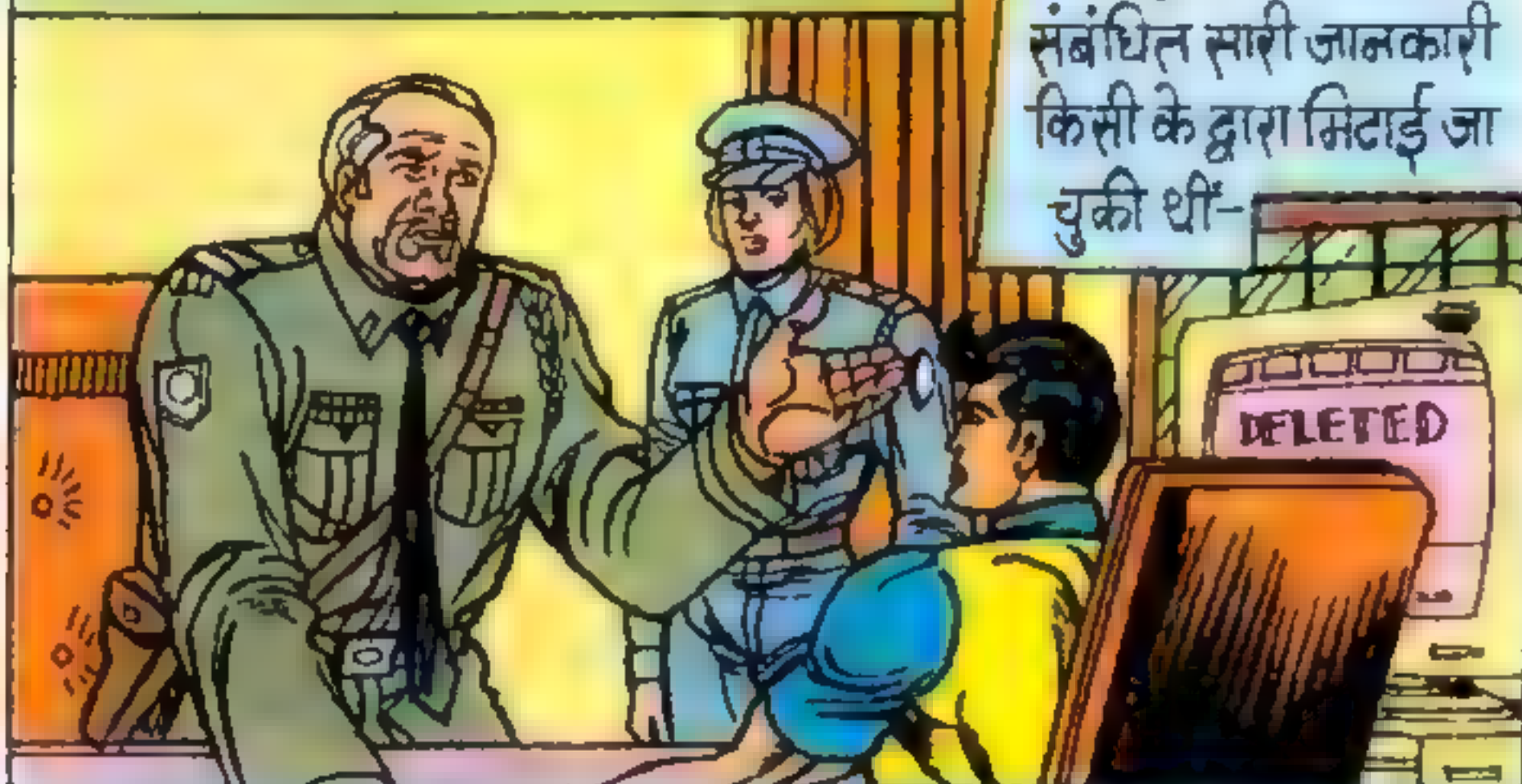
बाद के घटनाक्रम से यह बात पता चली कि लूका, बी-यर्ड और बुल्स आई के साथ फ्रांस की तरफ रवाना हो चुका था-

और यह जानने के बाद ध्रुव को लूका के पीछे-पीछे अपना अतीत जानने के लिए फ्रांस आना ही पड़ा-

रास्ते में ही उसकी रोकने की कोशिश की गई। लेकिन ध्रुव ने उसे विफल कर दिया-

पेरिस पहुंचकर ध्रुव वहां के पुलिस कमिश्नर फ्रांस्वा से मिला, जिनके नाम ध्रुव के दसक पिता राजन मेहरा ने एक चिट्ठी दी थी-

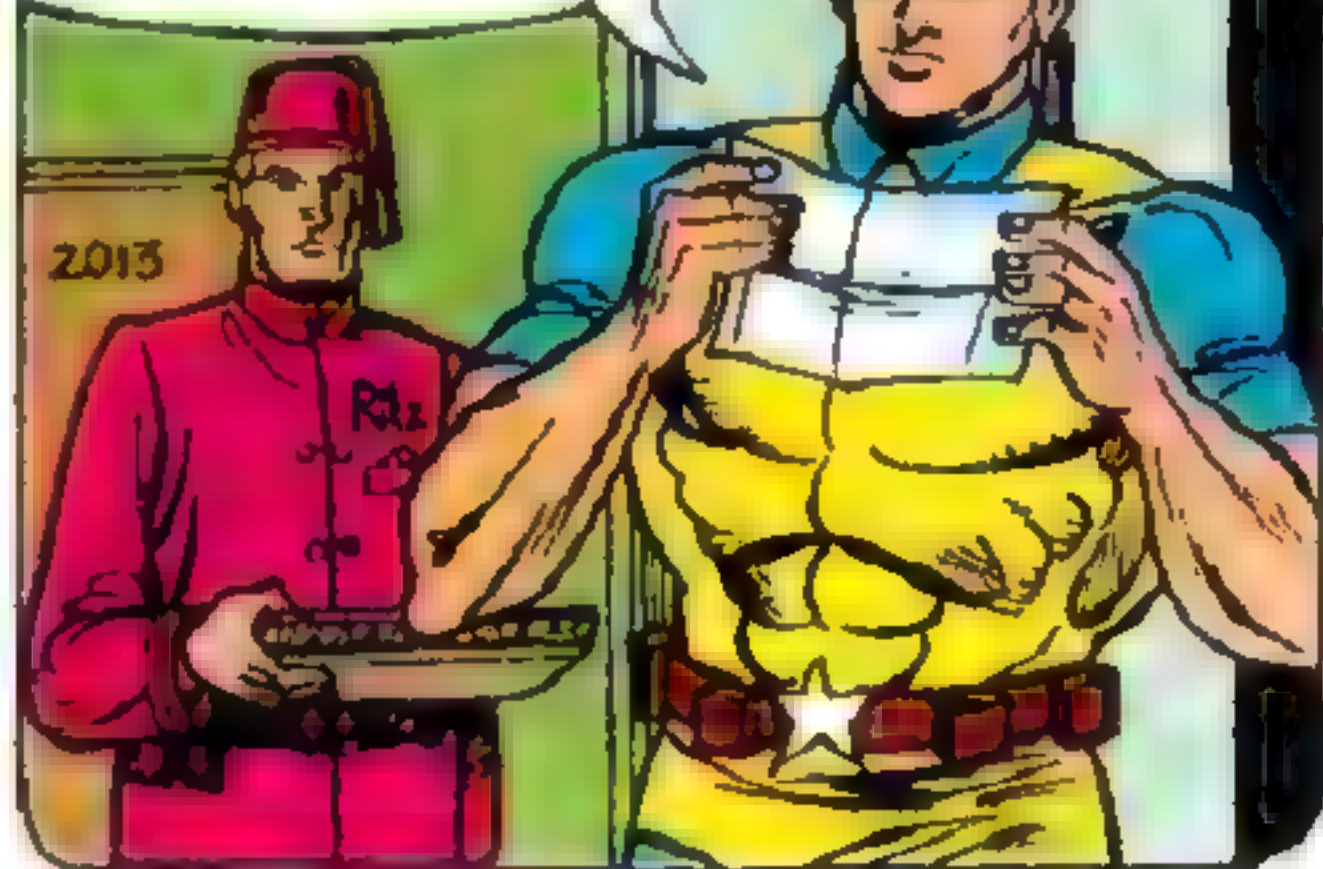
लेकिन फ्रांस्वा से ध्रुव को पता चला कि क्याम उर्फ रघुवंशी के केस से संबंधित सारी जानकारी किसी के द्वारा मिटाई जा चुकी थी-



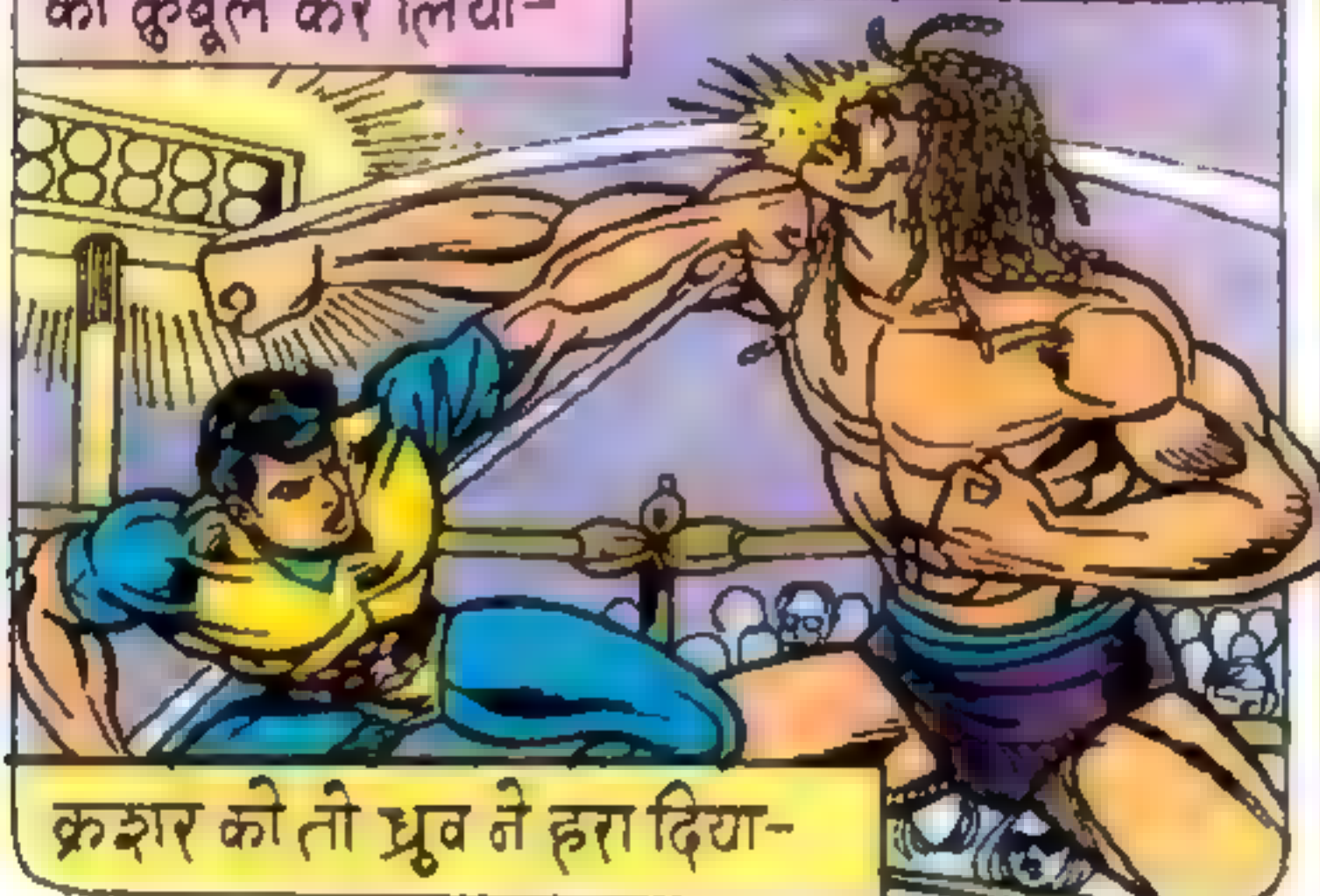
ध्रुव के सामने अपने अतीत को ढूंढने के रास्ते बन्द होते जा रहे थे-

कितनी- उसकी होटल में एक मैसेज मिला-

अगर तुम रघुवंशी के बारे में जानना चाहते हो तो 'रॉन्डेवू डेन' कैवियर स्ट्रीट पर आकर क्रशर से मिलो!

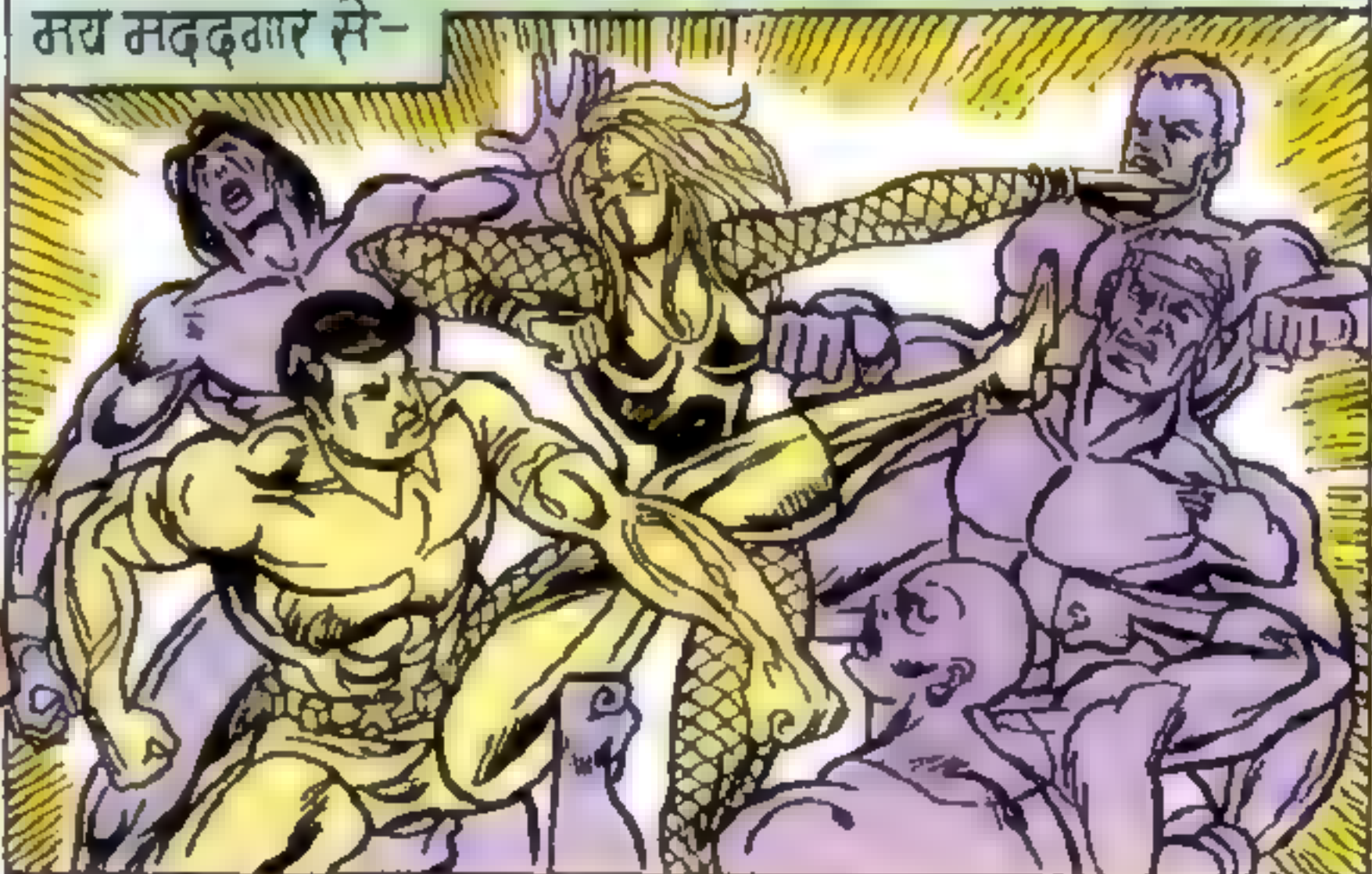


ध्रुव, क्रशर से मिलने पहुंचा। लेकिन क्रशर ने कुछ भी बताने की कीमत मांगी। और वह कीमत थी क्रशर को हराना। ध्रुव समझ गया कि यह उसकी मौत के घाट उतारने की चाल थी। फिर भी उसने चुनौती को कुबूल कर लिया-



क्रशर को तो ध्रुव ने हरा दिया-

लेकिन एक दूसरे आदमी ने, ध्रुव पर एक साथ कई फाईटरों से हमला करा दिया। और यहां पर ध्रुव की मदद मिली एक रहस्यमय मददगार से-



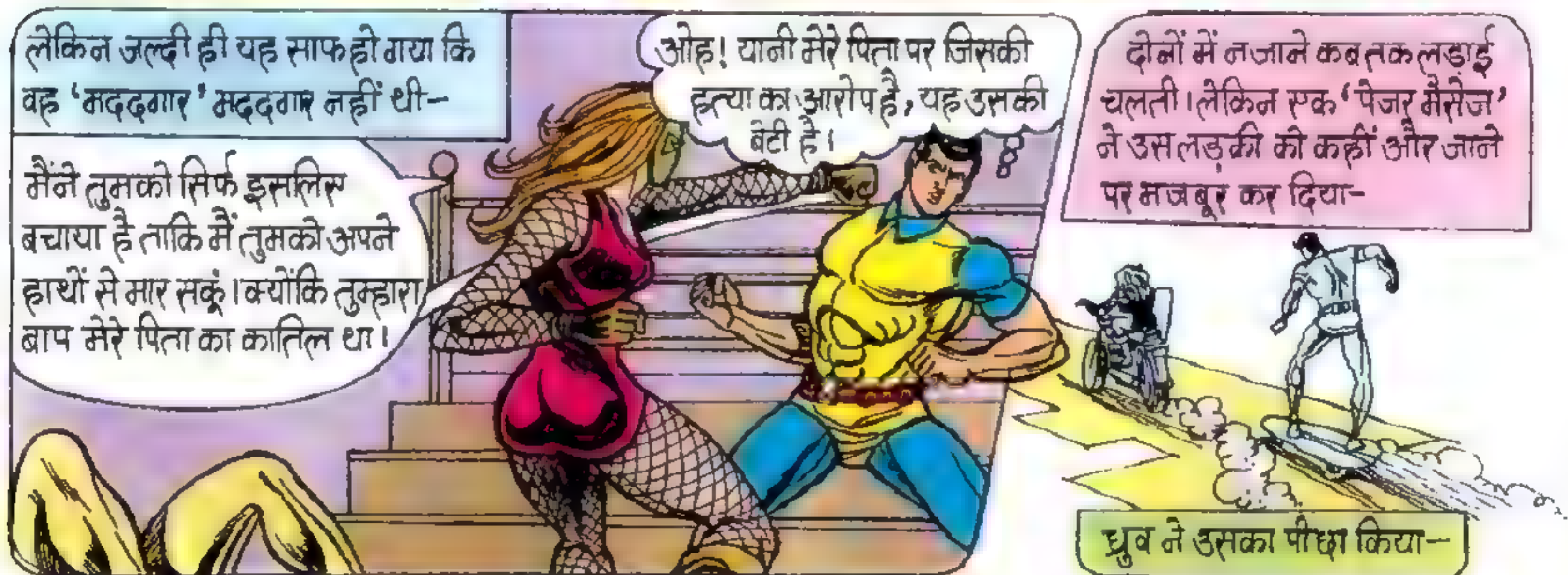
उस लड़की की मदद से, ध्रुव सबको हराने में कामयाब हो गया-

लेकिन जल्दी ही यह साफ हो गया कि वह 'मददगार' मददगार नहीं थी-

मैंने तुमको सिर्फ इसलिए बचाया है ताकि मैं तुमको अपने हाथों से मार सकूं। क्योंकि तुम्हारा बाप मेरे पिता का कातिल था।

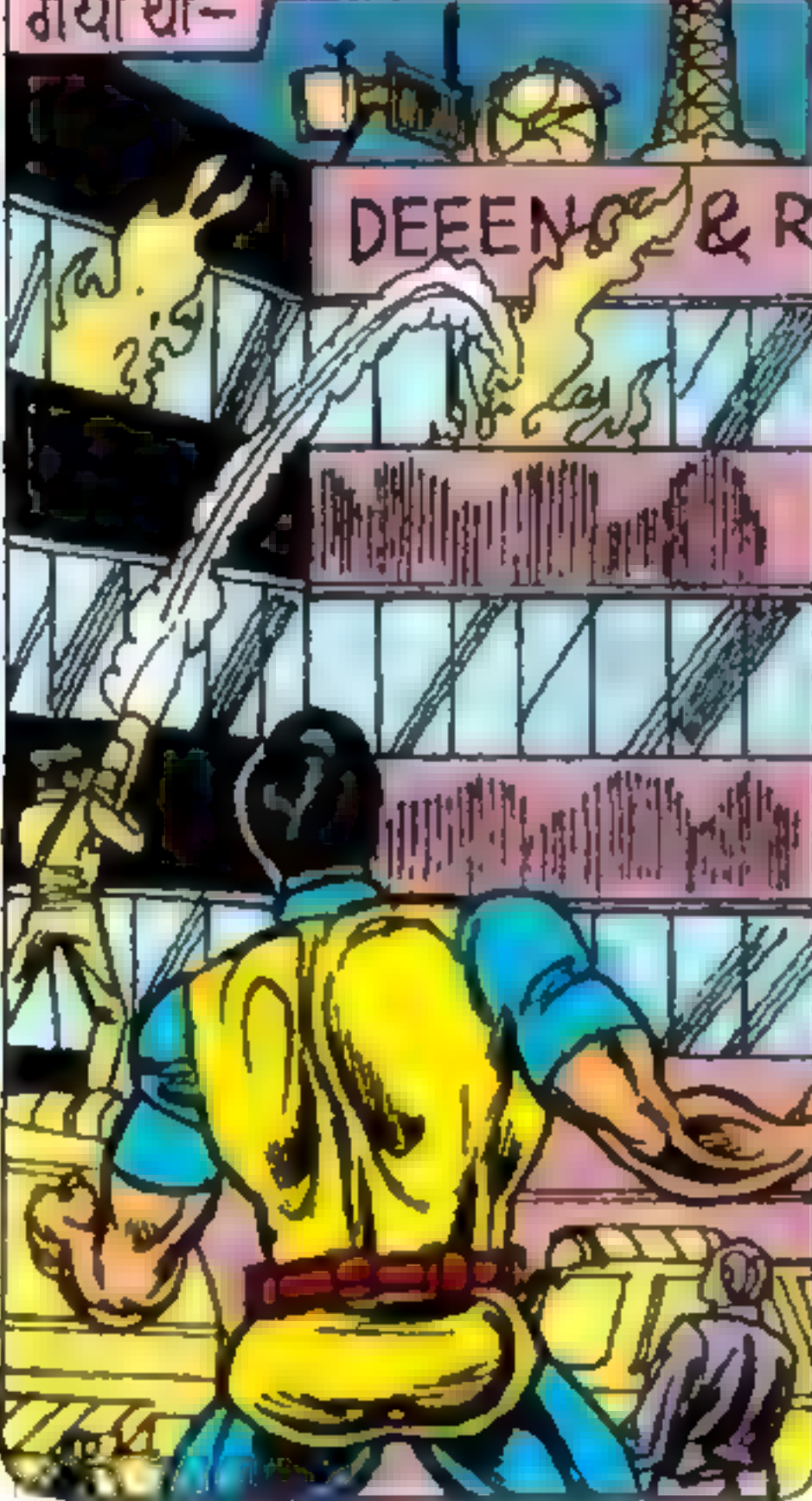
ओह! यानी मेरे पिता पर जिसकी हत्या का आरोप है, यह उसकी बेटी है।

दोनों में न जाने कब तक लड़ाई चलती। लेकिन एक 'पेजर मैसेज' ने उस लड़की को कहीं और जाने पर मजबूर कर दिया-



ध्रुव ने उसका पीछा किया-

उस रहस्यमय लड़की का पीछा ध्रुव की एक ऐसे घटनास्थल पर ले गया, जहां पर 'डिफेंस रिसर्च लैब' में जिवसा द्वारा हस्तक्षेप किया गया था-



ध्रुव की तेज नजरो ने एक सिगारनुमा गुब्बारे की घटनास्थल से जाते देखा। ध्रुव समझ गया कि जिवसा इसी में है। उसने गुब्बारे का पीछा किया-



वह गुब्बारा स्मॉकिल टॉवर पर जाकर टिक गया-

और वहां ध्रुव की मुलाकात हुई जिवसा से। घमासान लड़ाई के बाद ध्रुव ने जिवसा को पकड़ लिया। लेकिन उसी वक्त घटनास्थल पर आ गया फ्रांस्वा-



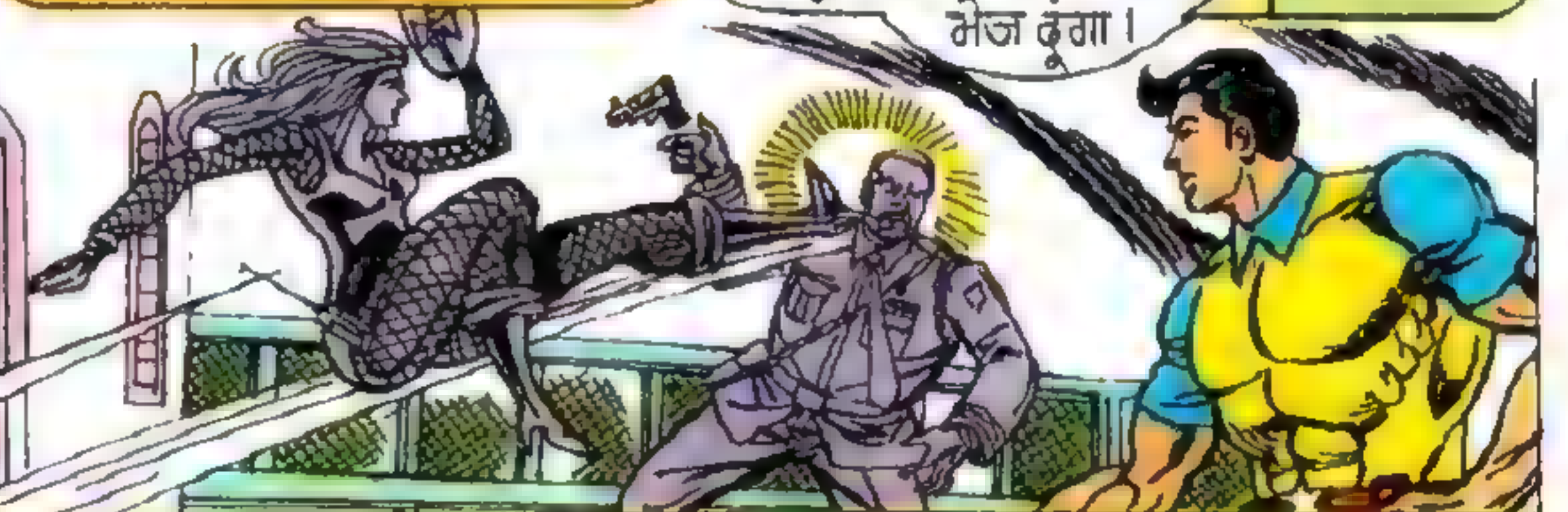
मैं ही वह पुलिस वाला हूँ ध्रुव! जिसको जैकब ने गुंडों से बात करते सुना था!

मैंने और जिवसा ने ही उस पुलिस वाले की हत्या करके रघुवंशी को फंसाया था। अब तुम्हें भी मेरे बाप के पास ही भेज दूंगा।

लेकिन फ्रांस्वा ऐसा कर नहीं सका-

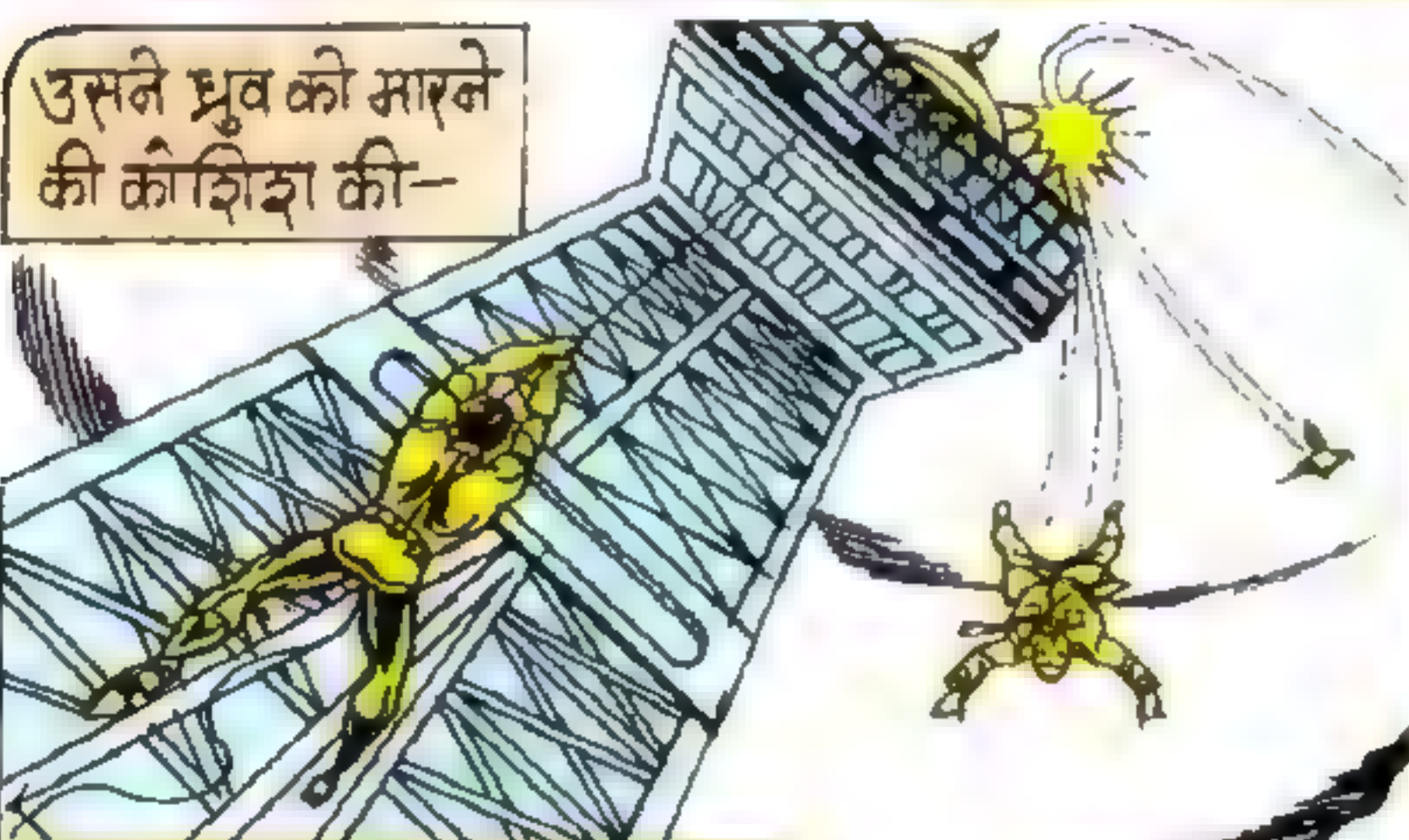
क्योंकि वह रहस्यमय लड़की वहां घटनास्थल पर पहुंच गई थी-

मैं इंस्पेक्टर वेरा हूँ कमिश्नर! और मेरे पुलिस बैंड ट्रान्समीटर के जरिए तुम्हारा बयान हर पुलिस चौकी और हर पुलिस कार में सुना जा चुका है।



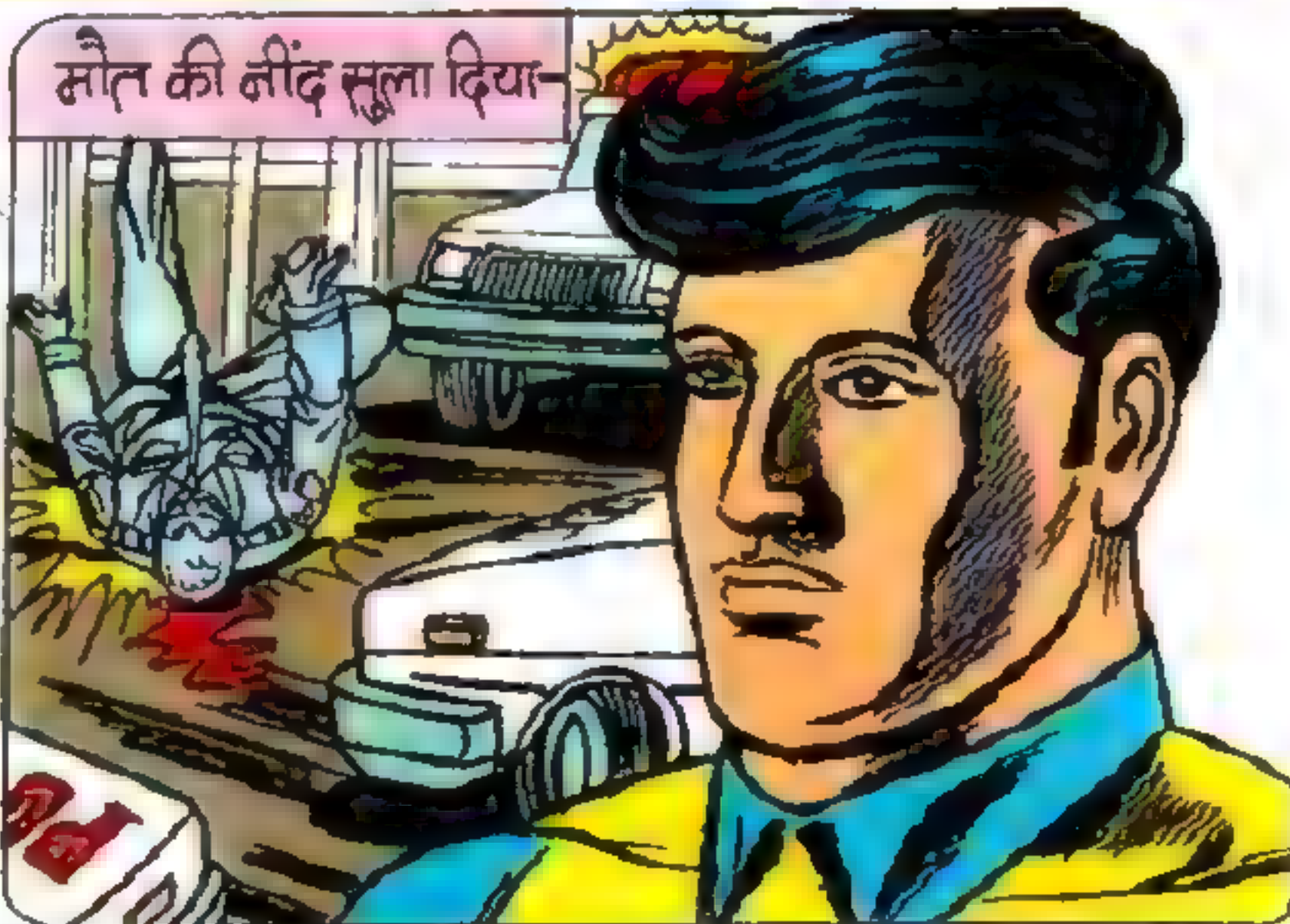
जिवसा तो भाग चुका था, पर कमिश्नर फ्रांस्वा अपनी नियति से बचकर भाग नहीं सका-

उसने ध्रुव को मारने की कोशिश की-



लेकिन सैन वक्त पर काकातुआ तोते ने वहां पहुंचकर उसको ही-

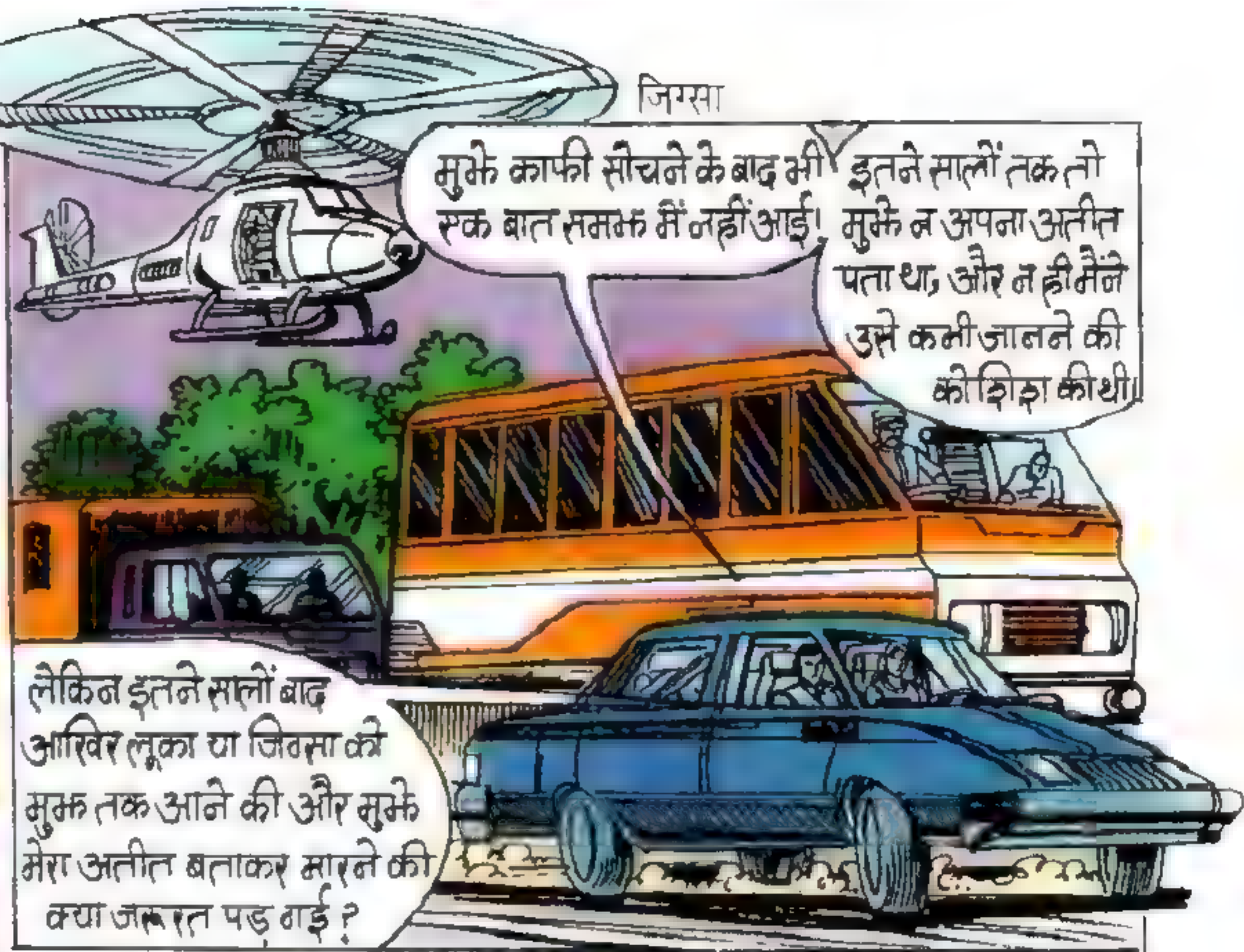
मौत की नींद सुला दिया-



ओह! तुमने इतने खतरनाक-खतरनाक मुजरिमों को भी धूल चटा दी। मैं तुम्हारे बारे में जितना जानती जा रही हूँ, उतनी ही तुम्हारे लिए मेरे दिल में इज्जत बढ़ती ही जा रही है।



जवाब हवा में उड़ता हुआ ध्रुव के पीछे आ रहा था-



लेकिन इतने सालों बाद आखिर लूका या जिवसा की मुझ तक आने की और मुझे मेरा अतीत बताकर मारने की क्या जरूरत पड़ गई?

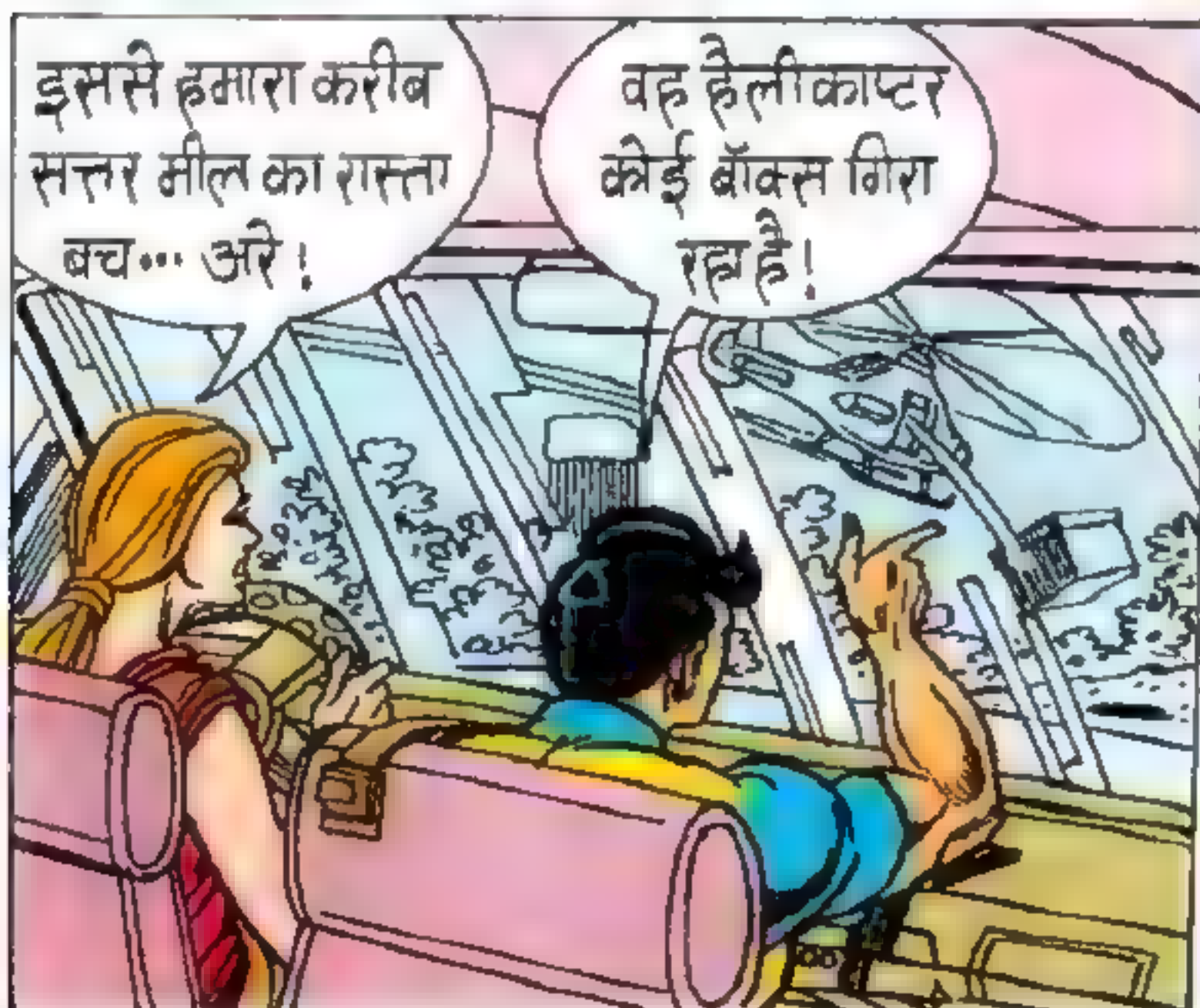
इतने सालों तक तो मुझे न अपना अतीत पता था, और न ही मैंने उसे कभी जानने की कोशिश की थी।

हा हा हा! वे रहे हमारे दुश्मन! आज के बाद से हमकी ध्रुव की चिन्ता करने की कभी जरूरत नहीं पड़ेगी। और इसकी मौत के बाद हम एस्टेट को आराम से बेच सकेंगे।

कार्टन नीचे गिरा दो लूका! और फिर उड़ चलते हैं ल्योन की तरफ!

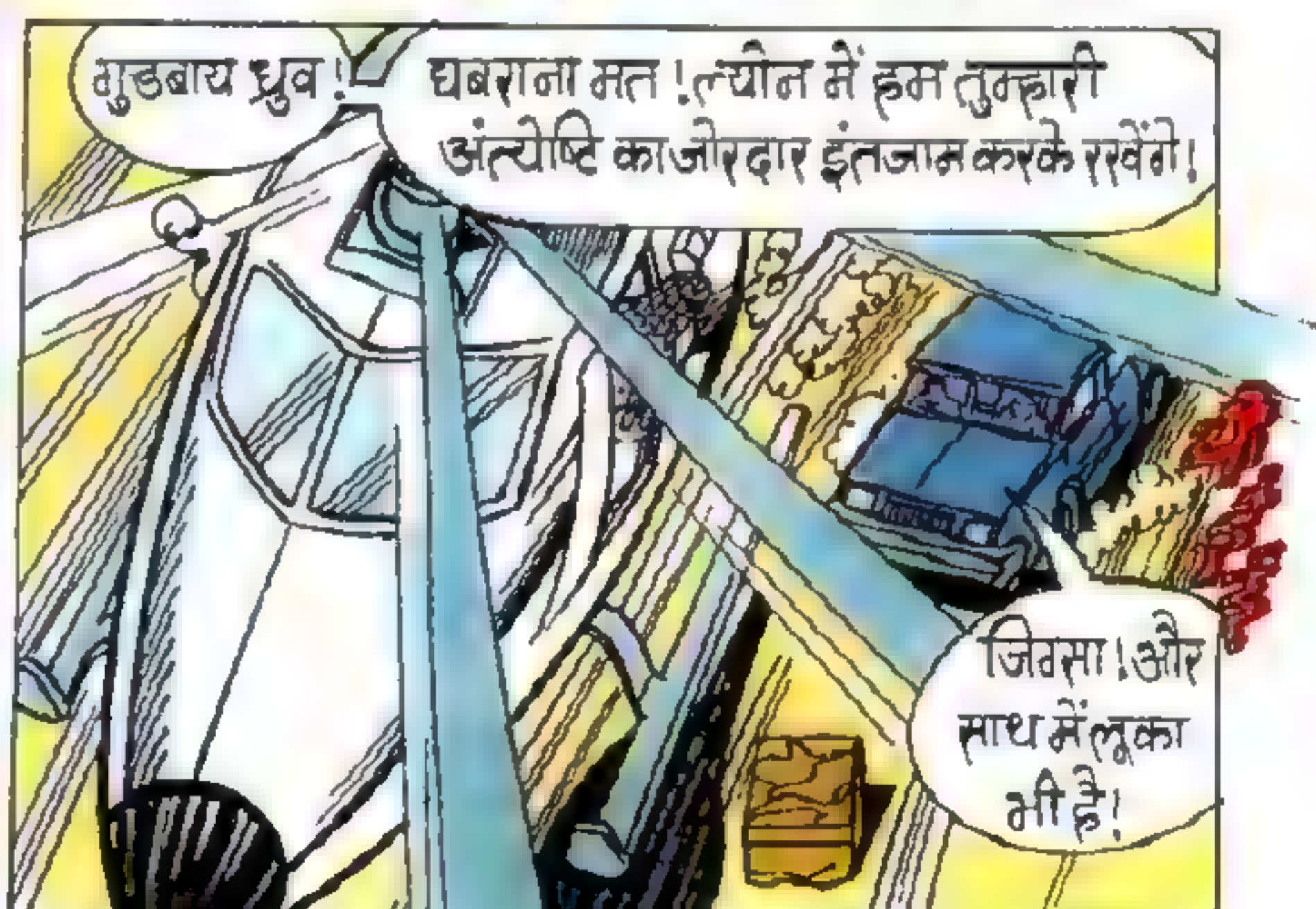
ये ल्योन पहुंचने का छोटा रास्ता है ध्रुव!

'हार्डवे' बन जाने के बाद अब कोई इसका इस्तेमाल नहीं करता!



इससे हमारा करीब सत्तर मील का रास्ता बच... अरे!

वह हेलीकाप्टर कोई बॉक्स गिरा रहा है!



जिवसा! और साथ में लूका भी है!



इस बक्से में क्या है,
ध्रुव? बम?

नहीं, वेरा! मैं नहीं समझता कि एक बार
बम का हमला नाकाम हो जाने के बाद जिवसा
दुबारा वही ट्रिक दुहराएगा!

इसके अन्दर कुछ और ही है।
देखो, बक्सा अपने-आप
हिल रहा है!



बक्सा खुल रहा है
ध्रुव! नहीं! कोई उसे
खोल रहा है।

बक्से का ढक्कन खुला-

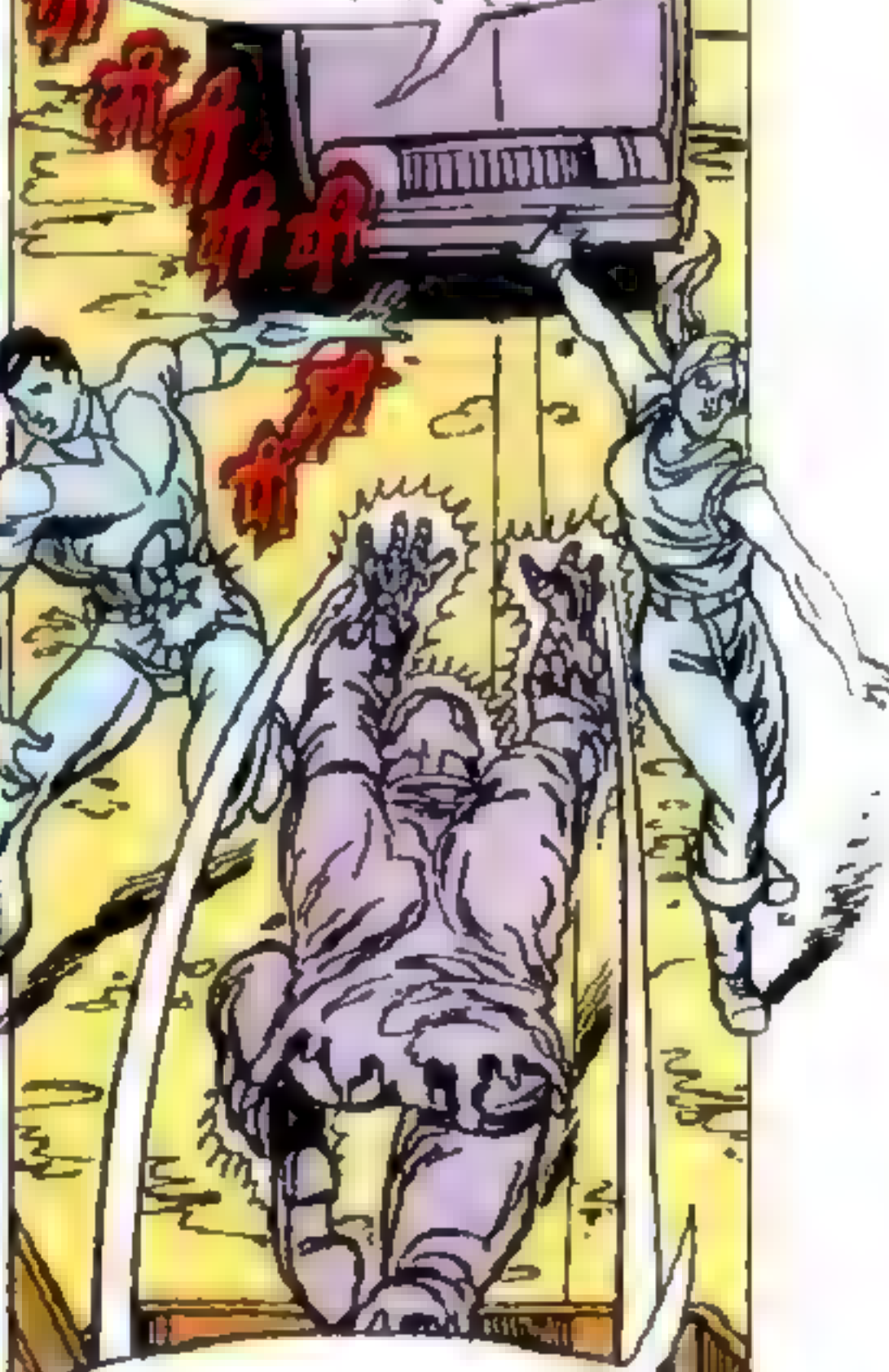
और उसके अन्दर से एक ऐसी
भयंकर आकृति ध्रुव और वेरा के
सामने आकर खड़ी हो गई जैसी
सिर्फ बुरे सपनों में ही दिखवाई देती है।

ये हम पर हमला कर रहा है वेरा!
बचो! अरे!... मेरी 'स्टार-बेल्ट'
में लगा 'रेडिशन इंडीकेटर'
सिग्नल दे रहा है। यानी इसके
द्वारे से रेडियोधर्मी विकिरण
निकल रहे हैं।



ओ गॉड!
ये... ये
क्या है?

यह... यह तो सच है!
जिसने मुझ पर रांंदेवू जिम में
हमला करवाया था, और बाद में जिसका
जिक्र फ्रांसवा ने किया था। *



मैं समझ गई ध्रुव! इसकी हालत
देखकर मुझे वह गुप्त रिपोर्ट याद
आ गई जो लगभग तीन माह पहले
हमारे पास इंटरपोल से आई थी।

जिम्सा ने एक अमेरिकी लैब से एक ऐसी तकनीक को चुराया था, जो एक आम इन्सान को 'रेडिएशन युक्त प्राणी' में बदल सकती थी! इससे उस प्राणी में असाधारण शक्तियाँ आ सकती हैं। लेकिन वे शक्तियाँ क्या थीं, इसका उस रिपोर्ट में जिक्र नहीं था। ... उसने शायद इसी तकनीक के प्रयोग से सात्रे को एक खतरनाक हथियार में बदल दिया है।

वेरा ने सात्रे के आगे बढ़ते हाथों को एक तरफ हटकर धकाया-

और सात्रे का शरीर एक पेड़ से जा टकराया-

कुछ क्षणों तक सात्रे अपना संतुलन खोकर उस पेड़ से चिपका रहा-

और उतनी ही देर में वह हरा-भरा पेड़ एक ठूठ में बदल गया-

इसलिए इसको मैं इस पेड़ से ही बांध देता हूँ।

ओह! मैं समझ गया। यह अपने शरीर से रेडिएशन छोड़ता है, जो किसी भी जिन्दा वस्तु की जीवन ऊर्जा खींचकर उसे मृत बना देता है...

... इसको अपने शरीर का स्पर्श करने देना मूर्खता साबित होगी।

कहीं इसने तुम्हारी स्टारलाईन को भी तोड़ दिया तो? मैं कार से अपना बैग ले आती हूँ, जिसमें कुछ हथियारों के साथ-साथ मेरी पुलिस रिवॉल्वर भी है।

उसकी जरूरत नहीं पड़नी चाहिए वेरा। मैं नहीं समझता कि यह नाइलो स्टील की बनी स्टारलाईन को तोड़ सकता है।

धुव का ख्याल सही था। वह सिर्फ यह नहीं जानता था कि सात्रे बिना स्टारलाईन को तोड़े भी आजाद हो सकता था-

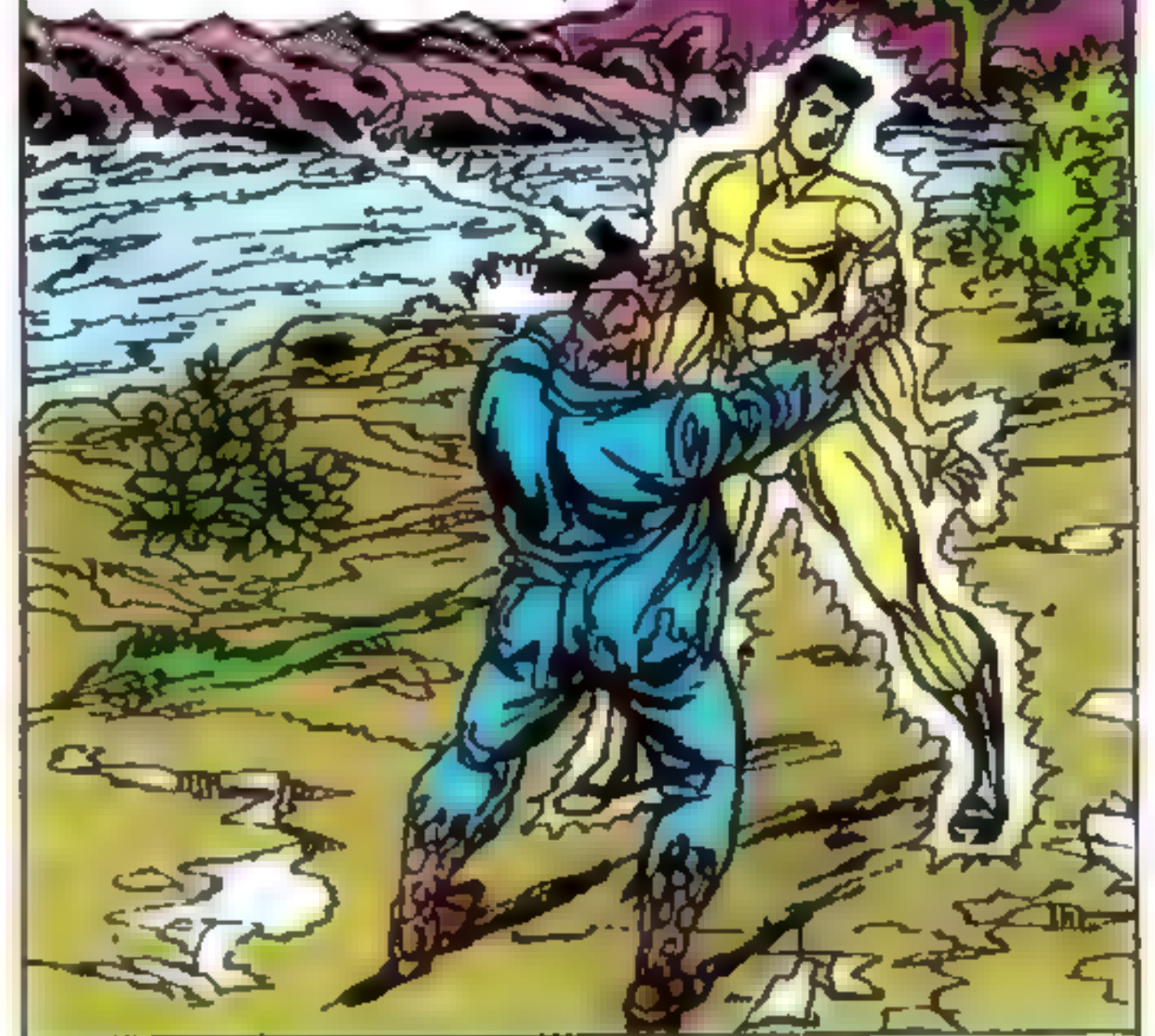
अरे! स्टारलाईन बगैर इसके शरीर को नुकसान पहुंचाए इसके शरीर से आर-पार हो रही है। ...

... जैसे... जैसे इसका शरीर ठोस न होकर किसी लिजलिजे द्रव से बना हुआ हो। यानी रेडिएशन ने इसके शरीर को 'जेली' जैसा बना दिया है!

इससे पहले कि आइचर्य के सागर में गोले लगा रहा ध्रुव, उससे उबर पाता-

सात्रे ने एक आइचर्यजनक गति से आगे बढ़कर ध्रुव को दबोच लिया-

आह! पूरे शरीर की शक्ति तेजी से कम होती जा रही है। अब तो चीरवने तक की ताकत नहीं बची है।... इसके बंधन तोड़ पाना तो बहुत दूर की बात है।



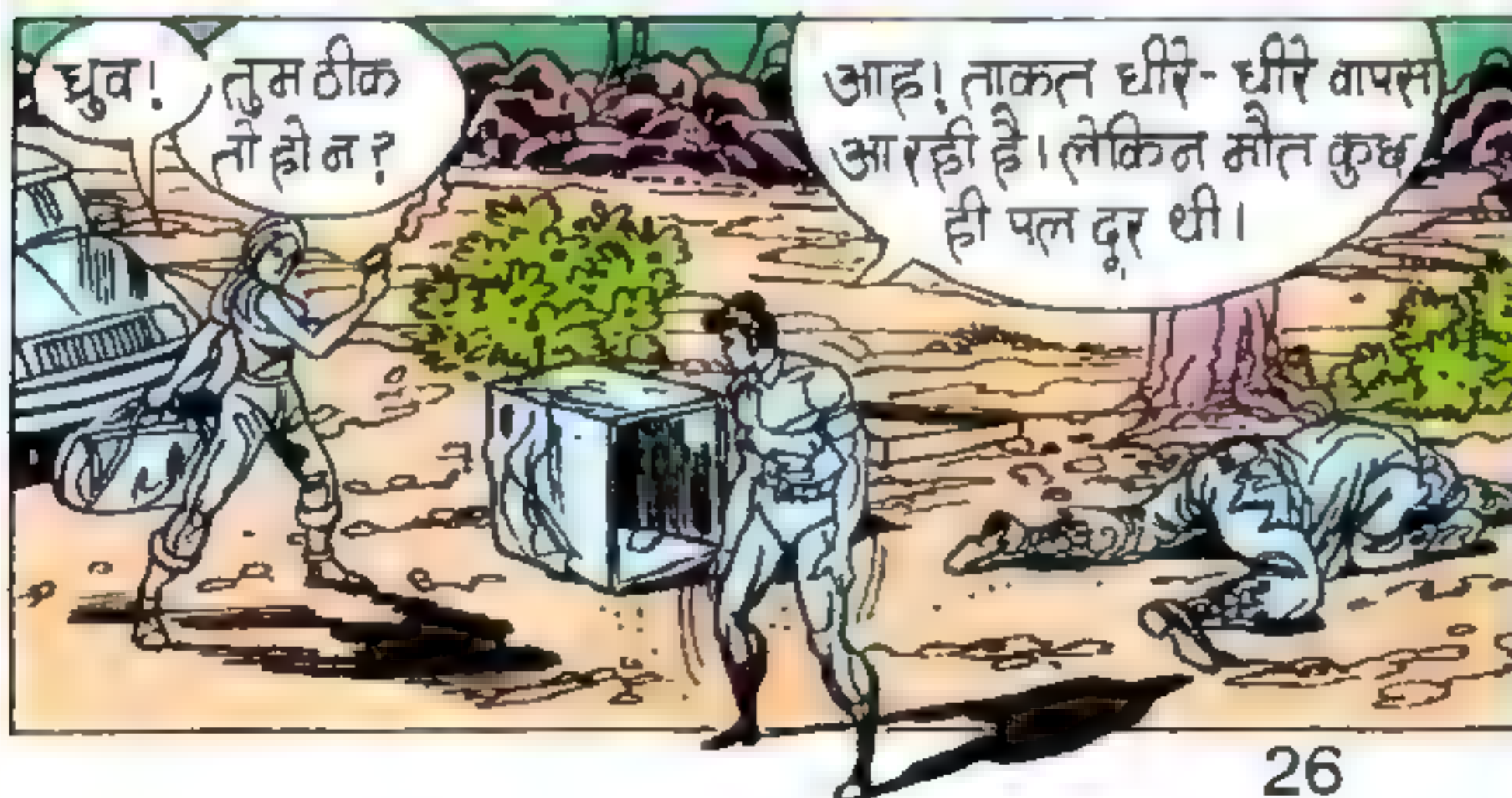
कुछ ही पलों में जान शरीर से अलग हो जानी थी-

और ध्रुव के शरीर से खिंचती जीवन ऊर्जा ने उसकी चीरवें निकलवा दीं-

लेकिन ही नहीं पाई। कुछ गोलियाँ दूरी-



और गोलियों के धक्कों ने सात्रे के शरीर को हवा में उठाकर दूर फेंक दिया-



ध्रुव! तुम ठीक तो हो न?

आह! ताकत धीरे-धीरे वापस आ रही है। लेकिन मौत कुछ ही पल दूर थी।

अब चिन्ता की कोई बात नहीं है।

मैंने पूरी छः की छः गोलियाँ इसके बदन में उतार दीं... ओह!



गर्ज

इस पर तो गोलियों का कुछ भी असर नहीं हुआ!

असर होना भी नहीं था। क्योंकि इसका शरीर 'जेली' जैसा फिलपिला हो गया है।

गोलियां इसके शरीर में घंस कर बेकार हो गई होंगी। बचो, वेरा!

इस बार ध्रुव की बारी थी वेरा की मदद करने की-

उम्मीद है कि जूतों से इसकी धुने से मुझ पर कोई असर नहीं होगा!

तड़क

ध्रुव के सावधान करने तक सात्रे का झिंकजा, वेरा की दबोच चुका था-

कम से कम ध्रुव का यह खयाल सही निकला-

और वेरा की जान में फिर जान आ गई-

इसको रोक पाना मुश्किल ही नहीं असंभव लगता है ध्रुव! मेरी जान तो गाड़ी में बैठकर यहां से भाग लो! इसको रोकने की कोशिश करके अपनी जान देने से कुछ भला होने वाला नहीं है।

कैसी बात कर रही हो वेरा! इसको सेसे छोड़ देने से यह कहीं और लबाही मचाएगा। अपनी मुसीबत को मैं दूसरों पर नहीं डाल सकता। वैसे भी मुझे पूरा विश्वास है कि यह हमारा पीछा छोड़ने वाला नहीं है।

तो फिर इसे रोकें तो रोकें कैसे?

कोई न कोई रास्ता तो जरूर... वह बक्सा। जिसमें बन्द करके जिबसा ने इसको नीचे गिराया था। यही वह रास्ता है।

जिबसा ने इसको इस बॉक्स में इसलिये बन्द किया होगा, क्योंकि अगर यह खुला होता तो जिबसा पर ही हमला कर देता। और यह बक्सा इसकी मुख्य शक्ति रेडिएशन को रोककर रख सकता है।

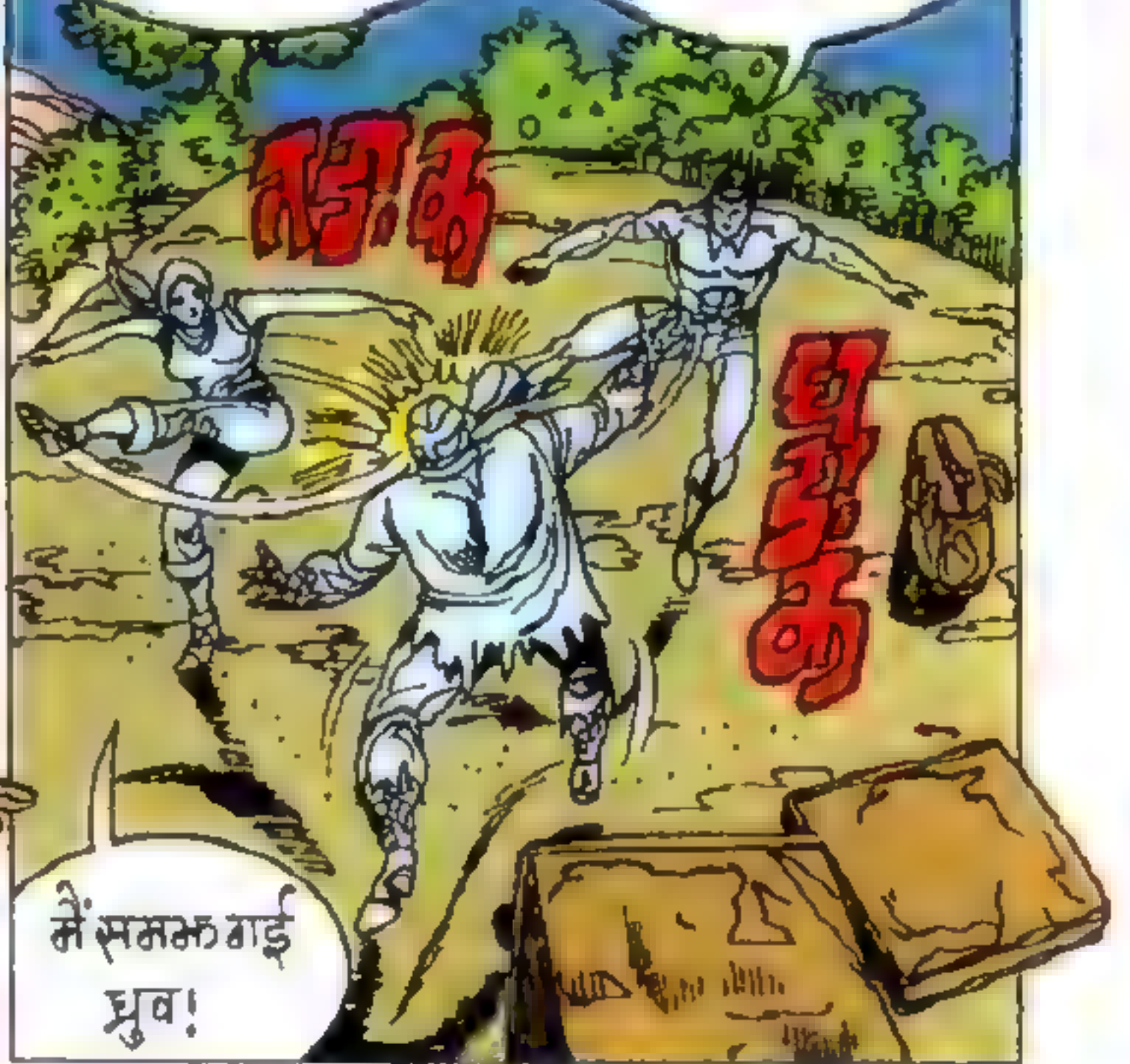
तुम्हारा मतलब है कि हम इसको वापस बक्से में बंद कर दें?

शायद यह बॉक्स सीसे या नीले का बना हुआ है। क्योंकि लेड की चादरें विकिरणों को आसानी से रोक लेती है।

ध्रुव और बेरा दो फुटबाल खिलाड़ियों की तरह सातों की फुटबाल समझकर खेलते हुए बक्से की गोल तक लौ लौ आये-

हां! इसके लिए हमको इसे बक्से की तरफ धकेलना पड़ेगा!

और उसके लिए हमको इस पर संयुक्त हमला करना पड़ेगा!



मैं समझ गई ध्रुव!

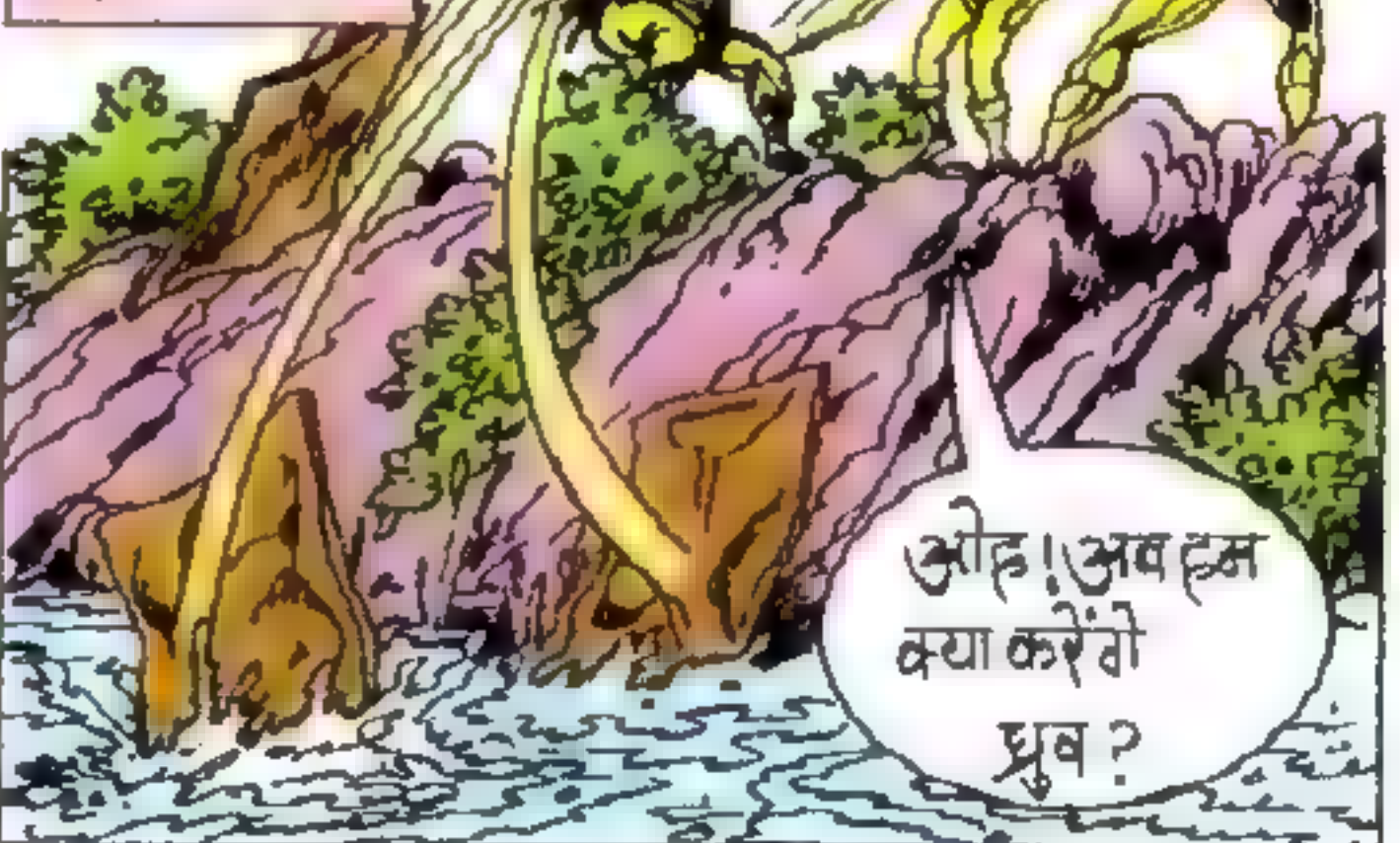
क्योंकि सातों भी उनकी स्कीम को समझ गया था-

और अब उसका वापस पिंजरे में बन्द होने का कोई इरादा नहीं था-



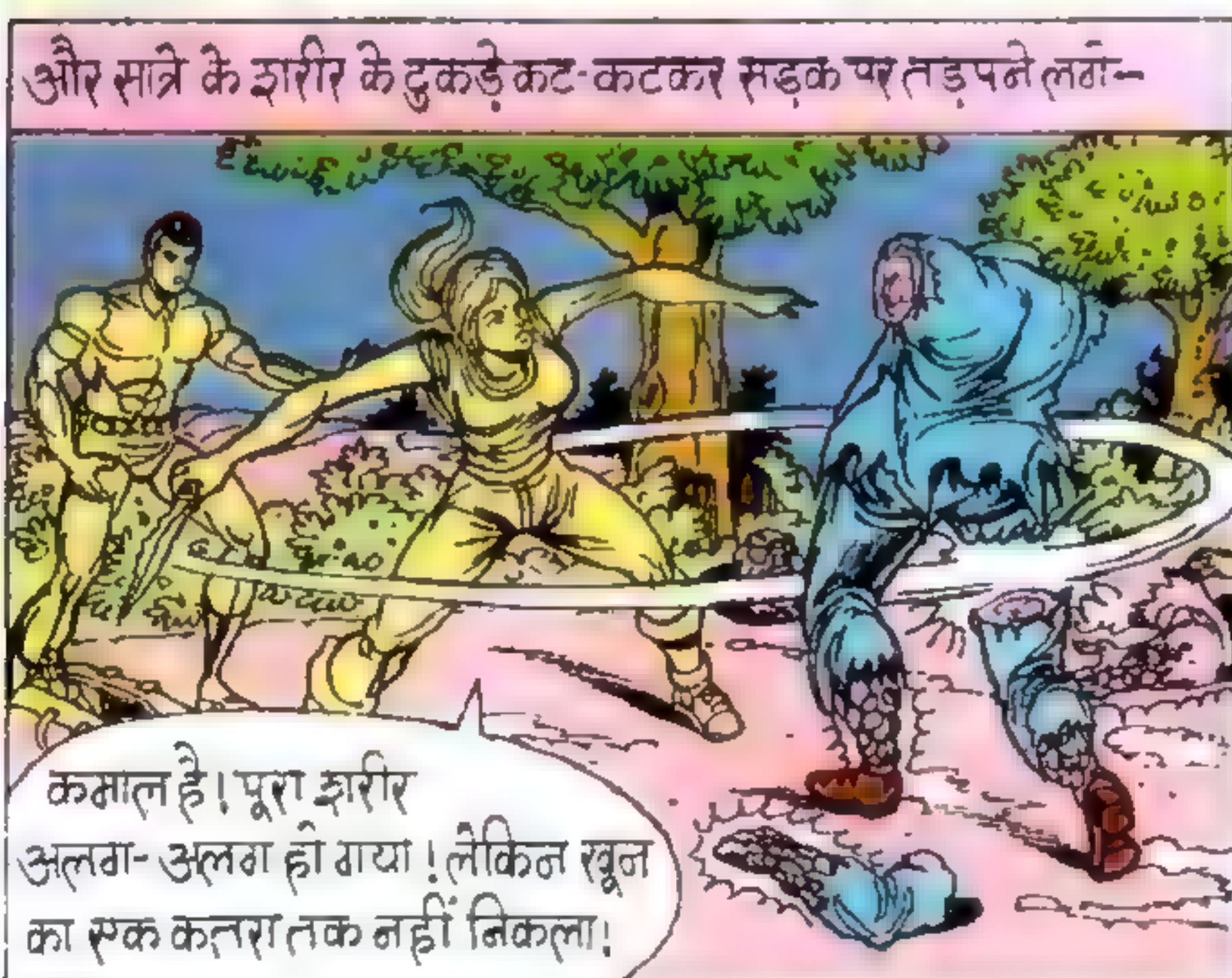
उसके एक ही शक्तिशाली धार से बक्से की चादरें टूटकर-

हवा में उड़ती हुई नीचे बहती नदी में जा गिरी-



ओह! अब हम क्या करेंगे ध्रुव?

लेकिन उनकी मंजा पूरी नहीं हो सकी-



लेकिन कार तक पहुंचने से पहले ही वे वापस घसीट लिए गए-

धाड़

अरे! यह क्या?
कटने के बाद अलग-
अलग होकर भी इसके
अंग हम पर हमला
कर रहे हैं।

तड़क



इसका मतलब इसका शरीर
जीवन ऊर्जा से नहीं, आणविक ऊर्जा
से चल रहा है। क्योंकि गर्दन कटने के बाद
तो जीवन ऊर्जा वैसे ही समाप्त हो जाती है।

गर्गर्र! ठीक समझा घुब!
मेरा मस्तिष्क इस वक्त भी आणविक
तरंगों के जरिए अपने अंगों को
नियंत्रित कर रहा है। एक बार तुम दोनों
को खत्म कर लूं, फिर मैं अपने अंगों को
फिर से आणविक ऊर्जा द्वारा जोड़
लूंगा।

और उसके बाद
जिबसा मुझे फिर
से पहले जैसा
बना देगा।

लेकिन मैं समझता हूं कि जिबसा
इसको ठीक नहीं कर सकता। क्योंकि
अगर वह ऐसा कर सकता तो इसको
झोड़कर भागता नहीं, बल्कि मुझे
मारने में इसकी मदद करता।

ओह! तो जिबसाने
इसे यह प्रलोभन दिया है।

खैर! वह तो बाद की बात है।
फिलहाल तो इन अंगों से निपटने
का तरीका सोचा जाए। क्योंकि इनके
स्पर्श से मेरे शरीर की जीवन ऊर्जा तेजी
से खिंच रही है।

इससे पहले कि ध्रुव कोई तरीका सोच पाता, बेरा की ताकत ने जवाब दे दिया-

उसका शरीर बेहोशी के अलम में कड़ी सड़क से टकराया-

और बेरा की दबोचने वाले शरीर के अंग भी ध्रुव की तरफ लपक गए-



अब ध्रुव को दो के बजाय चार अंगों से निपटना था-

और चारों तरफ से हो रहे प्रहारों ने पहले ही उसकी शक्ति को क्षीण कर दिया था-

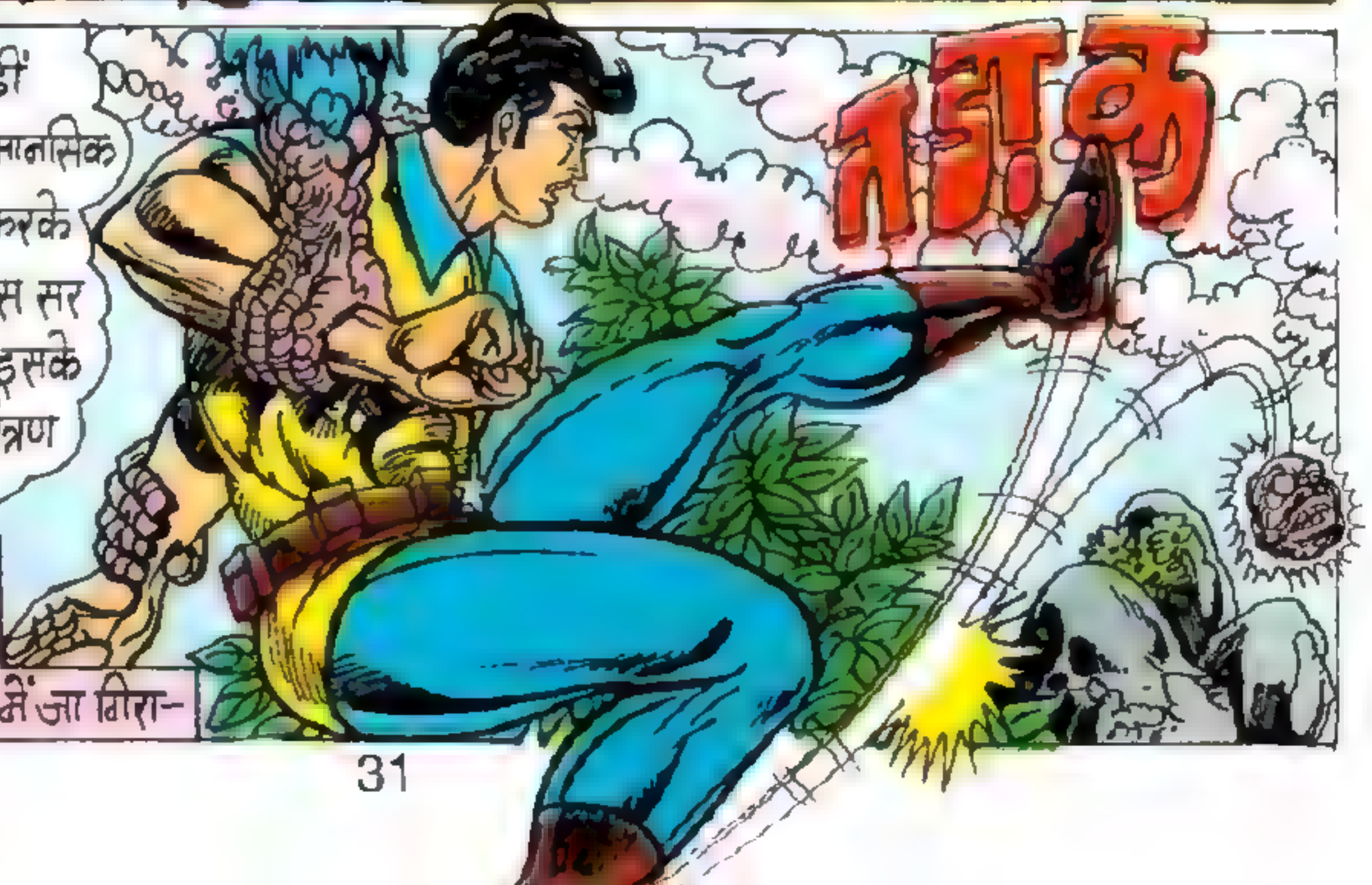
आह! अब मैं और मुकाबला नहीं कर सकता। और इनसे बचने का कोई रास्ता भी नहीं सूंघ रहा है।



तू लारव दिमाग और ताकत लगा ले ध्रुव, लेकिन मैं अपने अंगों से तब तक तुम पर वार करता रहूंगा, जब तक तू मर नहीं जाता!

इसका सिर! यह खुद तो हिल नहीं पा रहा है लेकिन अपनी आणविक मानसिक तरंगों से अपने अंगों को नियंत्रित करके मुझ पर वार करा रहा है। अगर मैं इस सर को कहीं दूर फेंक सकूँ, तो शायद इसके अंगों पर से इसका संपर्क टूटकर नियंत्रण खत्म हो जाए!

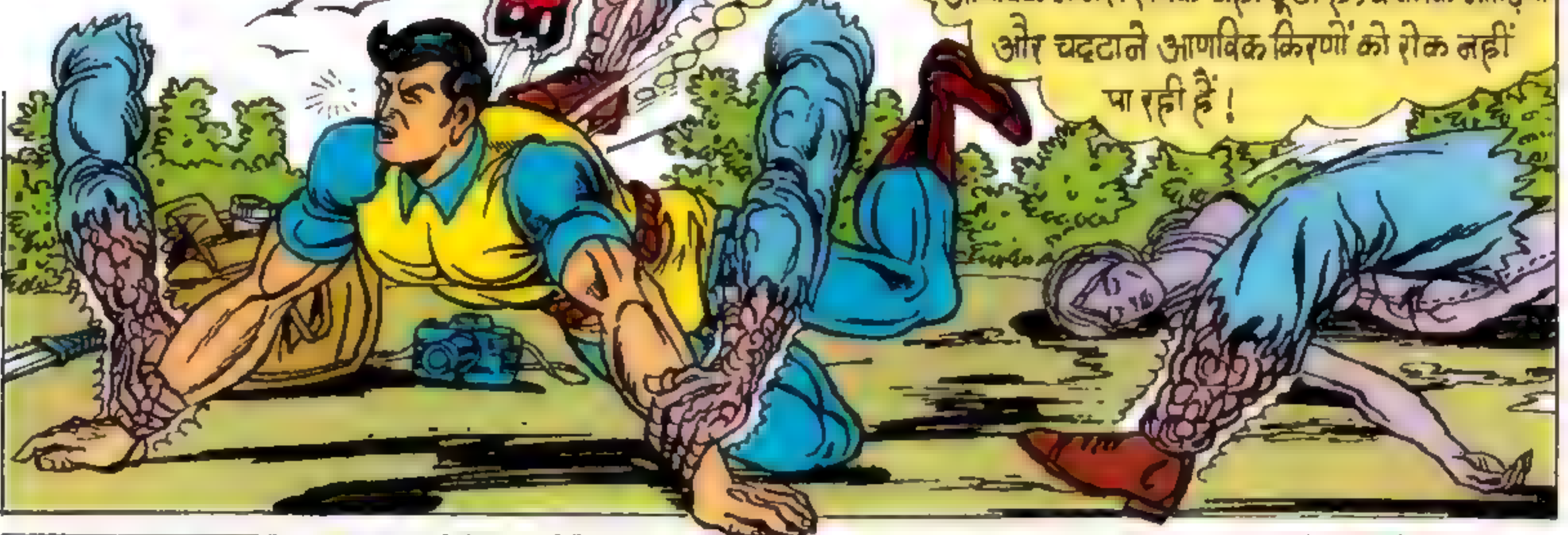
अगले ही पल ध्रुव की एक सही हुई किक से सात्रे का कटा सर उड़ता हुआ, झाड़ियों और पत्थरों के बीच में जा गिरा-



तडाक

लेकिन ध्रुव के इस बार से उस पर हो रहे हमले में कोई फर्क नहीं पड़ा-

आह! सात्रे के सिर के चट्टान के पीछे गिरने से भी कोई फर्क नहीं पड़ा। अपने अंतों से उसका आणविक मानस संपर्क नहीं टूटा है, क्योंकि मस्तिष्क और चट्टानों आणविक किरणों को रोक नहीं पा रही हैं!

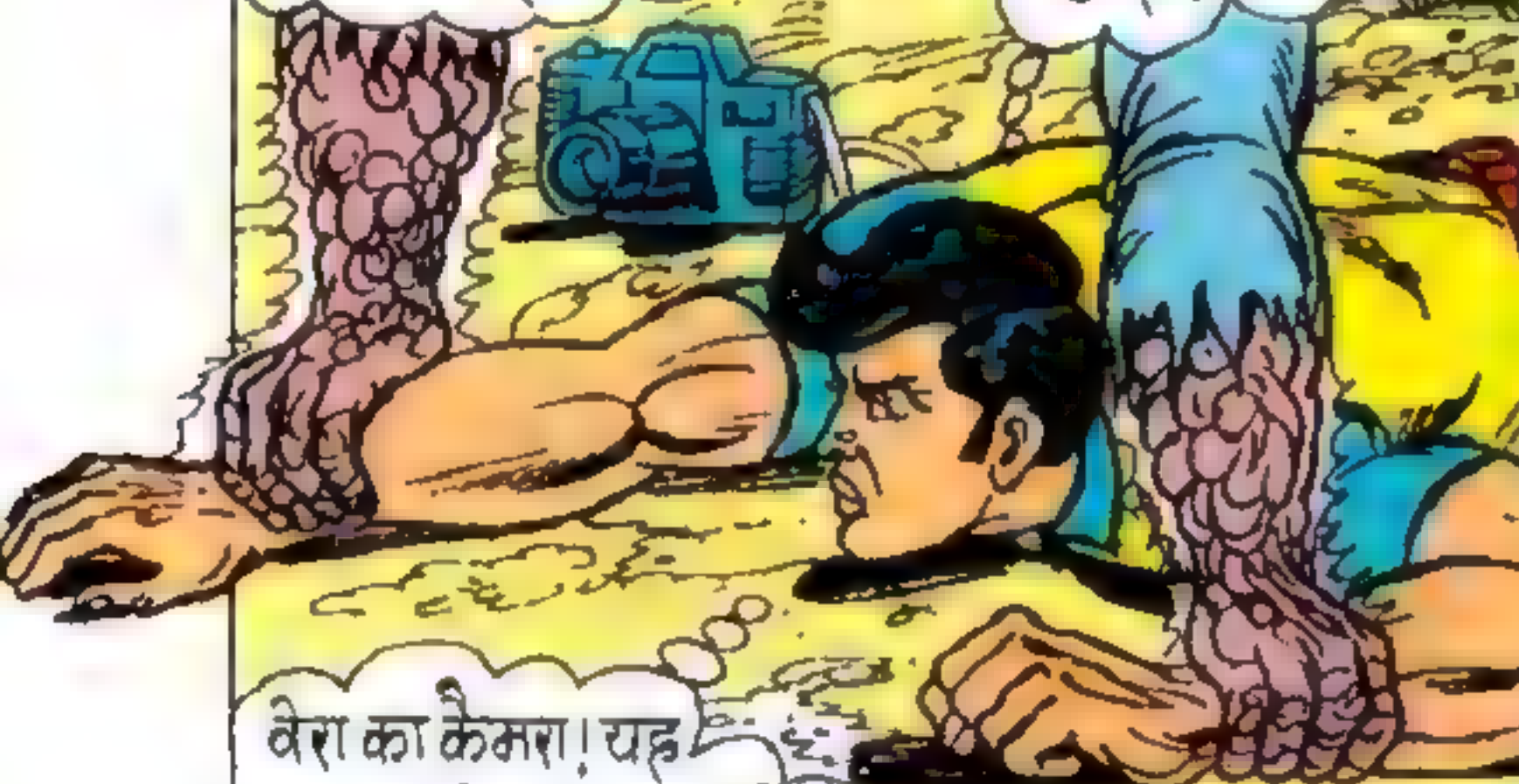


आणविक किरणों को सिर्फ 'लेड' की चादर ही रोक सकती है। और लेड की सारी चादरें सात्रे ने पहले ही नदी में फेंक दी हैं।

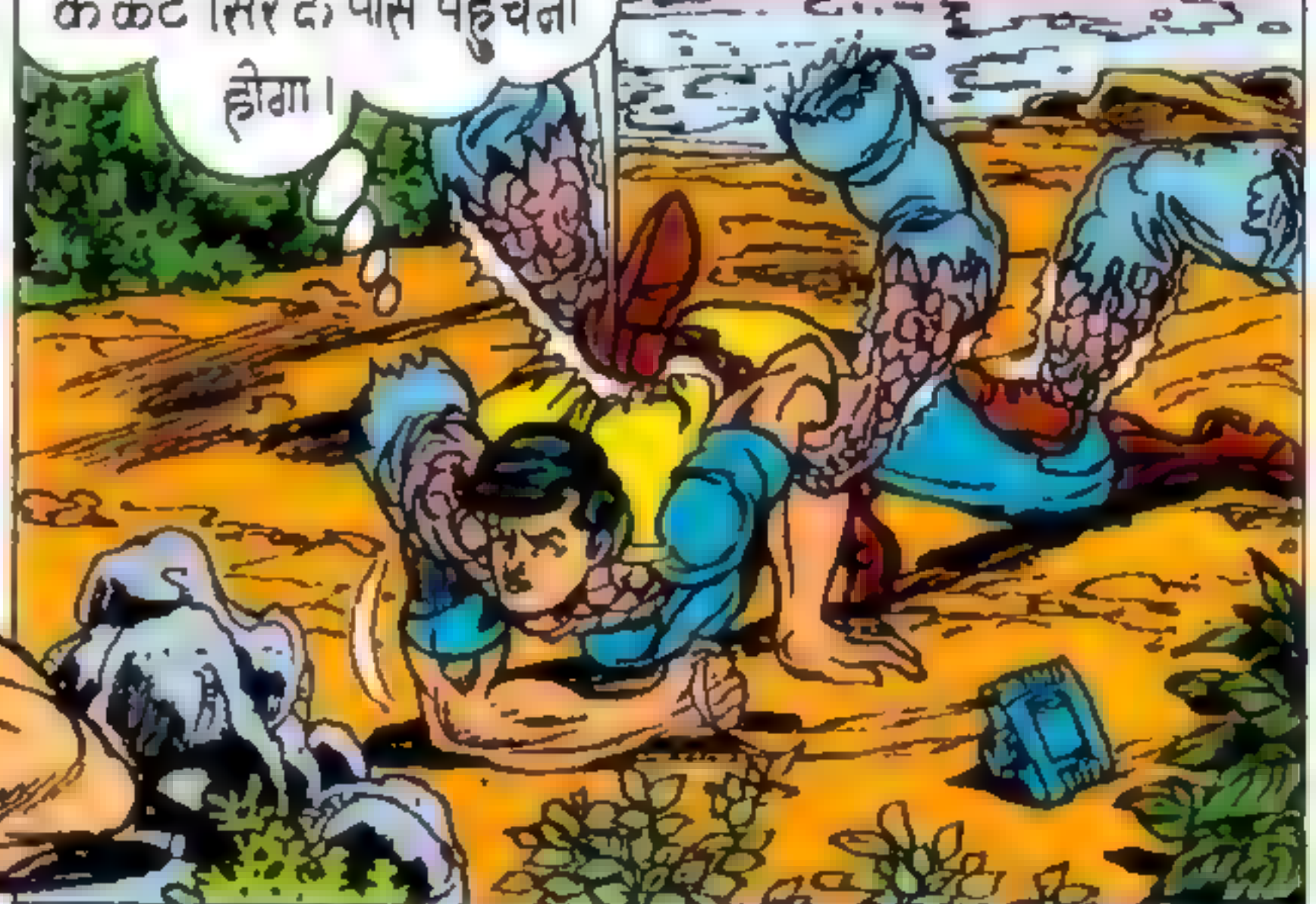
और अब मुझमें न तो संघर्ष करने की शक्ति बची है, और न ही इस मुसीबत से बचने का कोई रास्ता सोचने...
आह!

अब मुझे अपनी सारी बची-रबुची शक्ति को समेटकर सात्रे के कटे सिर दे पास पहुंचना होगा।

ध्रुव अपनी सारी ताकत का प्रयोग करके सात्रे के सिर तक पहुंचा-



वेरा का कैमरा! यह शायद मेरी मदद कर सके!



लेकिन कैमरे की मदद से ध्रुव आखिर करना क्या चाहता है?

हा हा हा! मरते वक्त मेरा चेहरा देखना चाहता है, ध्रुव? देख ले, देख ले!

तू भी मेरी शक्ल देख ले सात्रे! क्योंकि इसके बाद पता नहीं तू कुछ देख पाए या नहीं!

और-

मेरा सोचना ठीक निकला! कुछ आधुनिक कैमरे की तरह इस कैमरे में भी लेड की लाईनिंग है। और यह लाईनिंग इसके मस्तिष्क को ढकने के लिए पर्याप्त है। एक बार इसका मस्तिष्क लेड की चादर से ढक गया तो फिर आणविक मानस तरंगों निकलनी बन्द हो जाएंगी...



ध्रुव के एक ही प्रहार से कैमरा चकलाचूर हो गया-



... और मानसिक आणविक तरंगों का निकलना बन्द होते ही अंगों से इसका संपर्क टूट जाएगा...

... और वे दिशाहीन वस्तु की तरह झान्त हो जाएंगे।

सात्रे के शरीर के अंग कुछ देर तक तो जमीन पर गिरी मछली की तरह तड़पते रहे-



और फिर-

अरे! ये अंग तो गल रहे हैं। और साथ में सात्रे का सिर भी जलते मोम की तरह गलता जा रहा है। तो यह है उस 'आणविक मानव' बनाने की तकनीक का अंजाम। एक बार आणविक ऊर्जा रक्तम होनी शुरू हो जाए तो शरीर के कण आपस में बंधे नहीं रह पाते!



शायद इसीलिए अमेरिकी वैज्ञानिकों ने खुद कभी इस तकनीक का प्रयोग नहीं किया।

ध्रुव! तुमने सात्रे के अंगों को नष्ट कर दिया! पर कैसे?



तुम होश में आ गई बेरा! शुक है मतलबन कर!

सात्रे को मैंने तुम्हारे कैमरे की मदद से रक्तम किया। लेकिन माफ करना, उसके लिए मुझे तुम्हारे कैमरे को तोड़ना पड़ा!

क्योंकि लेड रेडिएशन के साथ-साथ रक्तम किरणों की भी रोक सकता है। बस, मैंने तुम्हारा कैमरा तोड़ा और उसमें किसमत से लेड लार्डनिंग निकल आई! बस फिर क्या था!

मैंने उस लेड से सात्रे के कटे सर को ढक दिया। और उसका संपर्क उसके अंगों से कट गया। फिर वे अंग अपने-आप ही गल कर पानी बन गए!

कोई बात नहीं! लेकिन कैमरा तोड़कर तुमको मिला क्या?

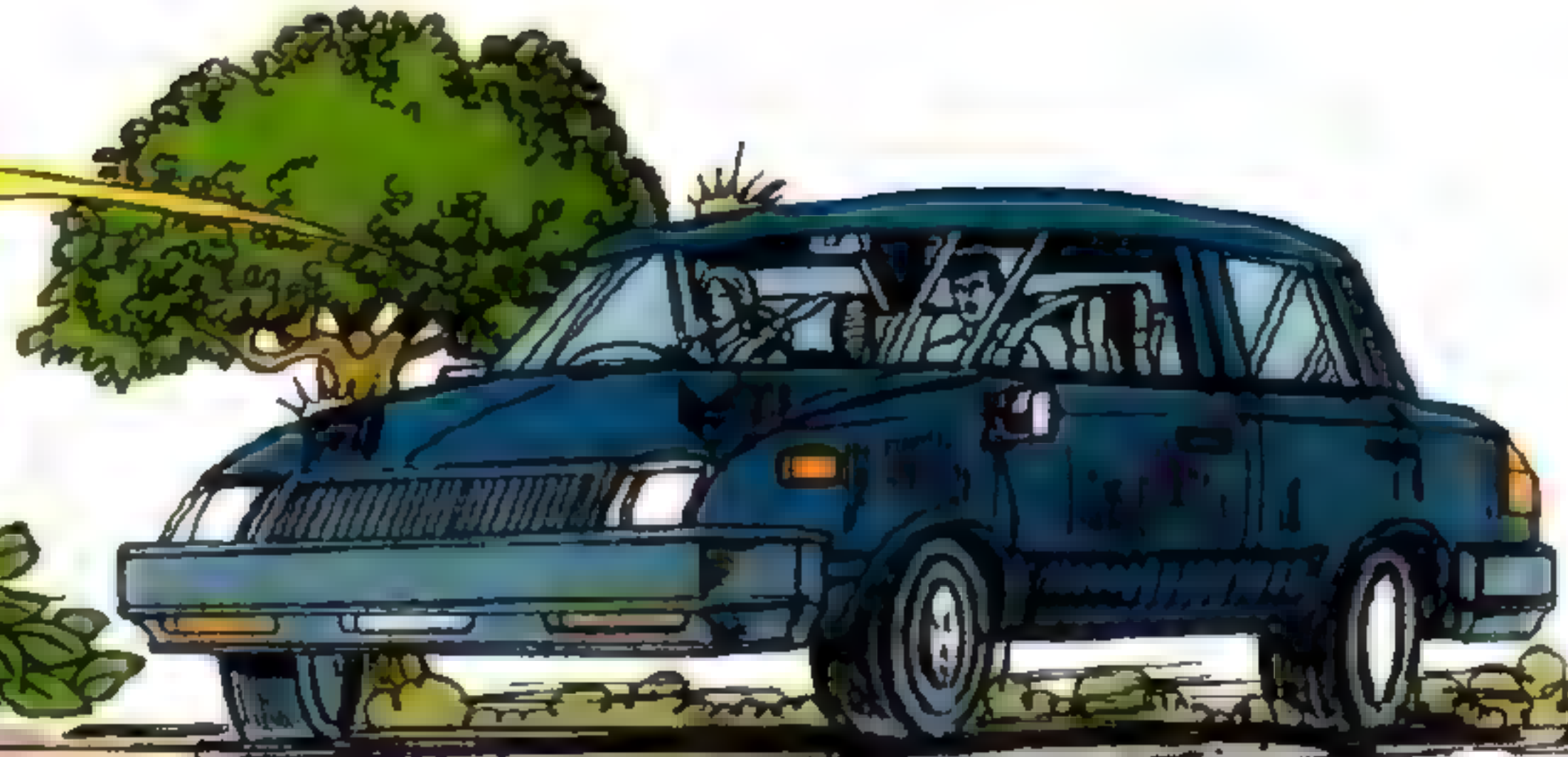
लेड! यानी सीसा। कैमरा देरवते ही मुझे याद आया कि कुछ कैमरों में लेड लार्डनिंग होती है। ताकि अगर कैमरों की एयरपोर्ट जैसी जगहों पर स्वसरे मशीन से गुजरा जाए तो रील को नुकसान न पहुंचे!

अच्छा हुआ कि मैं कैमरा साथ लेती आई।

अब यहां से निकल लीं!...

... क्योंकि जिवसा भी ल्योन पहुंच चुका है। इससे पहले कि वह तुम्हारे रास्ते में अड़चन डालने की कोई और योजना बना सके, हमको भी ल्योन पहुंच जाना चाहिए!

अभी भी ल्योन पहुंचने में हमको कम से कम छः, सात घंटे और लगेंगे।



ध्रुव और वेरा, ल्योन की तरफ तेजी से बढ़ती रहे थे-

लेकिन हेलीकॉप्टर और कार की गति में बहुत फर्क होता है। जिवसा और लूका, ल्योन पहुंच चुके थे-

हां, मैंने हेलीकॉप्टर से तुमको मैसेज तो यही भेजा था। लेकिन अब मुझे किसी भी चीज पर भरोसा नहीं रह गया है! यह भी हो सकता है कि ध्रुव को सात्रे न मार पाए। तुम यहां पर सतर्क रहो, क्योंकि ध्रुव यहां तक पहुंच सकता है।

वेलकम, जिवसा! और ध्रुव की मौत पर बधाई हो। क्योंकि अब तक तो सात्रे ने उसे खत्म कर ही दिया होगा।

मैं सतर्क हूं। और यहाँ पर बाकी तैयारी भी पूरी हो चुकी है।

तुम एक बार कंट्रोल रूम में जाकर सब देख आओ।

जिवसा ने अपने शक्तिशाली हाथों से दीवार से चिपकी विशाल घड़ी की दरवाजे की तरह खोला, और नीचे जा रही सीढ़ियां साफ दिखने लगीं-



सीढ़ियां, जो खत्म होती थीं उस गुप्त कंट्रोल रूम में-

जहां पर दुनिया की तबाही की कहानी लिखी जाने वाली थी-

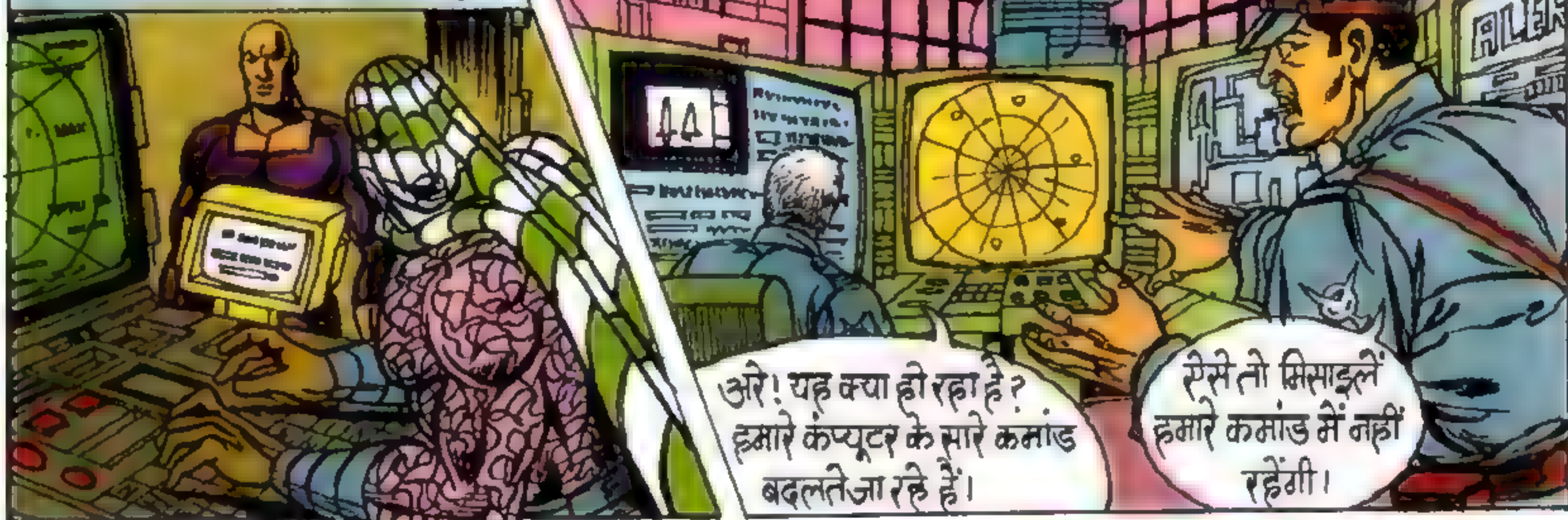


परफेक्ट! अब हमको देर नहीं करनी चाहिए। हो सकता है कि ध्रुव यहां तक पहुंच ही जाए...

...उससे पहले ही हमको अपना 'ऑपरेशन रैसम' शुरू कर देना चाहिए!

अगले आधे घंटे तक जिगसा की उंगलियां कंट्रोल बोर्ड पर थिरकती रहीं-

और योरोप के लगभग सभी 'आणविक मिसाइल सेंटरों' पर गड़बड़ी होनी शुरू हो गई-



ओरे! यह क्या हो रहा है?
हमारे कंप्यूटर के सारे कमांड बदलते जा रहे हैं।

ऐसे तो मिसाइलें
हमारे कमांड में नहीं
रहेगी।

ऐसे ही दुइय हर मिसाइल सेंटर पर देरवे जा सकते थे-

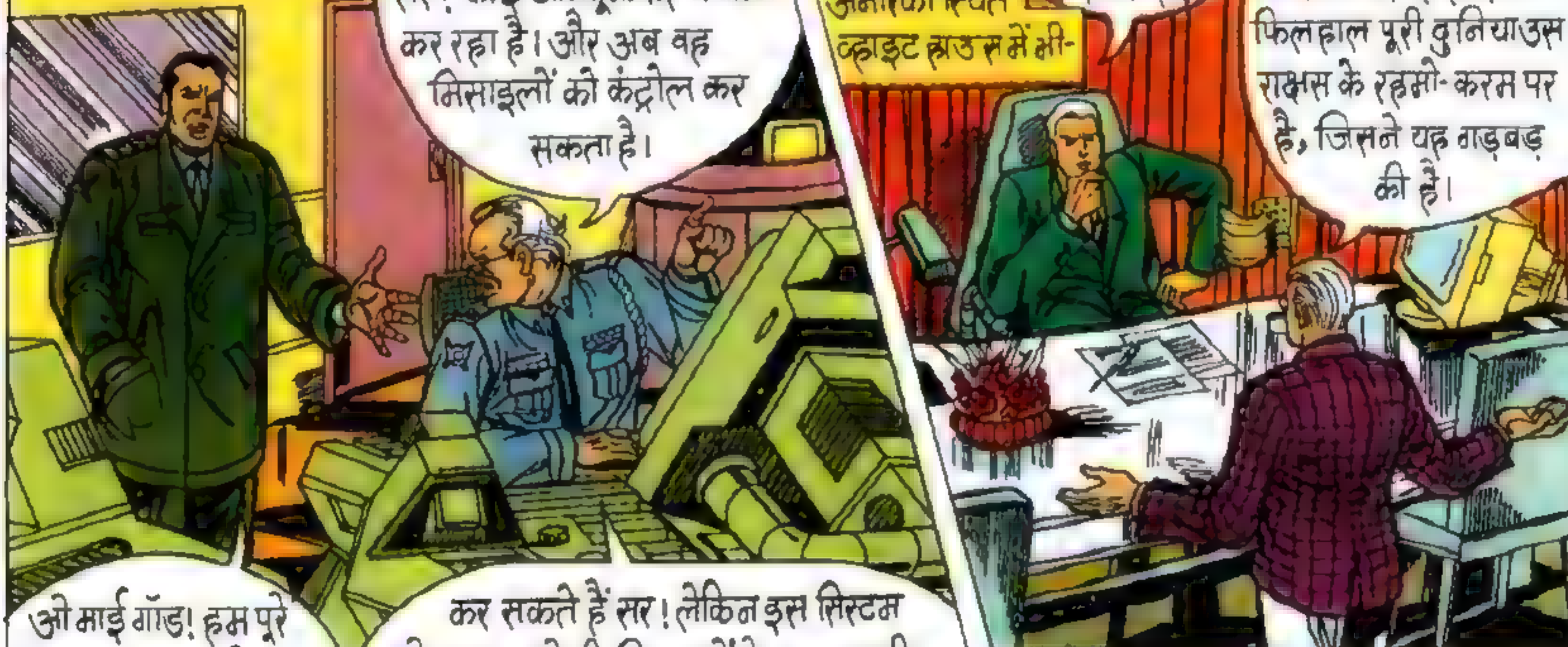
हमारे सारे 'कोड वर्ड' और 'पास वर्ड' बदलते जा रहे हैं सर! कोई जानबूझकर ये काम कर रहा है। और अब वह मिसाइलों को कंट्रोल कर सकता है।

हर जगह इसी की चर्चा होने लगी-

अमेरिका स्थित
व्हाइट हाउस में भी-

तो फिलहाल हम क्या कर सकते हैं?

कुछ नहीं मिस्टर प्रेसीडेंट! हम कोई रास्ता ढूँढ़ने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन फिलहाल पूरी दुनिया उस राक्षस के रहस्यो-करम पर है, जिसने यह गड़बड़ की है।



ओ माई गॉड! हम पूरे कंप्यूटर-सिस्टम को बन्द नहीं कर सकते क्या?

कर सकते हैं सर! लेकिन इस सिस्टम को बन्द करते ही मिसाइलों के अन्दर लगी कंप्यूटर प्रणाली अपने-आप चालू हो जाएगी, और फिर हम मिसाइलों की पहले से ही फिक्स निशानों पर छूटने से रोक नहीं पाएंगे!

जैसे-जैसे जिगसा द्वारा ही भेजा जा रहा था-

वैसे अभी-अभी फ्रेंच दूतावास से आई रिपोर्ट के अनुसार 'जिगसा' नामक एक अपराधी...

... ओरे! कंप्यूटर पर कोई मैसेज आ रहा है!



ओह! यह तो जिगसा का ही संदेश है। सारे योरोप की आणविक मिसाइलें मेरे कब्जे में हैं। अगले चौबीस घंटे के अन्दर-अन्दर अगर मुझे पचास खरब डॉलर मूल्य का सोना मेरे बताए पते पर न भेजा गया, तो सारी मिसाइलें एक साथ दाग दी जाएंगी!



यही जैसेज आपके देश अमेरिका के अलावा, योरोप के बाकी देशों की सरकारों के पास भी भेजा जा रहा है... जिवसा !

यह जिवसा तो बहुत तेजी से काम कर रहा है। अब हम क्या करें, मिस्टर प्रेसीडेंट?

... क्योंकि मुझे आभास हो रहा है कि यह जिवसा कोरी धमकी नहीं दे रहा है। अब या तो इस दुनिया को हमारे वैज्ञानिक बचा सकते हैं, और या फिर भगवान !

अमेरिकी राष्ट्रपति यह नहीं जानते थे कि इन दोनों के अलावा एक तीसरा इरादा भी था, जो जिवसा को रोक सकता था-



सभी मित्र देशों के पास सूचना भिजवा दी कि वे अपने-अपने हिस्से का सोना तैयार रखें। अगर अगले तेईस घंटे तक इस मुसीबत को रोकने का उपाय न मिले तो चौबीस घंटे में सोना दे दिया जाए!...

और वह जिवसा के पास तक पहुंच चुका था-



यही है वह स्टेट जहां रघुवंशी अंकल रहते थे ध्रुव ! देखा कक्रातुआ भी शायद यही बता रहा है!

हां, वेरा ! आखिरकार मैं ल्योन में पिताजी के घर तक पहुंच ही गया !

अब देखना यह है कि मेरे परिवार में और कौन-कौन लोग रहते हैं, और वे लोग मेरा स्वागत करते हैं या तिरस्कार !

और सबसे बड़ा सवाल यह है कि वे मुझे जिवसा के बारे में क्या बता सकते हैं।

घंटी बजी-

और अंदर द्रुतजार कर रही मार्सेल की सांसें, सीने में ही रुककर रह गईं-

यह तो ध्रुव है। साने को मारकर यहां तक पहुंच गया? यह लड़का है या झैतान !

लेकिन मार्सेल ने इस स्थिति से भी निपटने की तैयारी कर रखी थी-

कौन हो तुम लोग ? क... क्या चाहते हो ?

मैं ध्रुव हूं। रघुवंशी का बेटा !





हां, डार्लिंग! लेकिन अब तुम इस पर बरसने मत लगना। इंस्पेक्टर बेरा ने अभी-अभी बताया है कि रघुवंशी निर्दोष था। उसे फंसाया गया था। बेचारा निर्दोष साबित होने से पहले ही इस दुनिया से चल बसा।

रघुवंशी मर गया? मर गया मेरा भाई?

बीती बातें सोचकर दुरवी मत हो! आज तो रघुवंशी का दिन है।

हमारा भतीजा पहली बार अपने घर में आया है!



आप जिवसा के बारे में कुछ बता रही थीं!

हां, जिवसा! वह इसी इलाके का एक बदनाम कारक्स था। इस एस्टेट पर कब्जा करना चाहता था। लेकिन रघुवंशी ने उसकी सारी चालें विफल कर दीं। जरूर इसीलिए उसने रघुवंशी को हत्या के आरोप में फंसा दिया होगा।

और यह लूका कौन है?

लूका!... लूका हमारा बेटा है।...

तुम्हारा बड़ा भाई! लेकिन वह भी अब न होने के बराबर है!



ऐसा क्यों?

जिवसा ने उसकी अपने जाल में फंसाकर उसकी भी अपने जैसा बना दिया है। वह अब हमारे साथ नहीं, जिवसा के साथ ही रहता है।

और अब जिवसा उसके जरिए इस एस्टेट पर कब्जा करना चाहता है!

ओह! शायद लूका ने मुझे मारने की इतनी कोशिशें कीं। उसकी किसी तरह से मेरे बारे में पता चल गया होगा।...

...और वह जायदाद में हिस्सेदार नहीं चाहता होगा! इसीलिए जिवसा और लूका मेरे पीछे पड़ गए। और मुझे लियोन आने से रोकने लगे।



ध्रुव ने अपने-आप ही मार्सेल को भूत सीचने की मुसीबत से छुटकारा दिला दिया था-

ओह! तुम पर भी हमला हुआ? जरूर यह जिवसा की ही साजिश होगी, जिसमें उसने लूका बेचारे को अपना मोहरा बनाया है!

यह आवाज?

ओह! मेरे 'पेजर' पर कोई मैसेज आ रहा है!



पेजर पर मैसेज पढ़ते ही बेरा चौंक उठी-

ध्रुव, इधर आओ! मुझे तुमसे कुछ जरूरी बात करनी है।

आया है कि जिवसा ने 'स्वैकबलर' से योरोप की सारी निमाइलों को अपने कब्जे में ले लिया है, और चौबीस घंटे के अन्दर पचास बिलियन डॉलर का सोना मांगा है।



ओह! लेकिन जिवसा ने हैलीकॉप्टर में जाते हुए कहा था कि वह लियोन जा रहा है। यानी यहीं पर!

हां, पुलिस डिपार्टमेंट भी यह जानता है कि जिग्सा फ्रेंस में ही है। इसलिए ऑर्डर आया है कि हर पुलिस वाला जिग्सा की तलाश में जुट जाए।

ठीक है। जिग्सा, ल्योन में ही है। और ल्योन में रह चुकने के कारण तुम्हारे यहां पर काफी संपर्क होंगे। तुम अपनी तलाश शुरू कर दो। मैं भी यहां पर सब निपटाकर तुम्हारा साथ देने आता हूं।

यह इंस्पेक्टर कहां गई ध्रुव?

वह पहले ल्योन में ही रहती थी। अपने जान-पहचान वालों से मिलने गई है।

मैं तो आप लोगों के बारे में स्कंदम अंजान हूँ ताईजी। आप दोनों और लुका के अलावा मेरे परिवार में और कौन-कौन है?

वेरा, तुरन्त जिग्सा की तलाश में वहां से खाना हो गई—

तुम्हारे दादा हैं ध्रुव। दर-असल उनके सिर्फ दो ही बेटे हुए। एक तुम्हारे पिता रघुवंशी, जो अब नहीं रहे, और दूसरे उनके बड़े भाई रघुपति, जो मेरे पति हैं।

तो... दादाजी अब कहां हैं?

रघुवंशी पर कातिल होने का आरोप लगाने और उसके लापता हो जाने के बाद से ही दादाजी की तबियत खराब रहने लगी थी।...

... और फिर लगभग पांच साल पहले उन पर पक्षाघात चली 'पैरालिसिस' का अटैक पड़ा, और तब से वे न हिल सकते हैं, और न बोल सकते हैं।...

... वैसे मैं उनकी देखभाल करती हूँ। और जब मैं यहां नहीं रहती तो किसी नर्स को बुला लेती हूँ। वे ऊपर कमरे में रहते हैं।

ऊपर कमरे में? मैं... मैं जाकर उनसे मिल सकता हूँ!

हां, क्यों नहीं।

आओ!

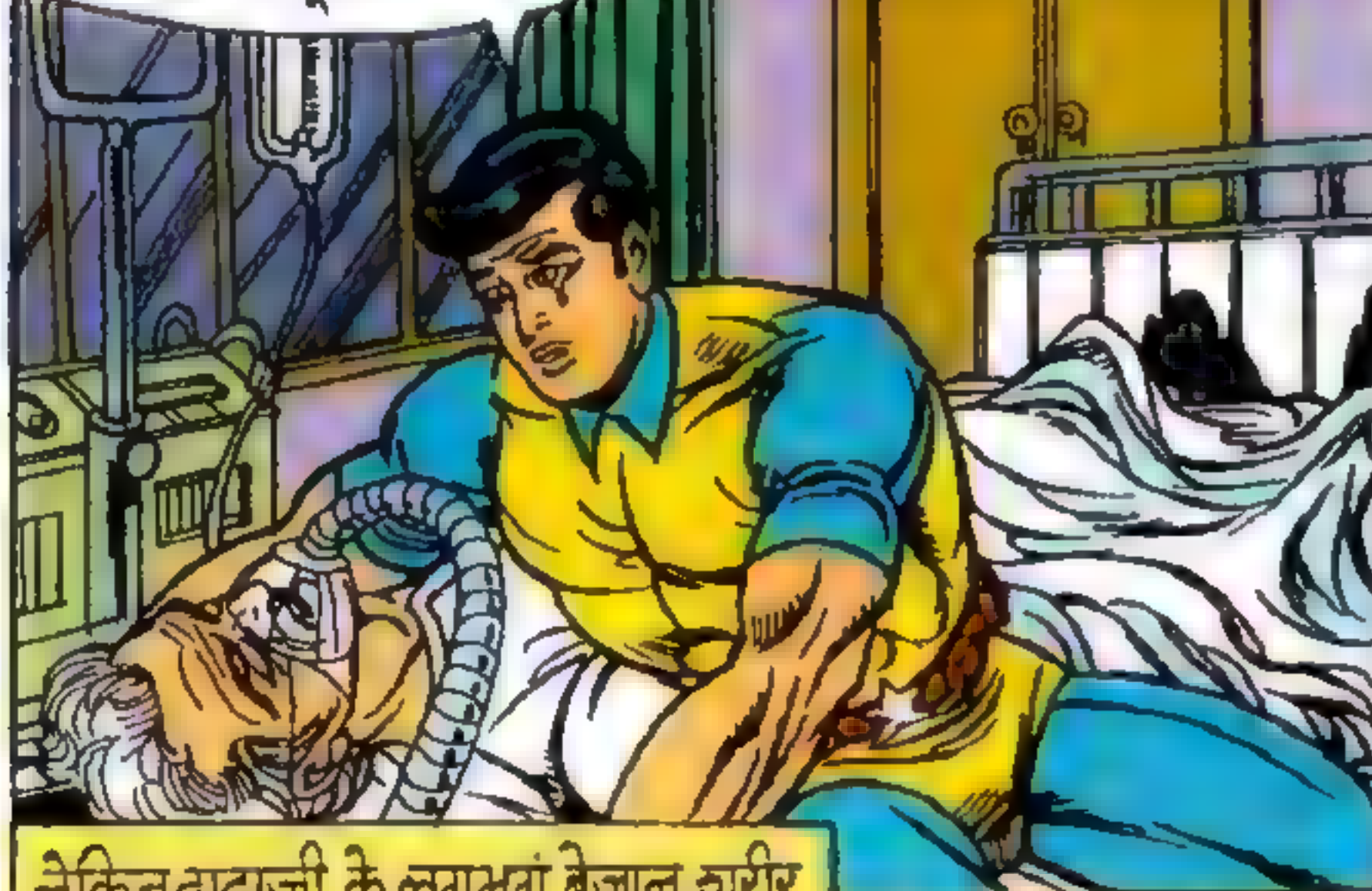
और फिर—

ये रहे!

दादाजी!

अगर इस बूढ़े के ठीक होने और इस पर दबाव डालकर अपने नाम वसीयत करवा सकने की आशा न होती, तो इसको कभी का मरने के लिए छोड़ दिया होता।

दादाजी! आंखें खोलिए दादाजी!
मैं ध्रुव हूँ। रघुवंशी का बेटा। बहुत
दूर से आपको ढूँढ़ता-ढूँढ़ता यहां
तक आया हूँ!



लेकिन दादाजी के लगभग बेजान शरीर
पर नती ध्रुव की आवाज का असर हुआ और न ही आंसुओं का-

सेसे बहुत कम अवसर आते
थे जब ध्रुव की आंखें आंसुओं
से छलछला उठें-

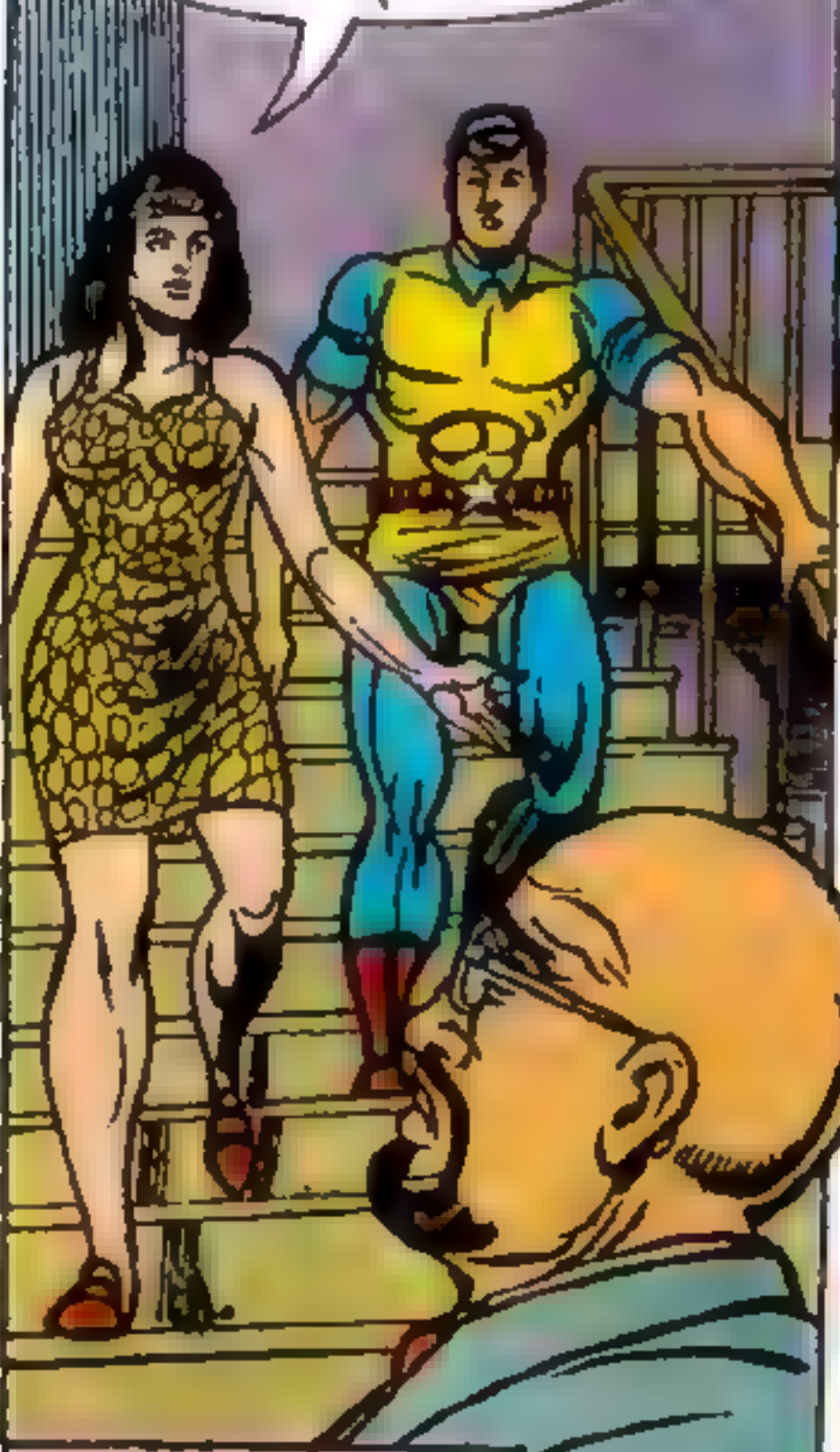
बोलना बेकार है ध्रुव! ये
तुम्हारी नती आवाज सुन
सकते हैं, और न ही तुम्हारी
उपस्थिति को यहां पर महसूस
कर सकते हैं!

अब आओ! डॉक्टर ने
इनकी ज्यादा परेशान नहीं
करने की कहा है।



इनके ठीक
होने के कितने चंस
हैं ताईजी?

उम्मीद तो कम है। वैसे डॉक्टर
ने हवा-पानी बदलने की कहा है।
शायद उससे कुछ असर पड़े। इसी-
लिए हम इस एस्टेट को बेचकर यहां
से कहीं दूर जाने की सोच रहे
हैं।



मार्सेल बड़ी चतुराई
से अस्सी सुदृढ़ पर आ रही थी-

लेकिन ध्रुव के जवाब
ने उसकी सारी आकाओं
पर पानी फेरकर रख दिया-



एस्टेट को बेचने की क्या
जरूरत है ताईजी? यह तो हमारे
पुरखों की निशानी है। आपको
जितने पैसों की जरूरत
हो...

... मुझसे कहिए।
मैं कहीं न कहीं से
कोड़िया करके पैसों
का इंतजाम कर
दूंगा।

ये पटछतो
सारी बात
ही गोल
कर गया।

खैर! ये बातें
तो होती ही रहेंगी।

चलो, पहले चाय
पी लो!



तुम खिन्न कितने
बजे लेते हो ध्रुव?

खिन्न के लिए मैं
नहीं रुकूंगा। मुझे अभी बेरा
के पास काम से जाना...

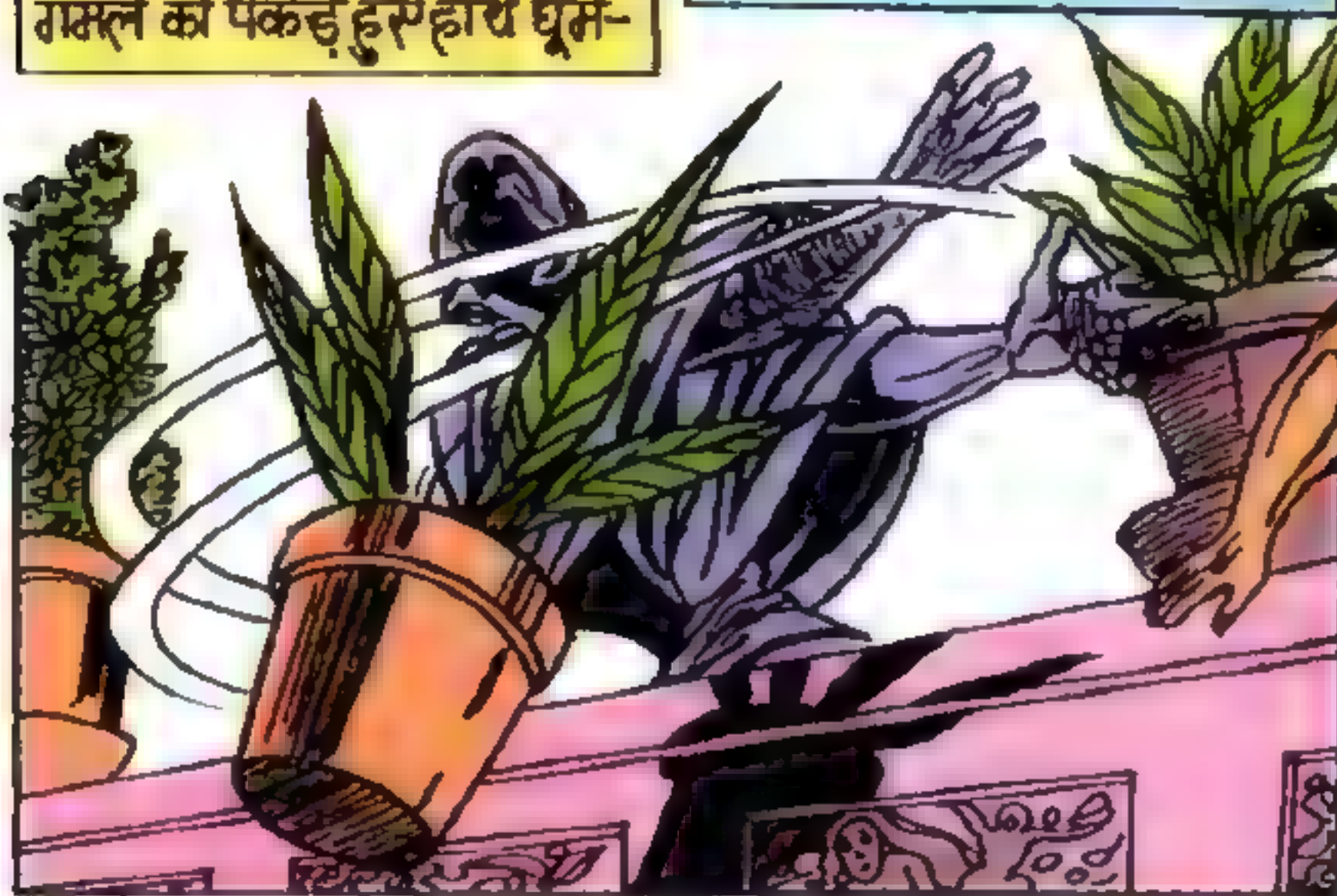
... ओ! वह
कौन है?

उस रहस्यमय आकृति के गमले को पकड़े हुए हाथ घूमे-

और गमला हवा में उड़ता हुआ-

ध्रुव के पैरों के पास आकर गिरा-

शायद गमला फेंकने वाले में ज्यादा शक्ति नहीं थी-



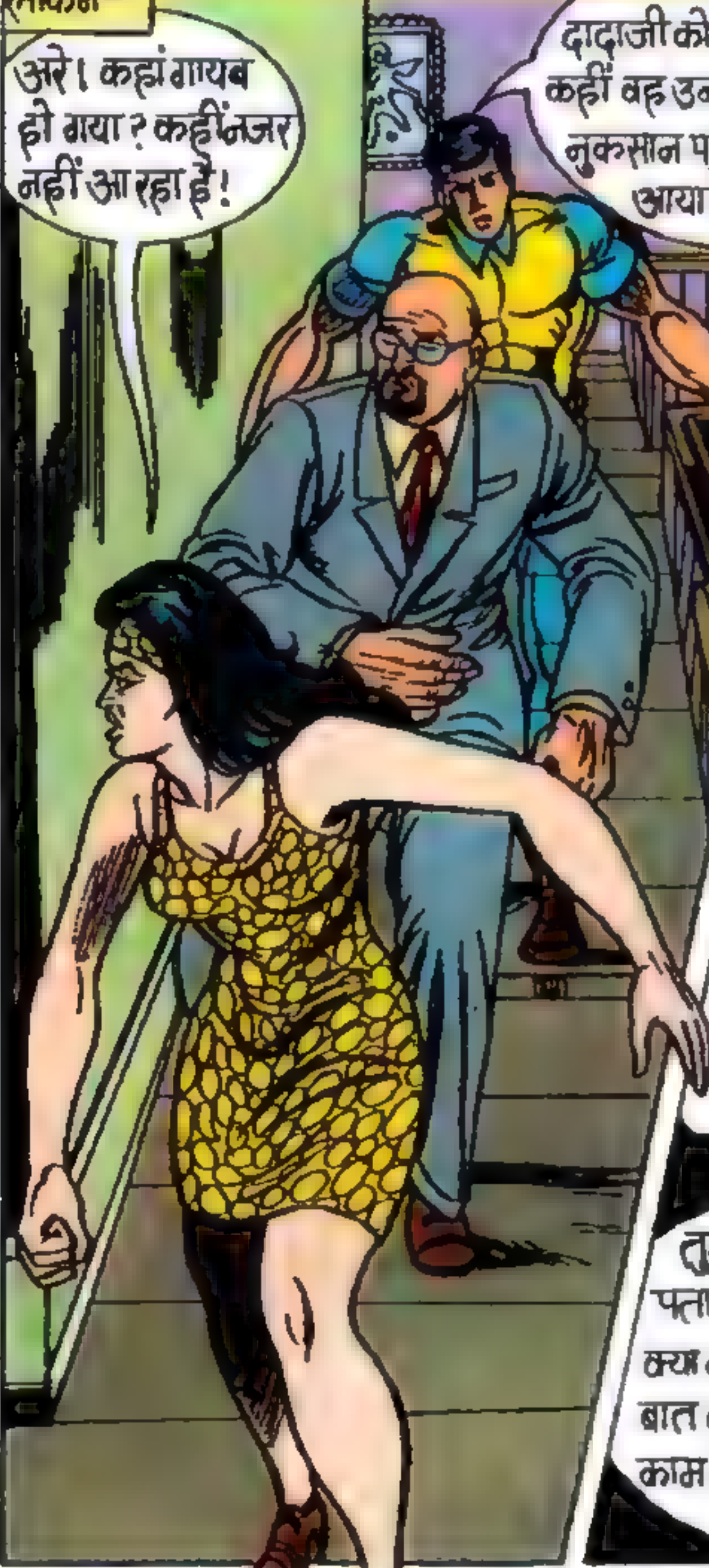
रघुपति और मार्सेल के साथ, ध्रुव भी ऊपर की तरफ भागा। लेकिन-

अरे! कहां गायब हो गया? कहीं नजर नहीं आ रहा है!

दादाजी की देखिए! कहीं वह उनकी तो नुकसान पहुंचाने नहीं आया था?

नहीं! तुम्हारे दादाजी एकदम सुरक्षित हैं।

तो फिर वह कौन था? और यहां पर करने क्या आया था? मुझे पर गमला फेंकने?



या वह जिग्सा का कोई आदमी था जो मुझे चेतावनी देने यहां तक आ गया था?

यह तो मुझे भी नहीं पता कि वह रहस्यमय इंसान कौन था? इससे पहले तो कभी उसको देखा नहीं। वह अन्दर तक कैसे आ गया, और फिर कहां गायब हो गया?

तुम चिन्ता मत करो ध्रुव! उसका पता चल ही जाएगा। तुम उस... क्या नाम है... बेरा के पास जाने की बात कर रहे थे न? तुम अपना काम निपटाकर आराम से आओ!



नहीं, ताईजी! फिलहाल मैंने जाने का इरादा बदल दिया है। न जाने क्यों मुझे थकान सी महसूस हो रही है।



ह...हां, हां! क्यों नहीं होगी।
इतने लम्बे सफर से जो आ रहे हो!
चली! मैं तुमको तुम्हारा कमरा दिखा
दूं। तुम फ्रेश हो लो और थोड़ा आराम
कर लो। तब तक मैं डिनर की तैयारी
करती हूं।

धन्यवाद
ताईजी!



अपने कमरे में पहुंचकर, अकेले होते ही ध्रुव के दिमाग में विचारों
की रेल, तेज गति से दौड़ने लगी-

पहले तो सब कुछ
ठीक लग रहा था।
लेकिन उस रहस्यमय
आकृति के एकदम दिखाई
पड़ने से कुछ गड़बड़
लग रही है...
... मुझे पर गमले से हमला
करना कोई बेवकूफ ही
सोच सकता है। शायद
वह मुझे पर हमला नहीं,
बल्कि मुझे कुछ बताने की
कोशिश कर रहा था। पर क्या?

उसने गमला उठाया, फेंका।
गमला मेरे पैरों के पास आकर
गिरा। आवाज हुई... ओह! मैं
समझ गया! वह नकाबपोश मेरी
मदद कर रहा था। पर उसने मुझे
जो बताया, उसके लिए मुझे रात
गहराने का इन्तजार करना
होगा!



ध्रुव अपनी चाल
चलने की तैयारी कर रहा था-



और मोहरे दूसरी तरफ से भी बढ़ाए
जा रहे थे-

उसको कुछ शक हो गया
है जिवसा! तभी उसने यहां
से जाने का इरादा स्कारक
बदल दिया!

कहो तो आज ही
रात उसकी मौत की
नींद सुला दूं जिवसा!

नहीं! उसकी मौत से यहां
पर पुलिस की भीड़ उमड़ पड़ेगी।
क्योंकि वह बेरा उससे मिलने जरूर आएगी!



अगर ध्रुव उसकी जिन्दा नहीं
मिला तो कातिल की तलाश में
पुलिस इस इमारत का चप्पा-चप्पा
छान मारेगी। शायद यहां बेसमेंट
तक भी पहुंच जाए, और फिर हमारा
पचास बिलियन डॉलर वसूलने का
प्लान, एक सपना बनकर रह जाए।
उसकी मारो मत, सिर्फ हम तक
पहुंचने से दूर रहो!

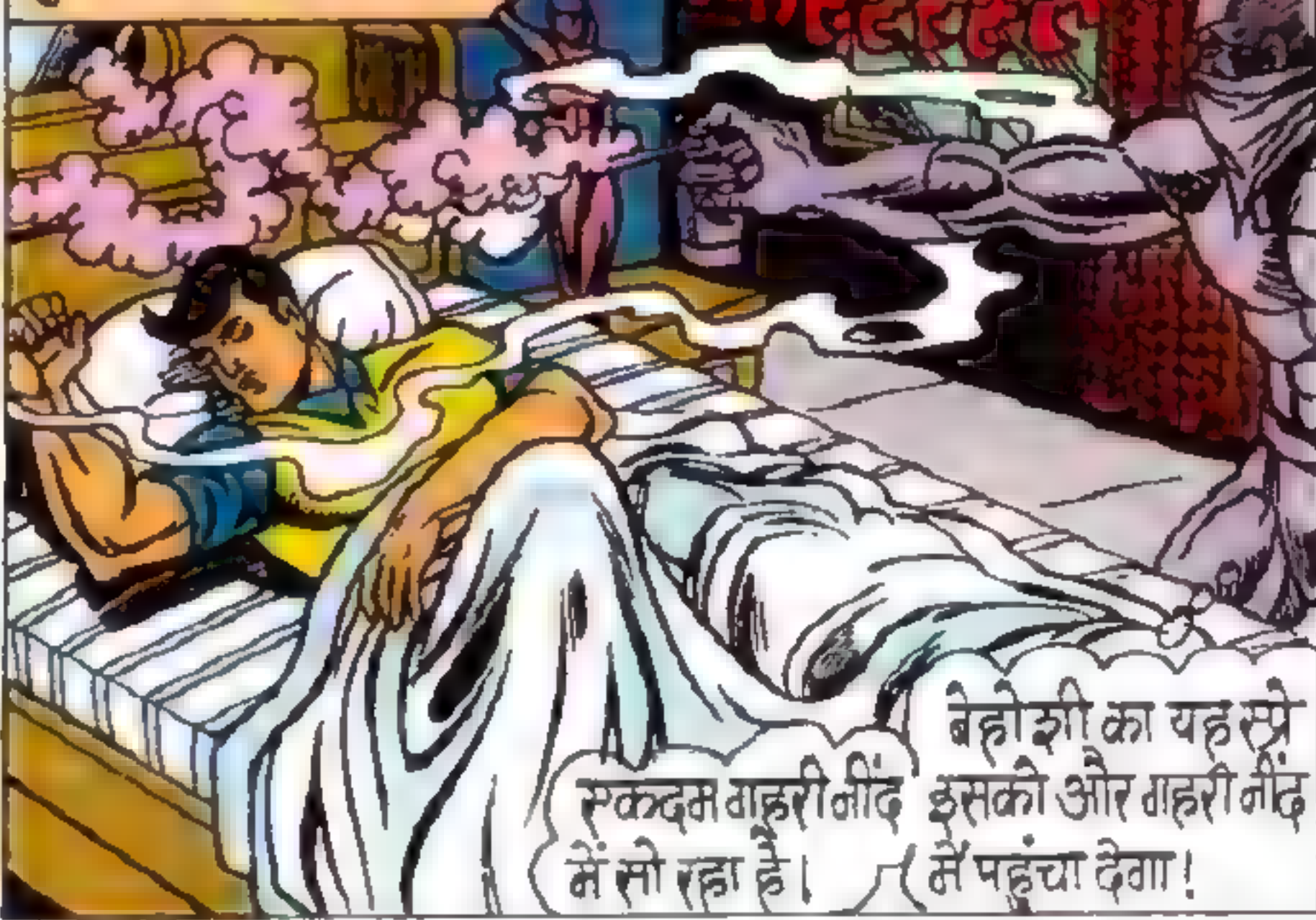
ठीक है! ऐसा
इंतजाम कर देता
हूं कि आज रात
वह जगो ही
नहीं!

ठीक है! तब तक मैं उस रहस्यमय नकाबपोश को ढूँढ़ने की कोशिश करती हूँ। न जाने कहां से यहां पर घुस आया, और चाहता क्या है?

उसका पता लगाना बहुत जरूरी है मार्सेल! मुझे ध्रुव से ज्यादा खतरनाक, वह शरक्स लगा रहा है।



रात गहराने लगी। सभी अपने बिस्तरों की गोद में घुसकर नींद की दुनिया की सैर करने लगे-



बेहोशी का यह स्प्रै स्कंदम गहरी नींद इसकी और गहरी नींद में सो रहा है। मैं पहुंचा देगा!

अब रास्ता साफ है। जब इसकी नींद खुलेगी तब तक हम फिरौती के पैसे बटोरने के लिए यहां से रफूचककर हो चुकेगें।



लेकिन अक्सर जिसकी उम्मीद करो, वह काम नहीं होता है-



प्राणायाम करके सांस रोकने का अभ्यास आज काम आ गया!

बेहोशी का यह स्प्रै फैलाने कौन आया था, यह तो मैं नहीं देख पाया। लेकिन पांच मिनट हो चुके हैं।

अब तक दुश्मन निश्चिन्त हो गया होगा। ध्यान-बीन करने का वक्त आ गया है।...

... गमला जब मेरे पैरों के पास गिरा था तो ऐसी आवाज हुई थी, जैसे कि फर्श नीचे से खोखली हो। यानी इस इमारत के नीचे तहरबाना बना हुआ है। और वह नकाबपोश मुझे यही बताना चाहता था।



पर ये कैसे पता चलेगा कि नीचे जाने का रास्ता कहां से... अरे!...

... यह तो वही नकाबपोश है। उस घड़ी की तरफ इशारा कर रहा है। यानी उसी घड़ी के पीछे से नीचे जाने का रास्ता होना चाहिए।

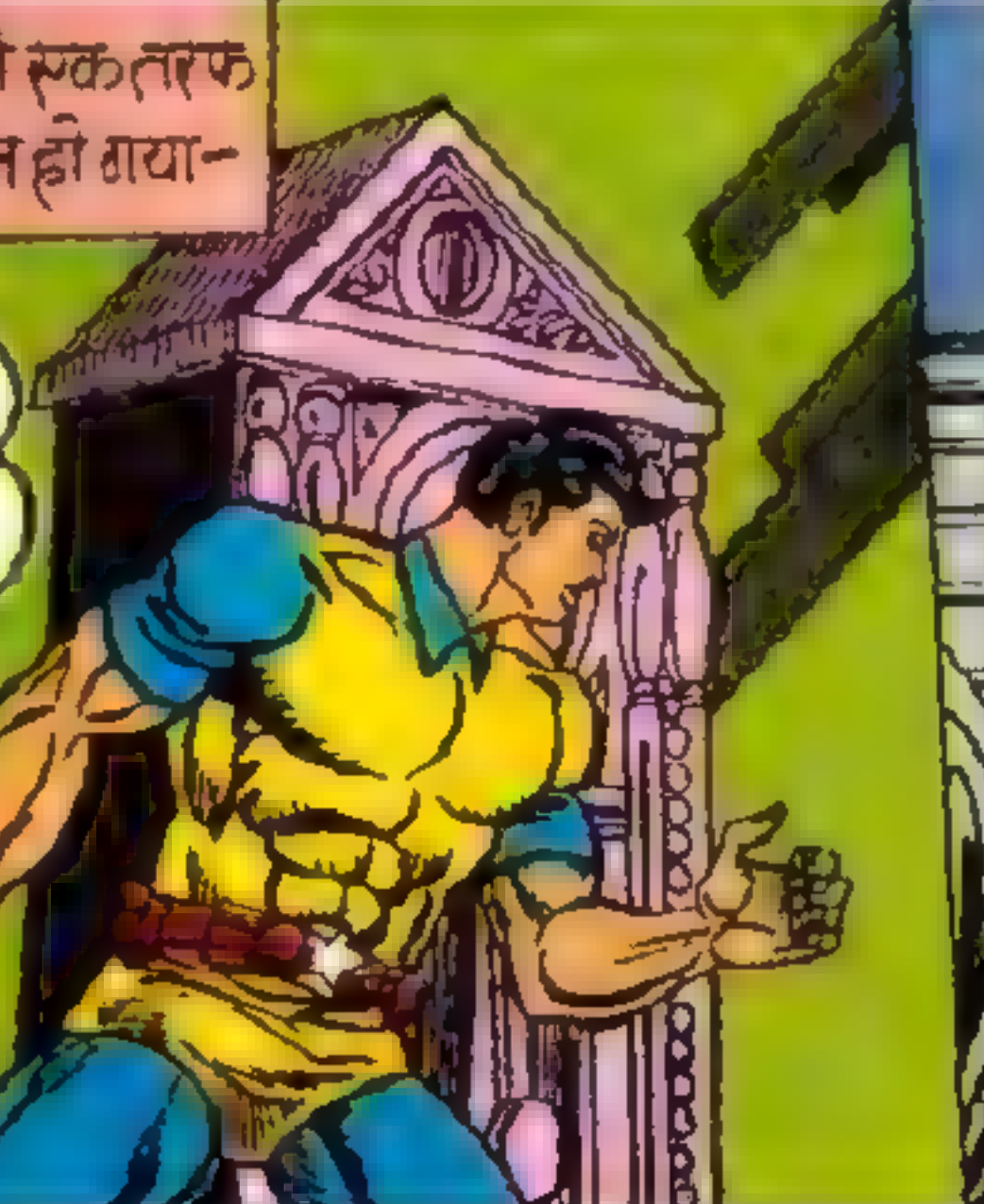


ध्रुव के आगे बढ़ते ही-



वह नकाबपोश तेजी से स्कतरफ हटकर परछाईयों में गुम हो गया-

अरे! कहां गया? कौन है यह मेरा मददगार और जैकब की तरह यह मेरे सामने आना क्यों नहीं चाहता? * खैर! अभी यह सब सोचने का वक्त नहीं है!



ध्रुव की तरफ से निश्चिन्त जिवसा, मार्सेल और लूका सपनों के सागर में गोते लगा रहे थे-

पचास बिलियन डॉलर का सोना मैंने प्रशान्त महासागर में स्थित किंलासी नामक देश में मंगावाया है। वह एक द्वीप है, और उसका तानाशाह शासक मेरा पुराना दोस्त है। एक बार सोना वहां पहुंच जाय, उसके बाद किंलासी के मालिक हम होंगे!

और एक स्वतंत्र देश होने के कारण कोई हमें धु भी नहीं सकेगा। पर इस ध्रुव का क्या करें?

वैसे तो अब हमें न तो उससे मतलब है, और न ही उसकी जरूरत! फिर भी वह भविष्य में हमारे लिए खतरा बन सकता है। इसलिए जाने से पहले हम उसे और बूढ़े, दोनों को ठिकाने लगा जाएंगे।

ध्रुव को ठिकाने लगाना इतना आसान नहीं है, जिवसा...

?

... क्योंकि ध्रुव को तुम्हारे ठिकाने का पता लग चुका है।

ध्रुव! तू... तू बेहोश नहीं हुआ? पर यहां का पता कैसे लगा लिया तूने?

मैं अगर बेहोश हो जाता तो तुम लोगों को बेहोश कैसे करता, ताई?

और रही यहां पहुंचने की बात, तो मला ही उस नकाबपोश फरिश्ते का जिसने मुझे यहां का रास्ता बताकर तुम लोगों की दुनिया को बंधक बनाकर सोना सेंठने की स्कीम पर, पानी फेरने के लिए यहां भेज दिया!

मैं कह रहा था मार्सेल कि वह नकाबपोश ज्यादा खतरनाक है। उसको दंडो! पर तुमने मेरी बात की गंभीरता से नहीं... आह!

घबराओ मत जिवसा! ये एक है, और हम तीन! यह यहां से जिन्दा बचकर नहीं जाएगा, और नहीं हमको पकड़ पाएगा!

तड़क

अभी मैं तुम लोगों की पकड़ने की सोच भी नहीं रहा हूँ लूका भइया! फिलहाल तो मेरा इरादा तुम लोगों की मशीनें तोड़ने का है। क्योंकि मुझे आभास हो रहा है कि ये मशीनें ही तुम लोगों की गन्दी स्कीम का सेंटर है।

इसे रोकी, लूका! रोकी!

ध्रुव को पकड़ पाना इतना मुश्किल नहीं था-

तो इतना आसान भी नहीं था-

लेकिन उस 'कंट्रोल सेंटर' में कलाबाजी खाने के लिए पर्याप्त जगह नहीं थी-

और ध्रुव के दुश्मन, तीन तरफ से वार कर रहे थे-

इस संकरी जगह में मुझे फुर्ती दिखाने में थोड़ी दिक्कत हो रही है!

ये तीनों मिलकर मुझ पर हावी तो हो सकते हैं, लेकिन उससे पहले मैं दुनिया को बचाने का इन्तजाम जरूर करूंगा!...

... इस कंट्रोल सेंटर को तोड़ कर। चाहे उससे मेरी जान ही क्यों न चली जाए!

ध्रुव अपना सारा ध्यान 'कंट्रोल पैनेल' तोड़ने में लगा रहा था, और यह बात उसकी महंगी पड़ने जा रही थी-

ओह! लूका और जितना में 'पावर कैप्सूलों' को खाने की वजह से जबरबस्त शक्ति है। मैं इनके झिकंजे से छूट नहीं पा रहा हूँ। *

इस वक्त अगर मुझे थोड़ी सी मदद मिल जाए तो अब मैं पहले इनको पीटूंगा और फिर 'कंट्रोल पैनेल' को तोड़ूंगा। कितना अच्छा हो, अगर वेरा मुझे दूंदते-दूंदते यहां आ जाए, या फिर वह रहस्यमय नकाबपोश कहीं से प्रकट हो जाए।



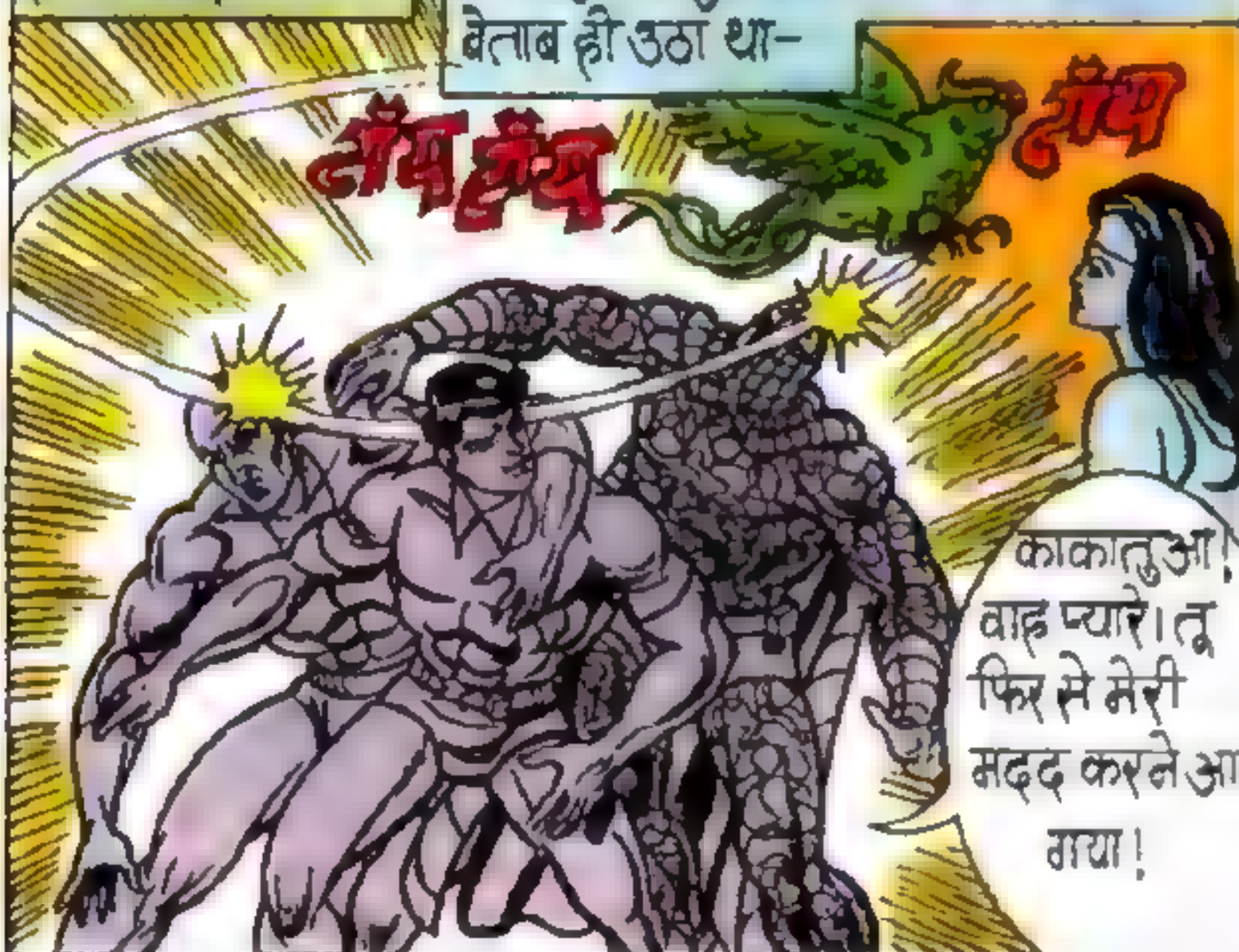
लेकिन दोनों में से कोई भी नहीं आया-

मदद कहीं और से ही आ गई-

इमारत के बाहर काफी दूर से बैठा हुआ काकातुआ, ध्रुव से मिलने को स्कारक बेताब हो उठा था-

काकातुआ के आगमन ने ध्रुव को बह मौका दे दिया था, जिसकी उसे तलाश थी-

तुम लोगों ने ही आज से पच्चीस साल पहले मेरे पिता इयाम पर झूठा कलंक लगाकर उसे गुमनामी की जिन्दगी जीने पर मजबूर कर दिया था। आज मैं तुम लोगों की शक्लें इतनी बिगाड़ दूंगा कि चेहरा रहते हुए भी तुम लोग गुमनाम हो जाओगे! ...

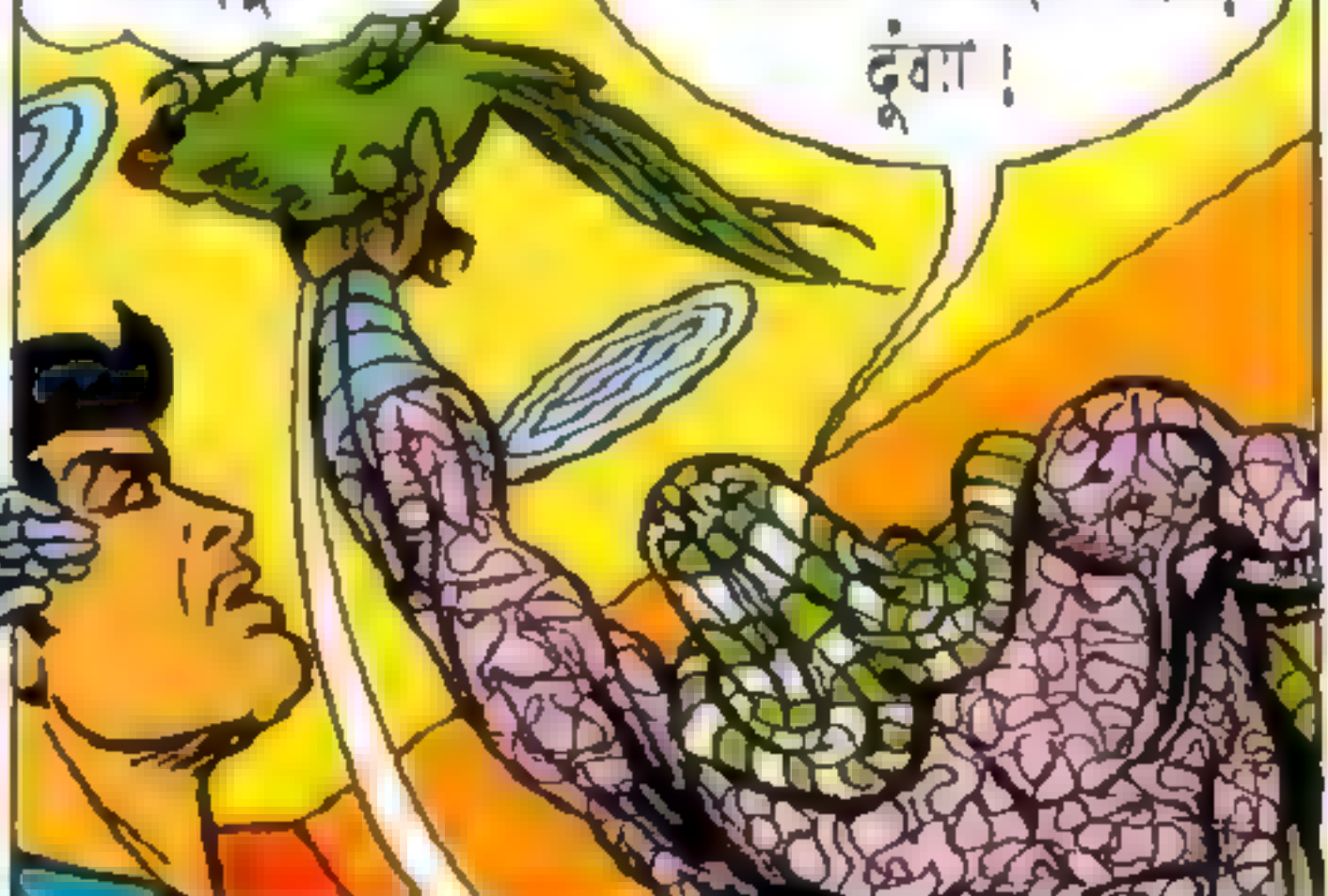


... क्योंकि कोई तुम लोगों को तब पहचान ही नहीं पाएगा!

यह तो पागलों की तरह लड़ रहा है। इसके दिल में बदले की भावना जाग उठी है। अब इसको रोक पाने का एक ही तरीका है...

... इस तोते को बंधक बना लूं।

रुक जा ध्रुव! वरना तेरे इस प्यारे तोते की गर्दन सरोड़ दूंगा!



ओह! जिम्सा ने काकातुआ को पकड़ लिया है। और अगर मैं नहीं रुका तो यह निश्चित रूप से इसकी गर्दन मरोड़ देगा! ...

... नहीं! काकातुआ ने दो बार मेरी मदद की है। और अब मेरी बारी है। इसकी मदद करने की।



लो, जिम्सा! मैंने अपने हाथों को रोक लिया!

अब मैं इसकी खोपड़ी के दुकड़े हवा में उड़ते देखना चाहती हूँ।

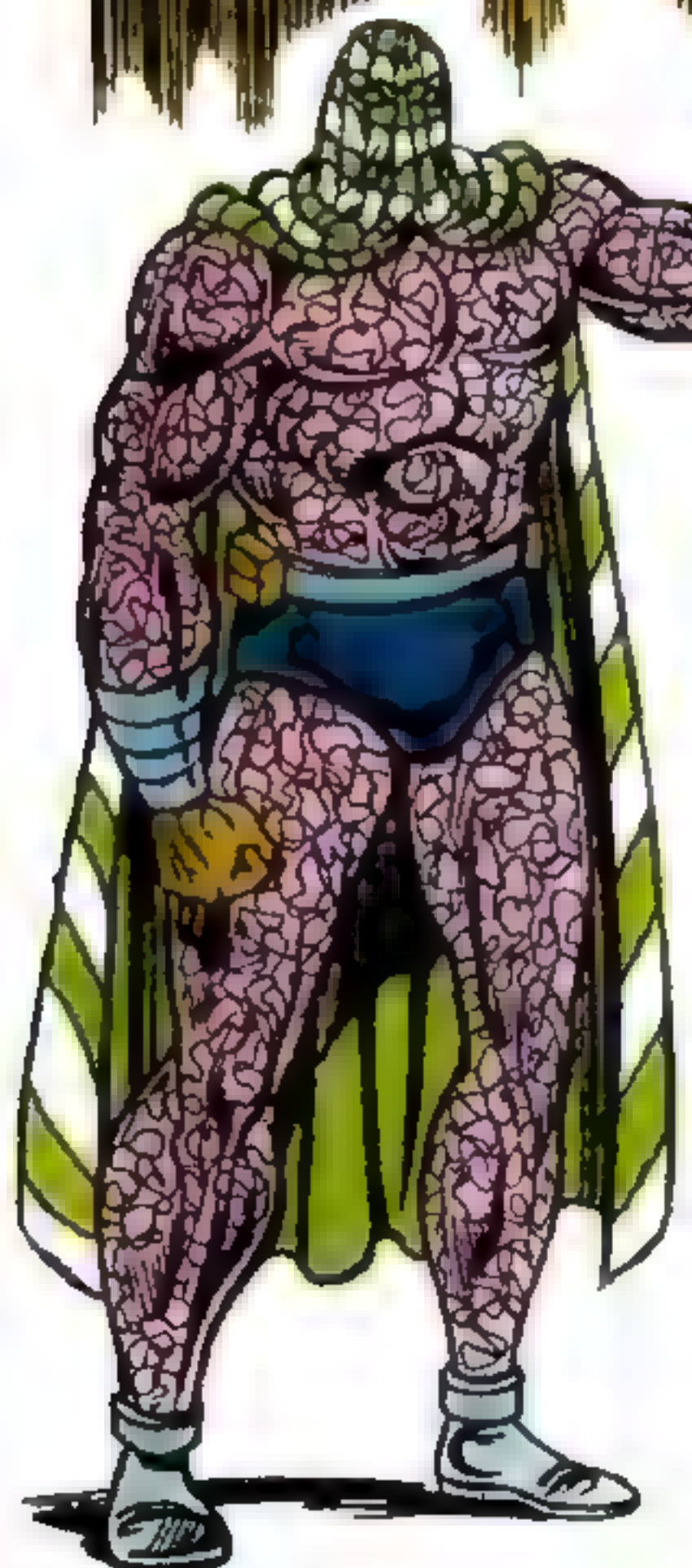


नहीं, मार्सेल! मजा नहीं आया, और फर्क भी गन्दा हो जाया। इसको तो अगर बत्ती की तरह सुलगा-सुलगाकर मारने में मजा है।

इसको टॉर्चर-रूम में ले चलो! वहीं जहाँ पर हमने बेरा के बाप ल्यूबेक के दुकड़े-दुकड़े करके, उन दुकड़ों को लॉन में बिखेर दिया था।

कुछ ही देर बाद, ध्रुव को बलि चढ़ाए जाने वाले बकरे की तरह बांध दिया गया था—

तू शुरू से हमारा नुकसान पर नुकसान करता आ रहा है ध्रुव! इस बार तो तू बहुत बड़ा नुकसान कर डालता!



पर तूने सिर्फ कंट्रोल-पैनल को नुकसान पहुंचाया। जबकि असली चीज तो 'स्क्रीमबलर' है! और वह जहाँ पर फिट है, वहाँ तक पहुंचने की तो तूम सोच भी नहीं सकते!

इतना सब कुछ तूम इस मार्सेल और लूका की बदौलत ही कर पाए हो जिम्सा! लेकिन ये तुम्हारी चमचागिरी क्यों करते हैं? आखिर तूम हो कौन?

यह या तो मेरे कुछ खास लोग जानते हैं और या फिर भगवान। अभी 'हाइड्रोलिक प्रेशर' से दबने वाले 'पंचिंग-किलर' का दरवाजा बन्द होगा। कीलें तेरे शरीर में धीरे-धीरे घसेंगी। रबून के फव्वारे एक साथ फूटेंगे और तेरे मुंह से कई सारी चीरवें एक-एक करके निकलेंगी।...

... उसके बाद तुरबुद ही भगवान के पास पहुंच जाएगा। उसी से पूछ लेना कि कौन है जिग्सा!

हाइड्रोलिक प्रेशर धीरे-धीरे बढ़ने लगा। और दरवाजा बंद होने लगा-

कीलें, ध्रुव के शरीर को छेदने के लिए बेटाब होने लगीं- दरवाजा कहीं अटक रहा है जिग्सा!

अटक नहीं रहा है। भतीजे का बदन जरा कड़ा है। कीलें इसके शरीर के अंदर घुसने में थोड़ा समय तो लेंगी ही!

और फिर दरवाजा एक तेज आवाज के साथ बंद हो गया-

और साथ ही गुंज उठी ध्रुव की एक तेज चीरव-

भयंकर झ्याऊ

हाहाहा! देखा कितनी मीठी चीरव थी। मजा आ गया।

अब जरा दरवाजा खोलकर इसकी छलनी हुई लाश देखा... अरे!

ठक ठक ठक ठक

ऊपर से आवाज आ रही है... फर्श पर कोई चल रहा है। कौन हो सकता है यह?

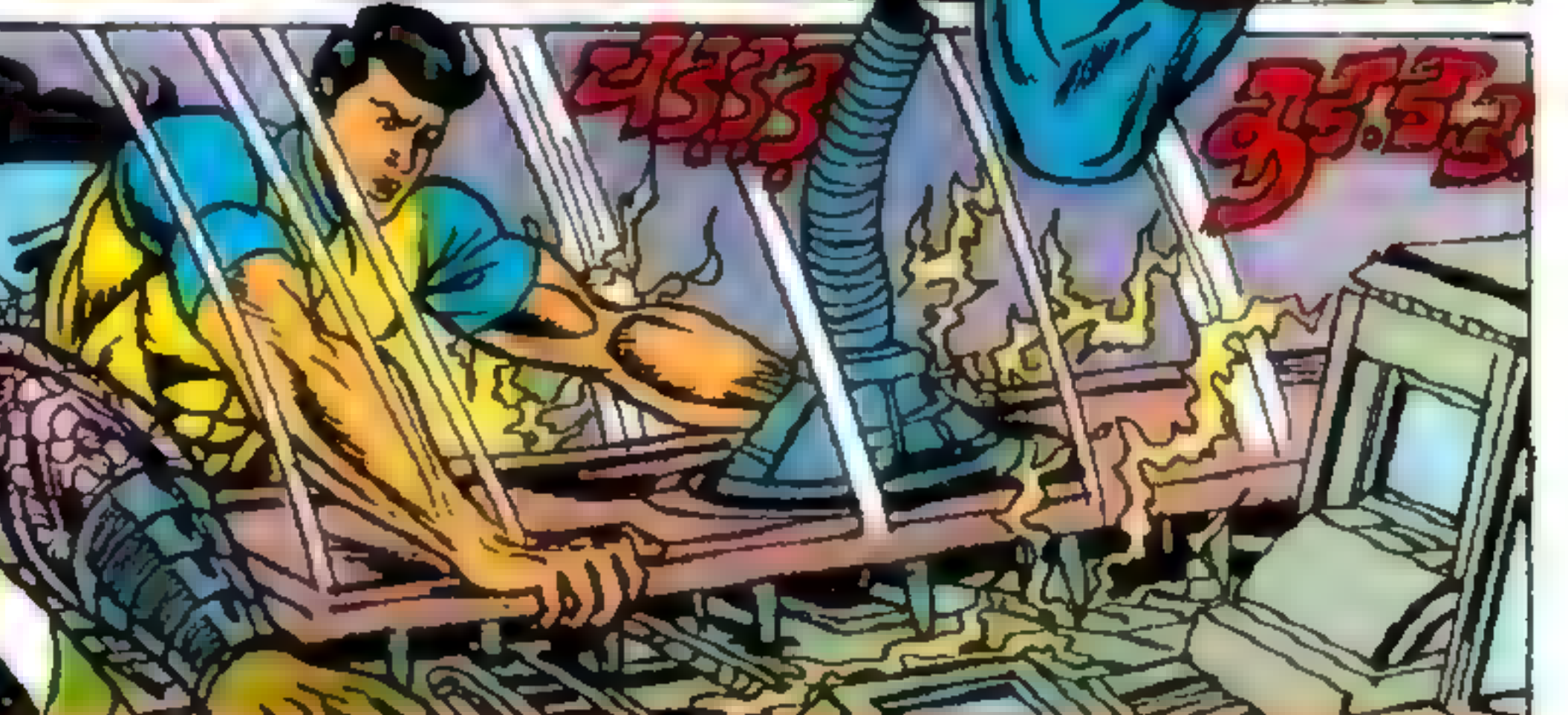
जरूर वह नकाबपोश होगा। चलो! जल्दी कंट्रोल रूम में चलो। कहीं वह हमारे पीछे से कुछ तोड़-फोड़ न कर डाले!

तीनों, ध्रुव की लाश का नजारा देखना भूलकर-

कंट्रोल रूम में पहुंचे-

यहां तो कोई भी नहीं है! अब चलने की आवाज भी नहीं आ रही है!

मार्सेल! तुम ऊपर जाकर देखा। और अगर कोई हो तो स्थिति को संभाल लेना!



दरवाजे की कीलें, कंट्रोल पैनल में अलग-अलग स्थानों पर धंसती चली गईं। और पूरा पैनल शार्ट-सर्किट से चमक उठा—



...उस वक्त मैं दरवाजे की एक कील को अपनी बेल्ट में लगी स्टार से अड़ाकर दरवाजे को रोके हुए था।

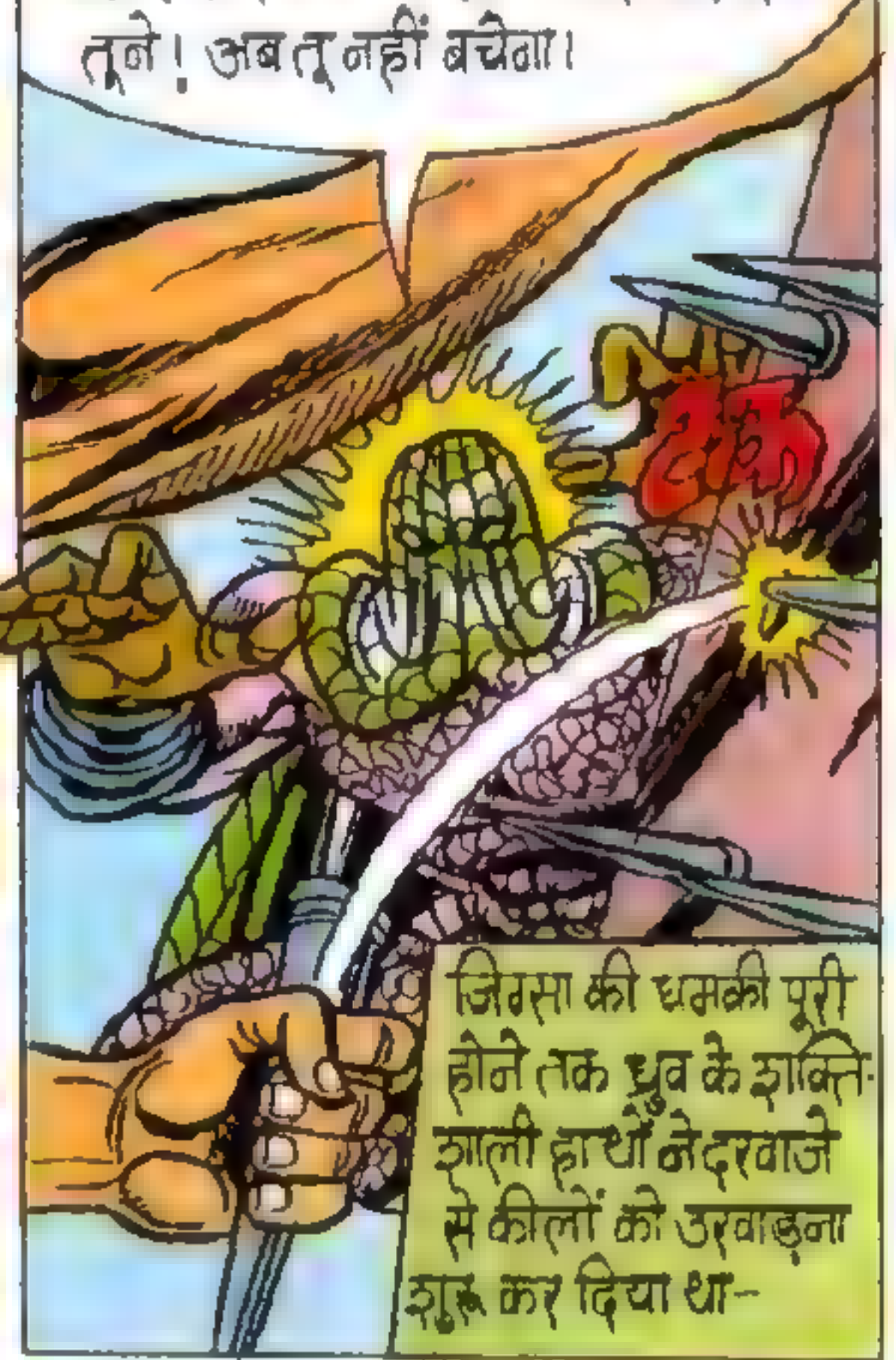
और जब तक दरवाजा अटका हुआ था तब तक मैंने अपने दांतों से कैप्सूल को दबाकर रसिड की धार से तुम्हारे 'पंचिंग किलर' की पीछे की दीवार को काट डाला था!

तुमको ताईजी की वह बात ध्यान से सुननी चाहिए थी जिग्सा, जब उन्होंने कहा था कि दरवाजा अटक रहा है।...

और उसके बाद मेरी चीख की आवाज तुमने सुनी थी, वह सिर्फ इसलिए थी ताकि उसके द्वार में तुम पीछे की दीवार टूटने की आवाज न सुन सको।...

... और आजाद होने के बाद मैंने और एमिड कैप्सूलों का प्रयोग करके अपने हाथों और पैरों को आजाद कर लिया।

तुम सिर्फ 'पंचिंग किलर' से ही आजाद नहीं हुआ है लड़के! तुमने अपनी जिन्दगी से आजाद होने का भी रास्ता हूँद लिया है। मेरी सारी रकीम का सत्यानाश कर दिया तुमने! अब तुम नहीं बचेगा।

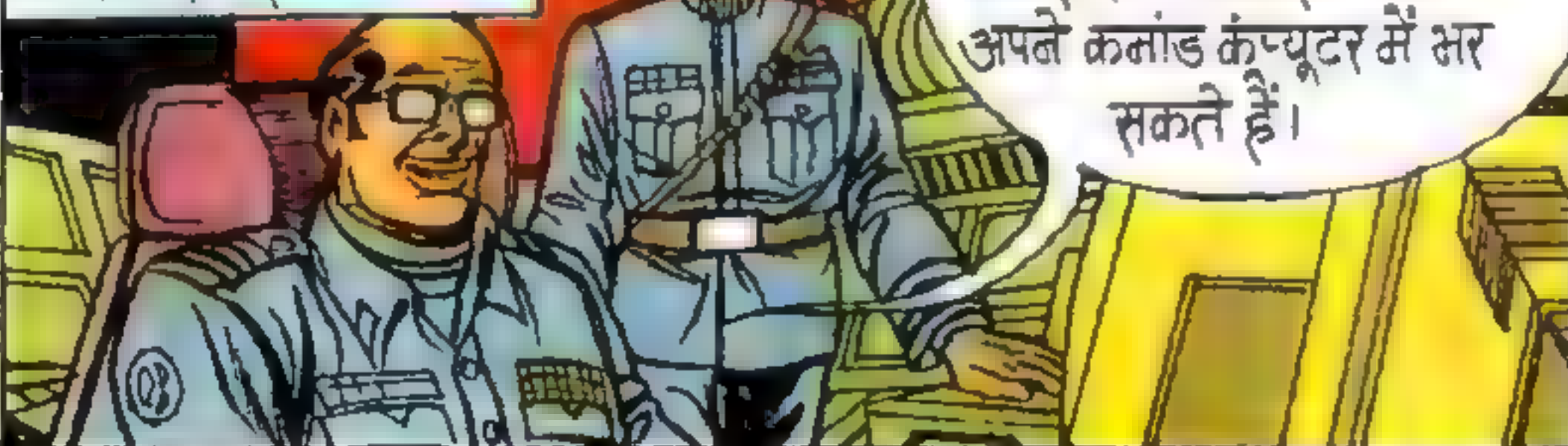


अब बचोगे तो तुम लोग नहीं। क्योंकि तुम लोग न सिर्फ कमीने, विश्वासघाती और खूनी हो, बल्कि तुम लोग पूरी दुनिया के गुनहवार हो।... और गुनहवारों को ध्रुव कमी नहीं छोड़ता।



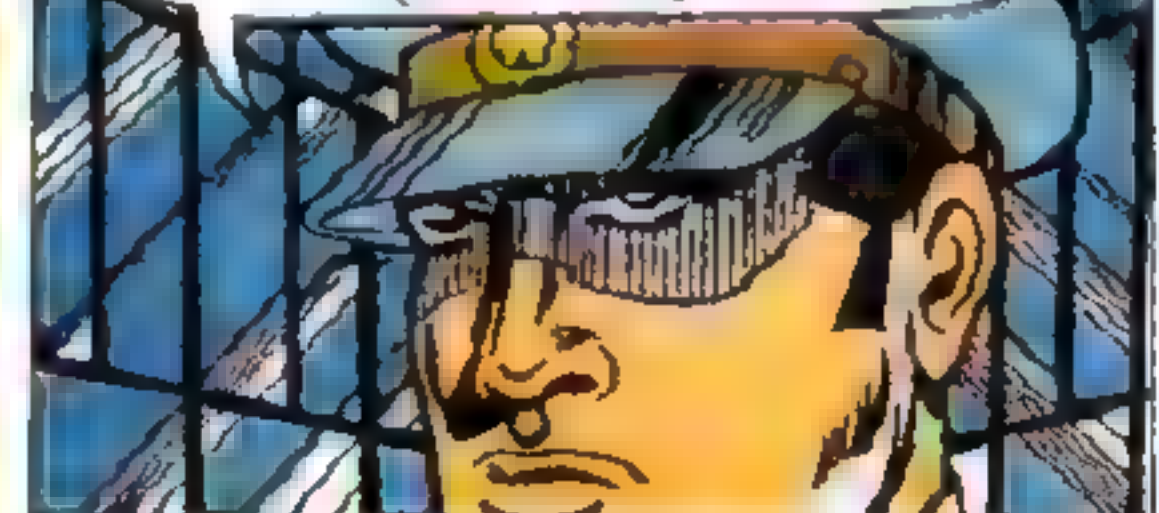
इधर ध्रुव अपने दम पर तीनों षडयंत्रकारियों का अकेला मुकाबला कर रहा था-

और उधर दुनिया वाले चैन की सांस ले रहे थे-



जिबसा का कंप्यूटर कमांड हट गया है सर! अब हम फिर से अपने कमांड कंप्यूटर में भर सकते हैं।

थैंक गॉड! यानी अब पृथ्वी की उस पाबल से कोई खतरा नहीं रहा। पर इस खतरे की टाला किसने?



दुनिया पर आर खतरे को टालने वाला अपने ऊपर आर खतरे की टालने की कोशिश कर रहा था-

तू लड़ता भी बहुत अच्छा है, और तुझमें दिमाग भी बहुत है ध्रुव! लेकिन तुझमें एक कमी है। तू जानलेवा हमला नहीं करता।

और हम अपने दुश्मन पर जानलेवा वार से कम कभी करते नहीं।

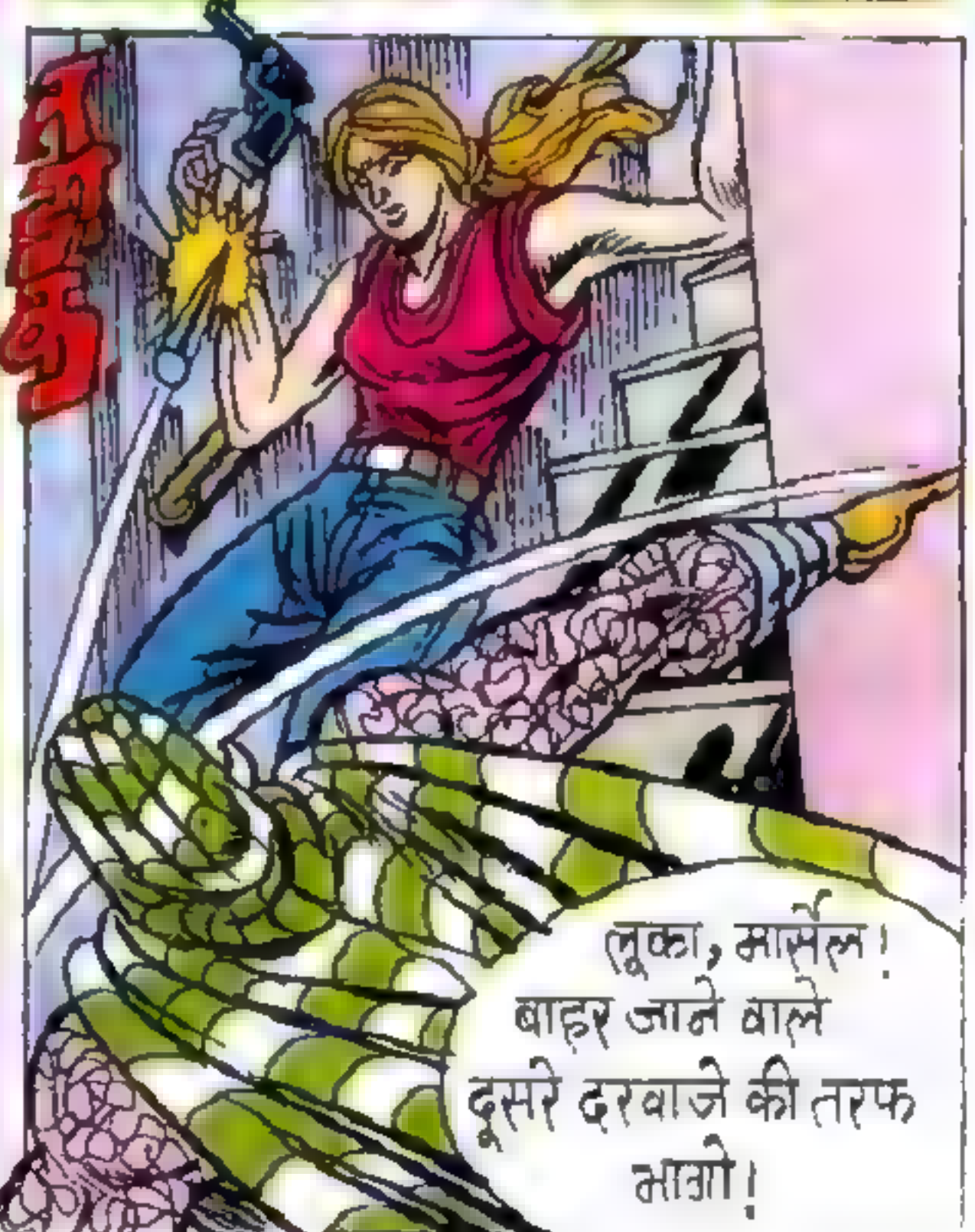
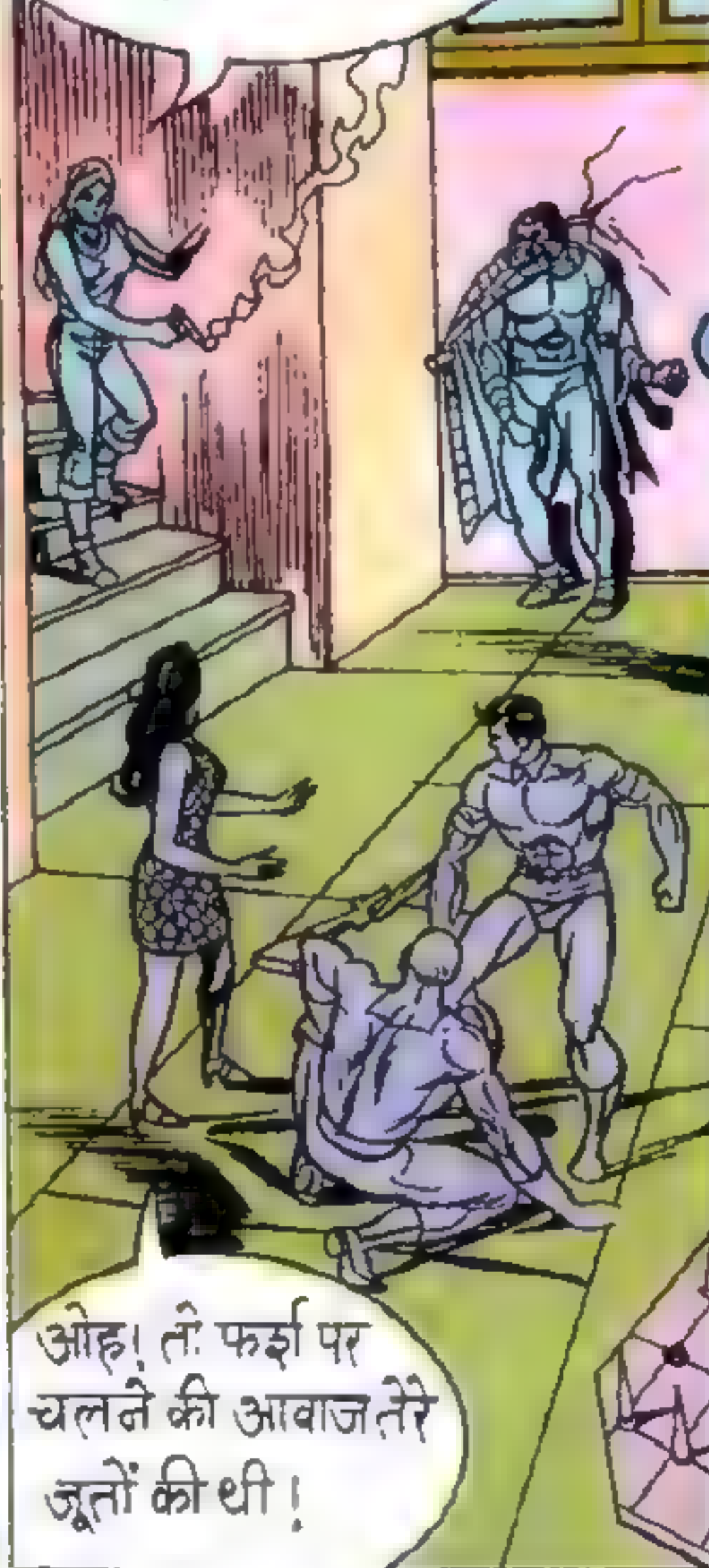
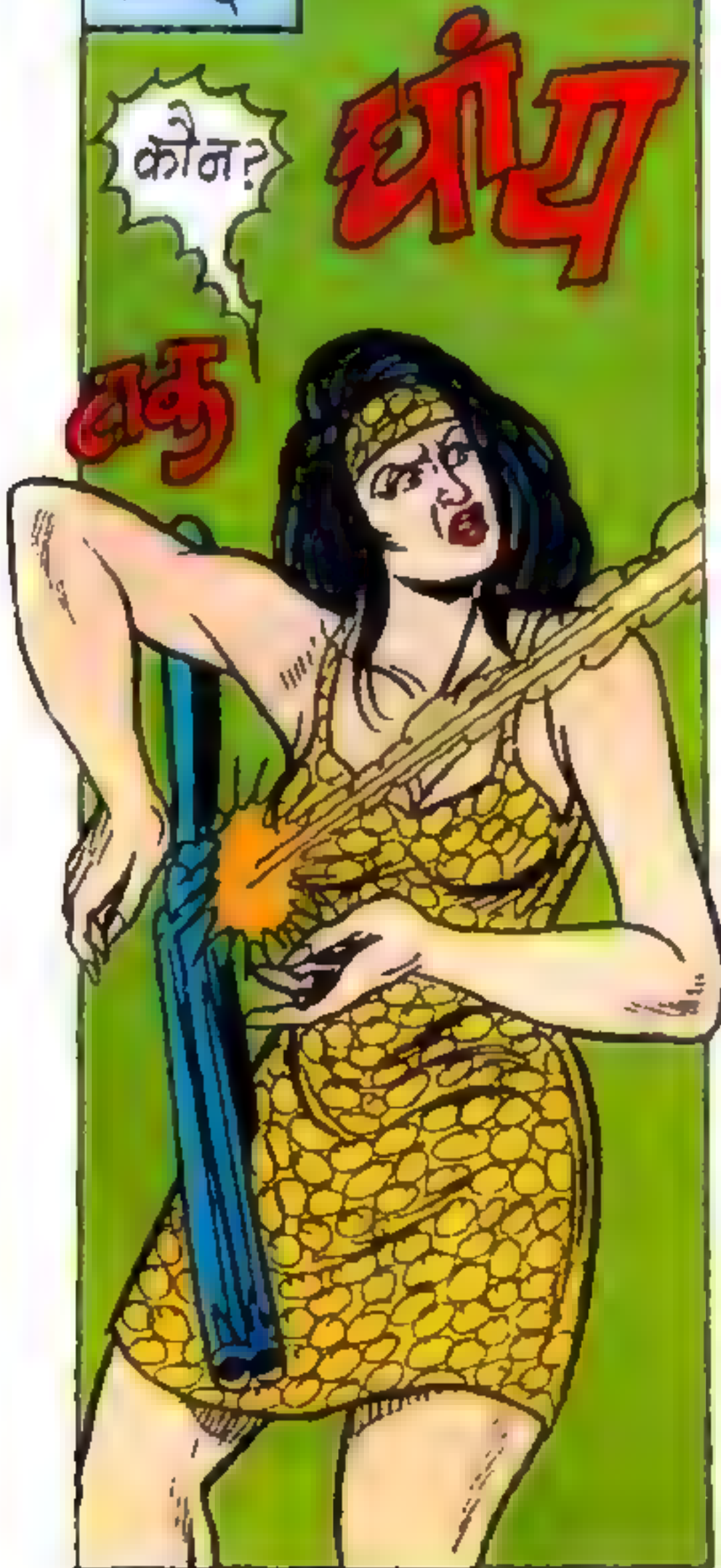


तू जरा दूर हट लूँगा, तो मैं इसके बदल में धेड़ कर पाऊँ।

लेकिन मार्सेल के निशानालगा पाले से पहले वह खुद निशाना बन गई-

मैं इंस्पेक्टर बेरा! और मेरी रिवॉल्वर में अभी पाँच गोलियाँ और बची हैं।... तुम लोग सिर्फ तीन हो। हिलना मत!

जिम्सा परिस्थिति को पूरी तरह से भांप गया था-



सड़क

लूका और मार्सेल भी समझ गए कि अब यहां रुककर लड़ाई करने का कोई फायदा नहीं है-

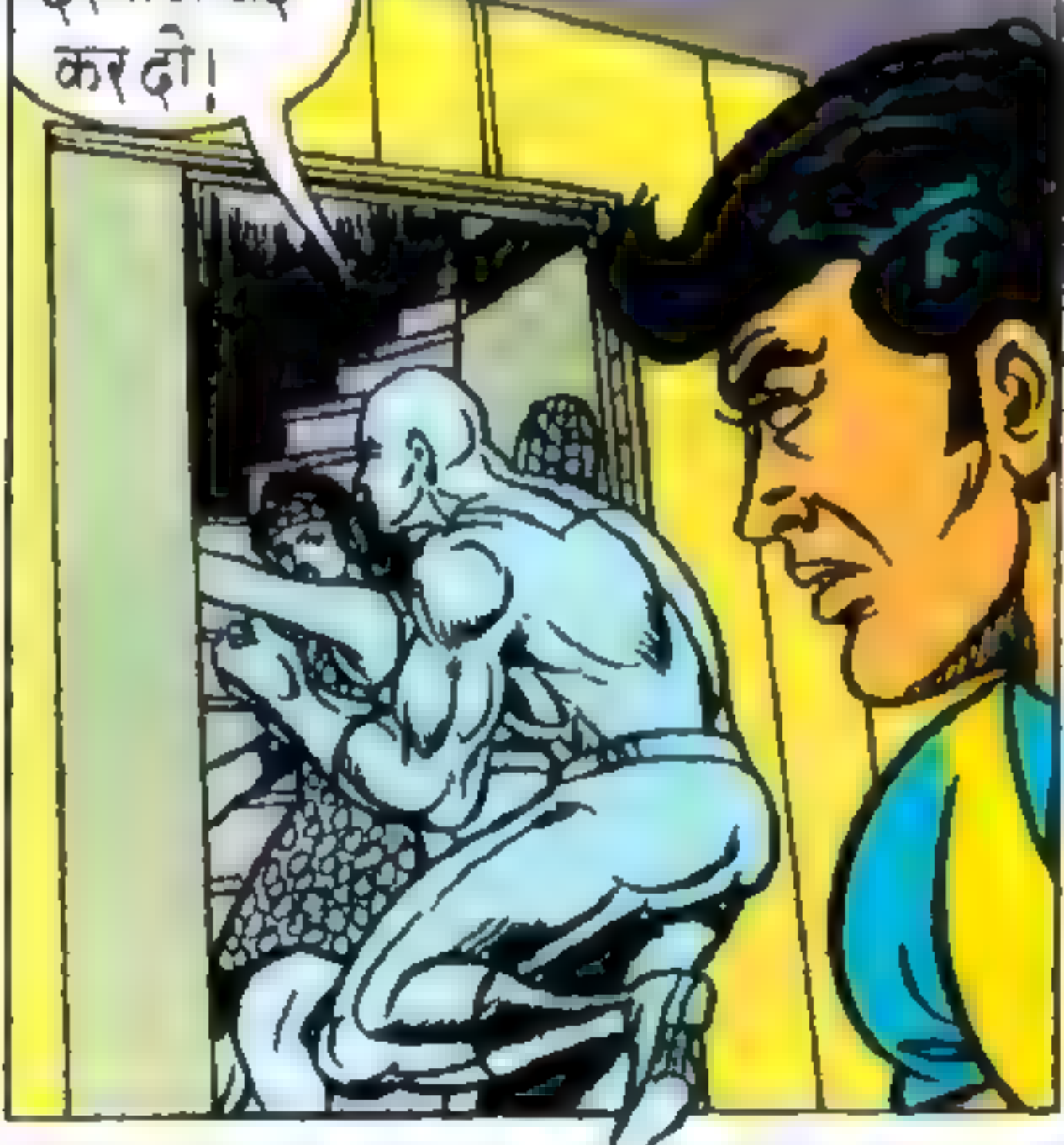
आह!



इससे पहले कि ध्रुव, संभलकर लूका, मार्सेल या जिबसा को रोक पाता-

वे तीनों एक दरवाजे में घुस चुके थे-

दरवाजा बंद कर दो!



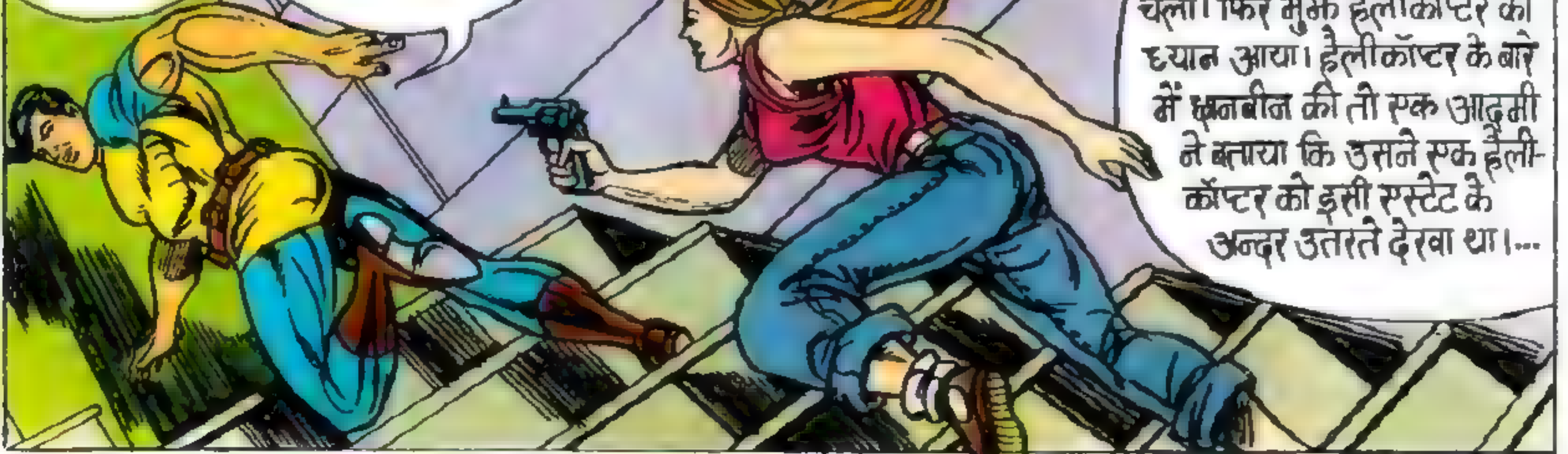
आह! बड़ा मजबूत दरवाजा है।



दरवाजा तोड़ने में समय बर्बाद मत करो ध्रुव! वे जरूर इस रास्ते से ऊपर ही गए होंगे।

हम दूसरे रास्ते से ऊपर जाकर उनकी पकड़ सकते हैं!

तुम ठीक कह रही हो! आओ! लेकिन तुम सकारक यहां पर कैसे आ गईं?



मैंने इस इलाके में बहुत पूछ-ताछ की। पहले तो कुछ पता नहीं चला। फिर मुझे हेलीकॉप्टर का ध्यान आया। हेलीकॉप्टर के बारे में खानबीन की तो एक आदमी ने बताया कि उसने एक हेलीकॉप्टर को इसी एस्टेट के अंदर उतरते देखा था।...

मैं भागी-भागी यहां पर आई! तुमको सावधान करने के लिए। लेकिन यहां पर तो सन्नाटा पड़ा हुआ था। थोड़ी देर तक तो मैंने इधर-उधर तलाश की, लेकिन कोई नजर नहीं आया।..

... मैं वापस जाने ही वाली थी कि तभी एक नक़बपोश न जाने कहां से आ गया। इससे पहले कि मैं उस पर हमला करती, उसने मुझे झुल्ल रहने का इशारा करके इस घड़ी के पीछे से नीचे जाने का रास्ता दिखा दिया।

और फिर, जब मैं नीचे पहुंची तो उसके बाद की बात तो तुम जानते ही हो

हूँ! लेकिन अब यह कैसे पता चलेगा कि इतनी बड़ी स्टेट में वे तीनों कहां पर बाहर निकले हैं?

कहीं वे उसी हेलीकॉप्टर के जरिए भाग न निकलें।

हेलीकॉप्टर से वे भाग नहीं सकते। क्योंकि यहां आने से पहले मैंने उस हेलीकॉप्टर को ढंढकर उसकी सुरक्षा के लिए कुछ पुलिसवालों को वहां पर तैनात कर दिया था।

अब उनको काफी देर तक... अरे! यह इसी स्टेट में रहना...

आवाज कैसी थी?

ऐसा लगा जैसे कुछ दूटा हो और साथ में कोई धड़ाम से गिरा हो। आओ! आवाज उधर से आई है।

धम धम धम
कड़कड़

ध्रुव और वेरा भागकर, आवाज की दिशा का पीछा करते हुए-

घटनास्थल तक पहुंच गए-

जहां पर एक आश्चर्य उनका इंतजार कर रहा था-

यह तुमने अक्लमंदी का काम किया। कम से कम जिम्सा के भागने का एक रास्ता तो बन्द कर दिया!

जिम्सा! यह तो जिम्सा है।

टूटने की आवाज गमले की होगी और गिरने की आवाज जिम्सा की!



लगभग पन्द्रह मिनट के अन्दर ही पूरी स्टेट पुलिस वालों से भर गई थी। जिम्सा उर्फ रघुपति को पुलिस ने कड़ी सुरक्षा में गिरफ्तार कर लिया था-

हमने पूरी बिल्डिंग का चप्पा-चप्पा छान मारा है ध्रुव! लेकिन न तो किसी नकाब پوشा का पता मिला, और न ही मार्सेल और लूका का!

रवैर! वे बचकर कहाँ जायेंगे? जिम्सा पकड़ लिया गया है। तो वे भी पकड़े ही जायेंगे। एक बार जिम्सा होश में आ जाय तो उससे सब उगालवा लेंगे।



हम! सुनो बेरा! मुझे तुमसे कुछ इधर आओ!

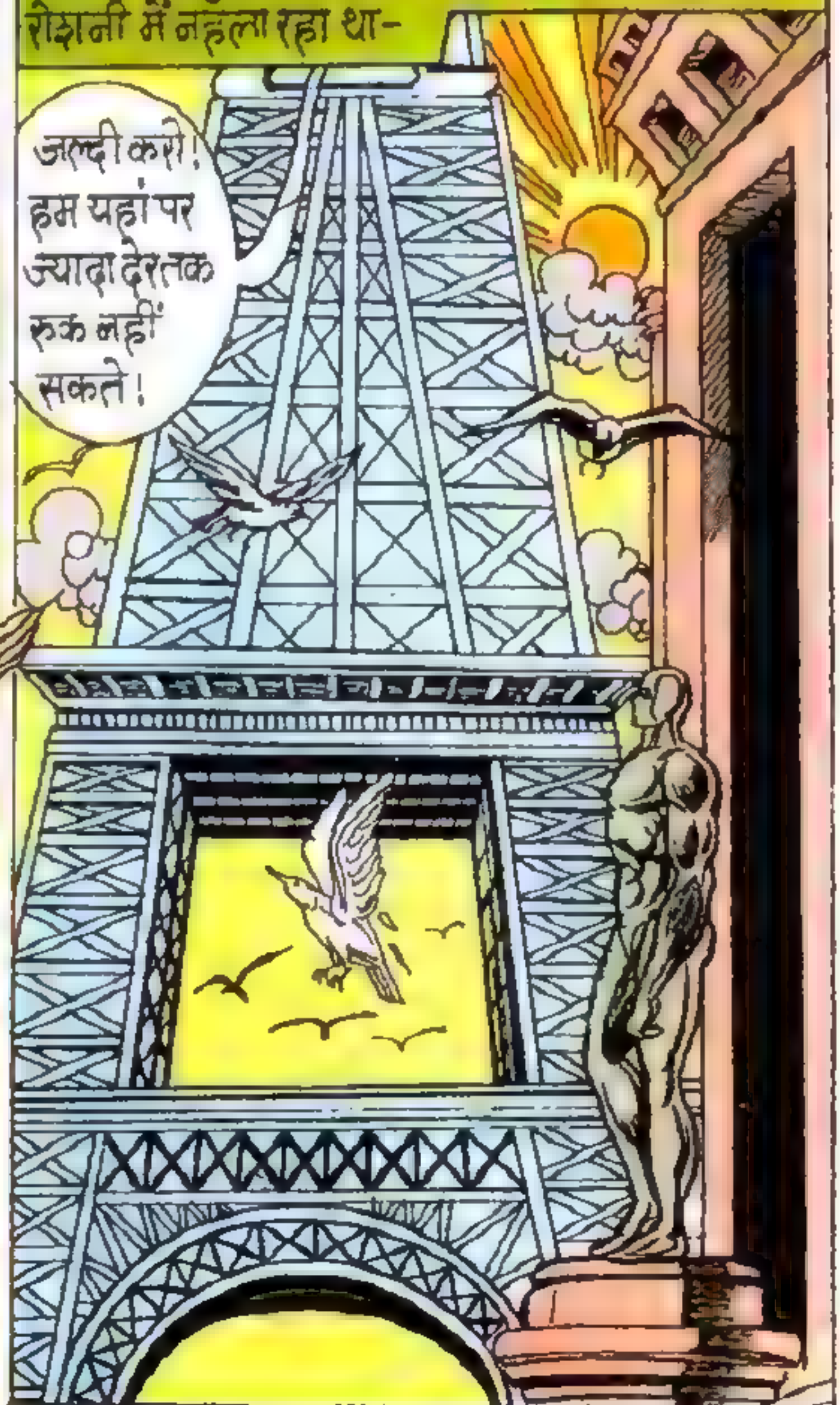
मुझे तुमसे कुछ काम है।

मुझे एक हेलीकॉप्टर चाहिए। मुझे जल्दी से जल्दी पेरिस पहुंचना है। अब तुम क्यों और किसलिए जैसे सवाल मत पूछना। क्योंकि अभी मेरे पास कोई जवाब नहीं

ओ. के. ध्रुव! मुझे तुम पर भरोसा है कि तुम जो भी करोगे, उसके पीछे कुछ न कुछ मतलब जरूर होगा!

और उधर सुबह का सूरज पेरिस की अपनी सुनहरी रोशनी में नहला रहा था-

जल्दी करो! हम यहां पर ज्यादा देर तक रुक नहीं सकते!



वैसे अगर तुमको किसी तरह की मदद की जरूरत हो तो...

मैं अपनी मदद का इंतजाम। और जब तक मैं कोई खबर न भेजूं, खुद कर लूंगा। फिलहाल सब तक तुम दादाजी के पास ही रहना! तुम जल्दी करो!

इधर ध्रुव पेरिस जाने की तैयारी कर रहा था-



जल्दी कैसे करूं?
'स्क्रेमबलर' तो मिल ही
नहीं रहा है। यहीं पर
फिट किया था न?



तुम लोवा कहीं इसे तो नहीं
ढूँढ़ रहे हो?

धुव!

तू...तू यहां तक कैसे
आ गया?

तुम लोवों की बॉय-बॉय कहना तो
भूल ही गया था। और तुम लोवों के
लिए जेल के तीन वन-वे टिकट
कटार थे। वे भी देने थे।

मैं तो काफी देर से
तुम लोवों का यहां पर
इंतजार कर रहा था!



पर...पर तू यहां
तक कैसे आ गया?
और तुझे यह कैसे पता
चला कि रघुपति जिवसा
नहीं है?

धड़क



क्योंकि 'स्क्रेमबलर' मिलने के बाद यह
पक्का हो गया था कि तुम लोवा यहीं पर आओगे!

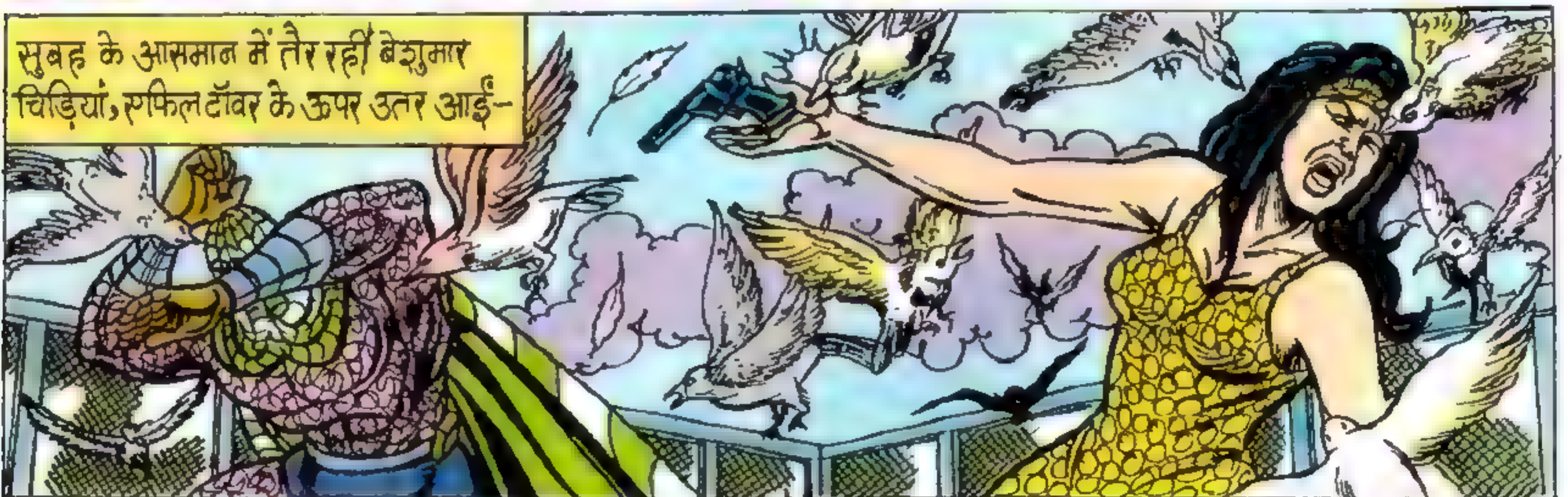
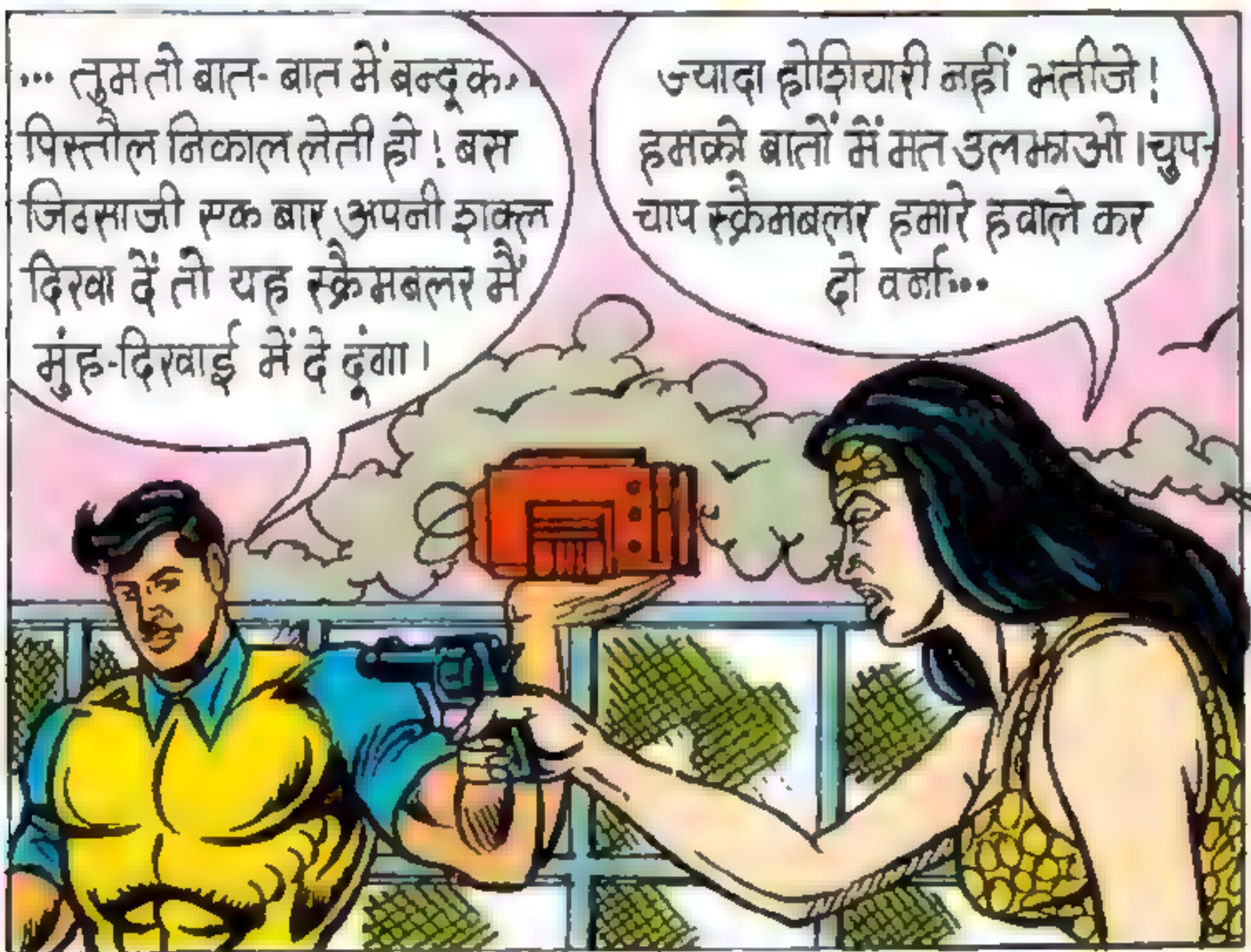
बैसे भी मुख्य
अपराधी जिवसा को
पकड़ना बाकी
था न!



यहां तक आने में तो तुमने ही
मेरी मदद की है जिवसा! बेसमेंट
में लड़ाई के दौरान तुमने ही
स्क्रेमबलर का जिक्र करके यह
बताया था कि वह एक गुप्त जगह
पर लगा है! ...

... उसके बाद जब मैंने अपनी और तुम्हारी
मुलाकात के बारे में सोचा तो मुझे स्फिल टॉवर
का ध्यान आ गया। मैंने सोचा कि स्क्रेमबलर
जैसे यंत्र को किसी बहुत ऊंची जगह पर
ही फिट किया गया होगा, ताकि उसकी
किरणें दूर-दूर तक फैल सकें। बस, ये दोनों
बातें ध्यान में आते ही मैंने स्फिल
टॉवर की चेक करने का चांस
लिया...

... और किस्मत की
बाल थी कि तुम लोवा
यहीं पर मिल गए!



चिड़ियों के लगातार हमलों ने
मार्सेल और जिवसा के कसबल
ढीले कर दिए-

अब बील जिवसा! खुद
नकाब उठाएगा, या चिड़ियों
से उठवा दूँ?

उठाता हूँ। उठाता हूँ
मेरे बाप!

पहले चिड़ियों को
तो रोकी!



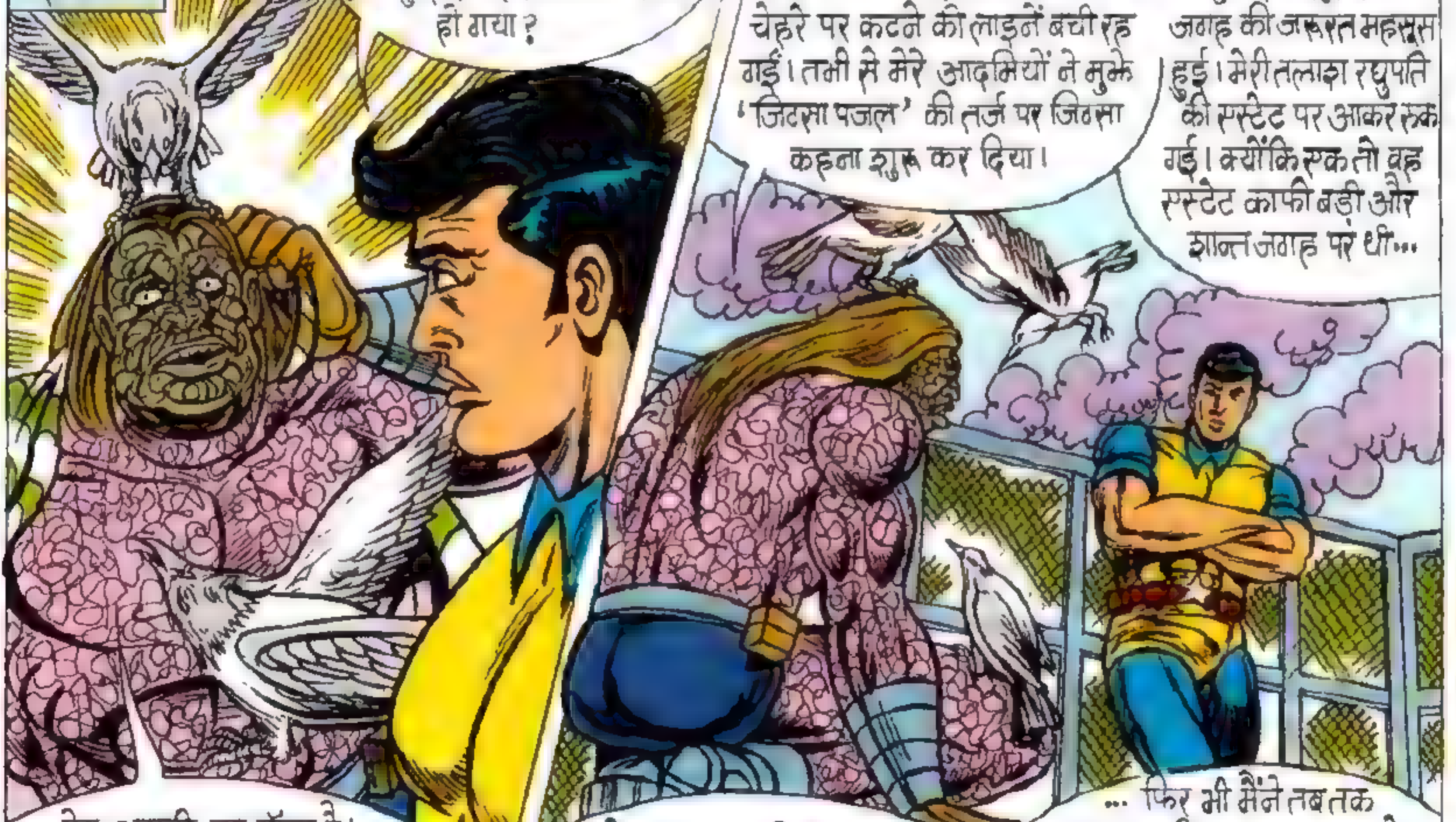
ध्रुव ने एक सीटी बजाकर चिड़ियों को रोक दिया, और-

जिवसा ने नकाब उठाने
में एक पल की भी देर
नहीं की-

ओहो! चेहरा तो बहुत खूबसूरत
है तुम्हारा। लेकिन तुम हो कौन,
और तुम्हारे चेहरे का कटपीस कैसे
हो गया?

... उसी से मेरा चेहरा जगह-
जगह से कट गया था। बेशुमार
टाँके लगवाने पड़े, लेकिन फिर मेरे
चेहरे पर कटने की लाइनें बची रह
गईं। तभी से मेरे आदमियों ने मुझे
'जिवसा पजल' की तर्ज पर जिवसा
कहना शुरू कर दिया।

धीरे-धीरे जब मेरा
अपराध क्षेत्र फैलने लगा
तो मुझे एक सुरक्षित
जगह की जरूरत महसूस
हुई। मेरी तलाश रघुपति
की सस्टेट पर आकर रुक
गई। क्योंकि एक तो वह
सस्टेट काफी बड़ी और
ज्ञान जगह पर थी...



मेरा असली नाम सॉटर है।
मैं... मैं मार्सेल का भाई हूँ। लूका
का मामा। बचपन में एक जगह से
चोरी करके भागते समय मैं अपने मुँह
से खिड़की का कांच तोड़कर बाहर कूद
पड़ा था...

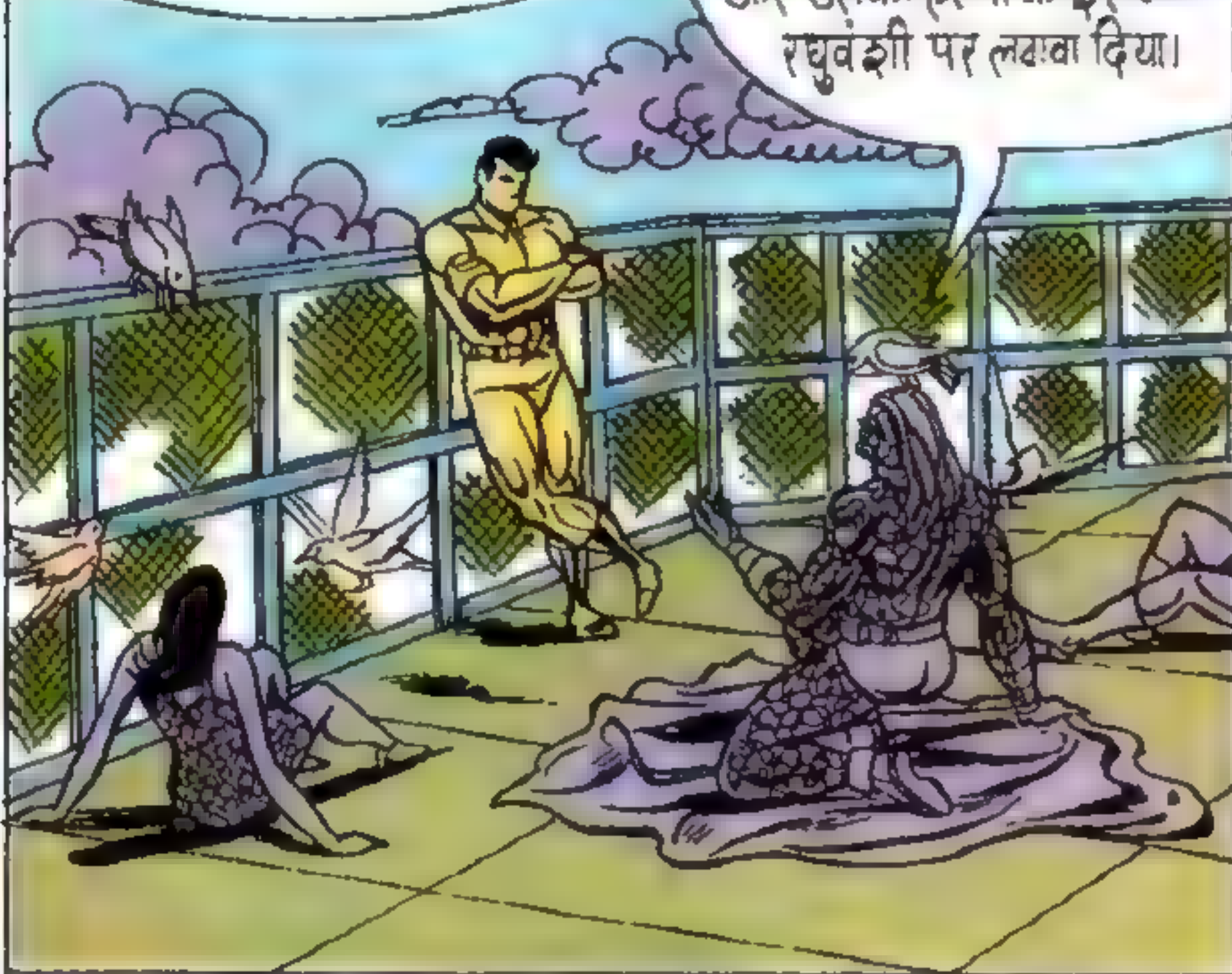
... और दूसरे रघुपति के खानदान
की पूरे इलाके में काफी इज्जत थी।
रघुपति को फँसाने के लिए मैंने अपनी बहन
मार्सेल का सहारा लिया। मार्सेल ने रघुपति
को अपने रूपजाल में फँसाकर उससे शादी
कर ली...

... फिर भी मैंने तब तक
इन्तजार किया, जब तक उनके
एक बेटा नहीं हो गया। उसका
नाम लूका रखा गया। जब
लूका छः-सात साल का हुआ तब
मैंने अपना जाल फैलाना शुरू कर दिया।

रघुपति का छोटा भाई रघुवंशी बाहर रहकर पढ़ता था। इसीलिए रघुपति और उसके बाप की अंधेरे में रहकर मैंने अपना हैडक्वार्टर उसी एस्टेट में बना लिया। गड़बड़ तब शुरू हुई जब अपनी पढ़ाई पूरी करके रघुवंशी वापस आया।

थोड़ा झक उसे हुआ और बाकी की कसर उसके दोस्त इंस्पेक्टर ल्यूबेक की धन-बीन में पूरी कर दी। लेकिन इससे पहले कि वह हम तक पहुंचते, ल्यूबेक को मैंने मरवा डाला, और उसकी हत्या का इल्जाम रघुवंशी पर लगावा दिया।

मार्सेल ने रघुवंशी को यह कहकर भगा दिया कि अगर वह पकड़ा गया तो उसे फांसी ही जाएगी। रघुवंशी डरकर भागा गया और आगे की कहानी तो तुम जानते ही हो।...हुड़ा, हुड़ा!



हां! अब और आगे की कहानी मैं तुमको बताता हूं। तुम तीनों को मैं पुलिस के हवाले करने जा रहा हूं, और...

...अब से मरने तक तुम तीनों अपनी उम्र जेल में काटोगे। अगर तुम लोगों को फांसी नहीं हुई तो!

और फिर बाद में ल्योन की एस्टेट में-

तुमने तो कमाल कर दिया ध्रुव! वर्ना तो मैं कहता रहता कि मैं जिग्सा नहीं हूं और कोई चकीन ही नहीं करता!



मेरे रहते ऐसा हो ही नहीं सकता था ताऊजी!

सारी गुत्थियां सुलझ गईं। बस एक गुत्थी बाकी रह गई है। वह नकाबपोश कौन था?

उसका भी पता चल जाएगा बेरा! पहले दादाजी की देरकर आते हैं। आओ!

लेकिन एक बात तो बताइए ताऊजी! जब आप पहले से ही जिग्सा की सच्चाई जानते थे तो फिर आपने मुझे बताया क्यों नहीं?



जिग्सा ने पिताजी की मारने की धमकी देकर मुझे आतंकित कर दिया था। मैं जुबान खोलने का साहस ही नहीं कर पाया!

जल्दी ही तीनों दादाजी के पास खड़े थे-

उठिए दादाजी! अब न तो आपकी पक्षाघात का रोगी बने रहने की सकिंवा करनी है, और न ही नकाबपोश बनने की।...



...क्योंकि जिग्सा नाम का खतरा खत्म हो चुका है।

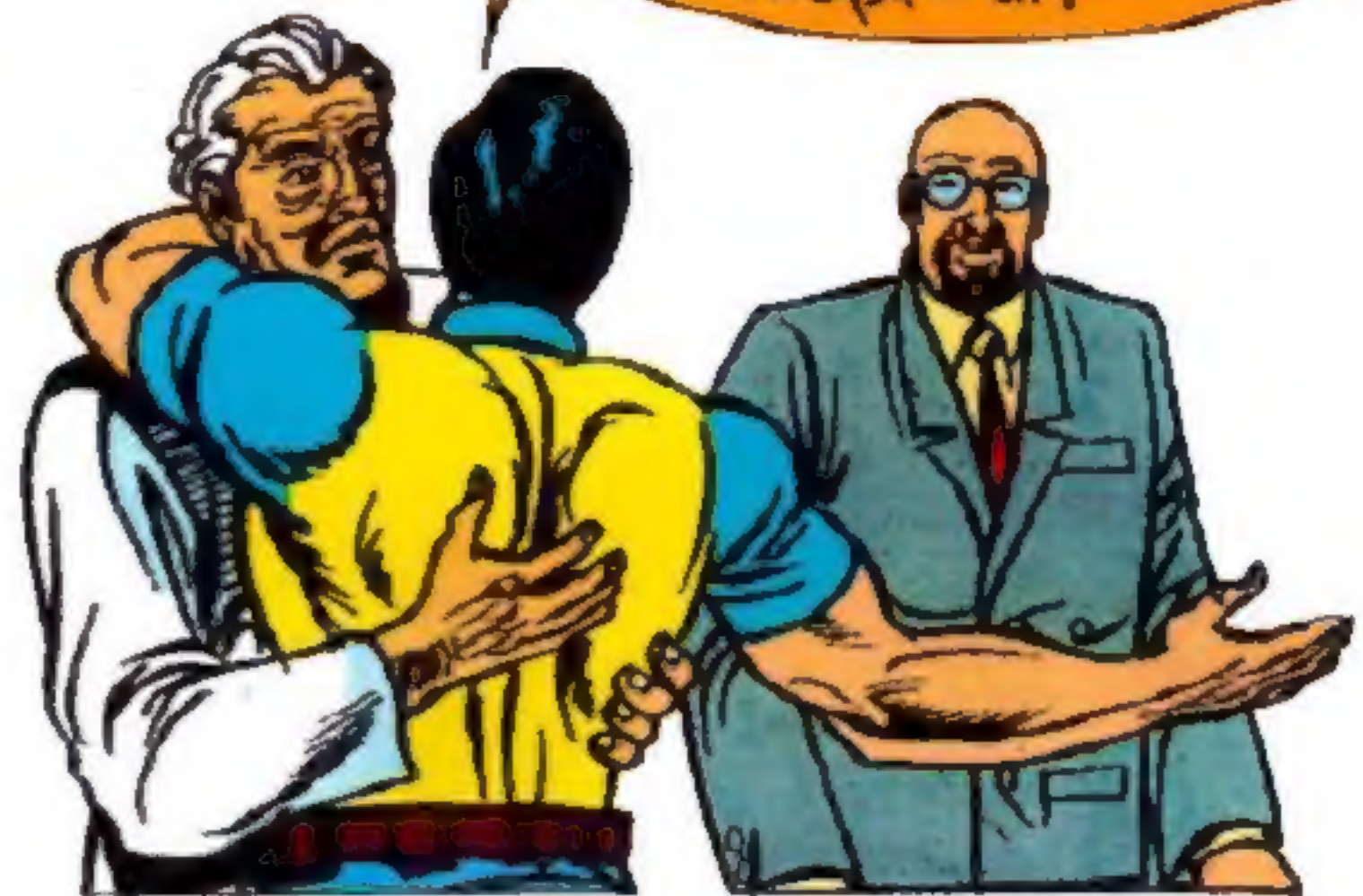


कमाल है मेरे बच्चे! तु कैसे समझ गया कि मैं ही नकाबपोश था और पक्षाघात का रोगी होने की रकटिंग कर रहा था!

यह बात तो रघुपति के अत्याचारी और कीड़े नहीं जानता था!

मैं भी आपका ही पोता हूँ दादाजी!...

...एक तो वह नकाबपोश मेरा दोस्त था, और दूसरे वह पुलिस तक की पूरी इमारत का चप्पा-चप्पा छानने के बाद भी नहीं मिला, यह दोनों बातें सिर्फ आप पर ही फिट होती थीं!



यह सोचकर मेरा सीना चौड़ा हुआ जा रहा है कि मेरा वारिस इतना बुद्धिमान और इतना जांबाज इन्सान है।

हम तो तुम्हें नहीं दूँद पार लेकिन तुने ही हमें दूँद निकल अब तू आ गया है तो इस रस्टेट की देखभाल कर, और हमको रिटायरमेंट दे दे।

नहीं दादाजी! मेरा यहाँ पर रह पाना संभव नहीं है।



इन्सान को जिन्दगी तो भगवान देता है, लेकिन उसका पालन-पोषण तो पृथ्वी ही करती है। आप मेरे लिए भगवान के स्थान पर जरूर हैं...

...लेकिन मेरी पृथ्वी राजनगर है। मेरा स्थान उन लोगों के पास है जिन्होंने मुझे तब अपनाया, जब मेरा कीड़े नहीं था!

वैसे मैं आप लोगों से मिलने जल्दी-जल्दी आता ही रहूँगा...

...और आप लोग भी जब दिल चाहे, मेरे पास आ सकते हैं!

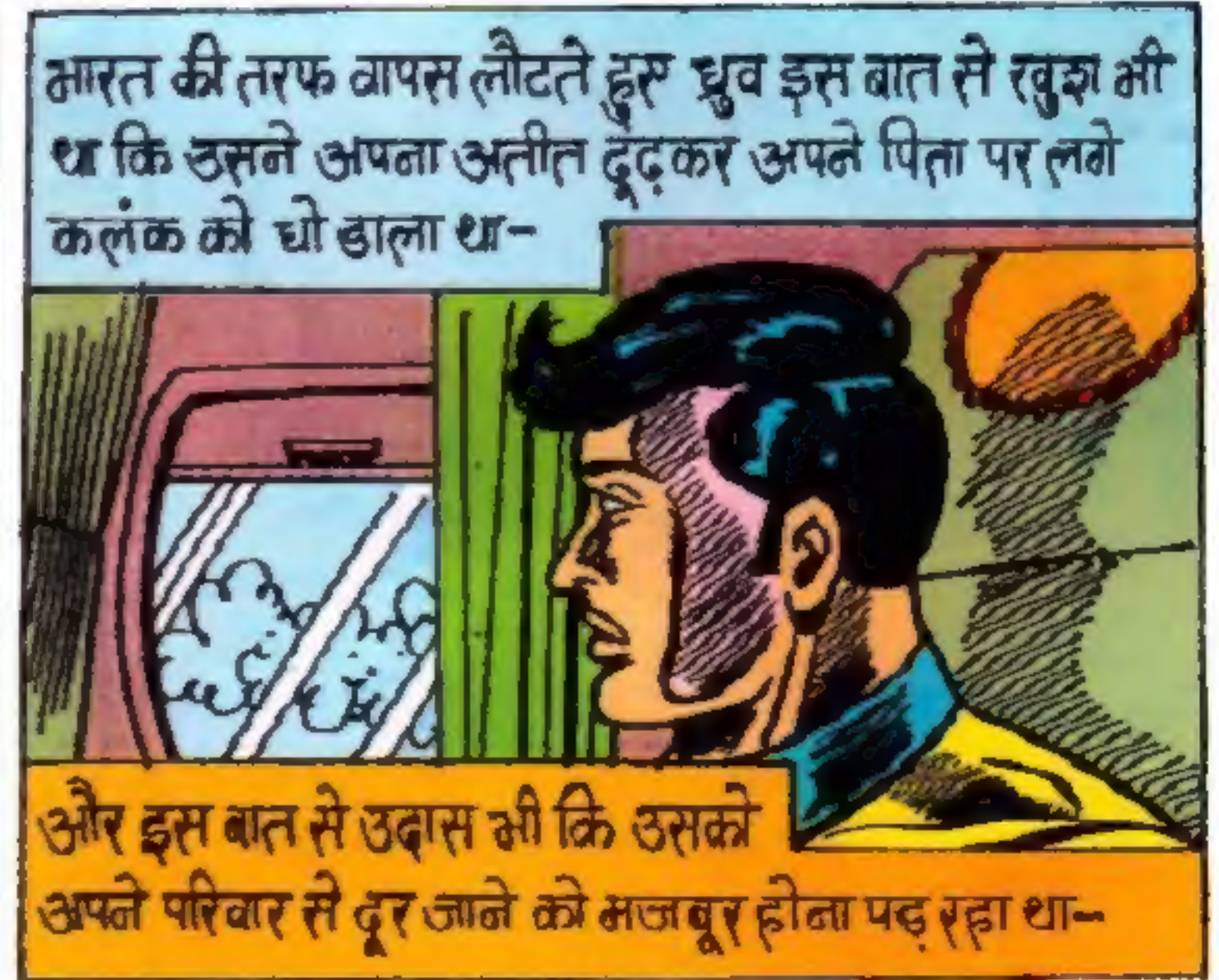


फिलहाल तो मुझे जल्दी से जल्दी राजनगर वापस पहुँचना है। नजाने मेरे पीछे से अपराधियों ने उसका क्या हाल कर दिया हो!

ठीक है ध्रुव! अगर किरमत ने मिलाया तो फिर मिलेंगे।

बॉय, वेरा!

और तुम्हारी मदद के लिए धन्यवाद!



भारत की तरफ वापस लौटते हुए ध्रुव इस बात से खुश भी था कि उसने अपना अतीत दूँदकर अपने पिता पर लगे कलंक को धो डाला था-

और इस बात से उदास भी कि उसको अपने परिवार से दूर जाने को मजबूर होना पड़ रहा था-



बस नागराज, बस!
तुमने 'राज' का एक कायर के रूप
में बहुत इस्तेमाल कर लिया। आज से राज
नागराज का छद्म रूप बनकर नहीं जाएगा। आज
से राज की अपनी जिन्दगी होगी। और वह
नागराज से भी आगे बढ़कर दिखाएगा।
अब से अपराधियों का पीछा राज
करेगा, नागराज नहीं।...

...अब से यहां
पर होगा राज का
राज!

आह! यह कैसे हो सकता है? राज का
रूप मुझसे अलग कैसे हो सकता है?
और...और अलग होकर वह इतना
शक्तिशाली कैसे बन गया कि मुझे भी
आसानी से मात दे सके।

स्थिति यकीन करने के लायक तो
नहीं है पर यह सच है। मुखौटे ने
चेहरे पर से उतरकर एक जिंदा
रूप धारण कर लिया है। आखिर
यह रहस्य है क्या? यही तो
नागराज जानना चाहता है, हम
भी और शायद आप भी।...

...चलिए मिलकर ढूंढ़ते हैं...

राज का राज

राज कॉमिक्स में नागराज का एक सुपर सस्पेंसफुल विशेषांक

तुम लोगों ने मेरा
ममीकृत शरीर और
मेरा खजाना कब्र से
निकालकर घातक भूल
की है। अब मैं
अपनी कब्र खोदने के
जुर्म में पूरे राजनगर को
एक रेगिस्तानी कब्रगाह
बना डालूंगा।

ओप्फ! इसके
घूमते शरीर से
निकलती रेत तो
मुझे अंधा किए
दे रही है।

और मुझे अभी तक यह भी
समझ में नहीं आ रहा है कि ये सचमुच की
ममी है या ममी का रूप धरकर नाटक करने
वाला कोई इंसान। अब मैं कैसे बचाऊं
राजनगर पर टूटने से...

इस राज कॉमिक्स विशेषांक को आप सदियों तक सुरक्षित रखना चाहेंगे। यह ममी का वादा है।

ममी का कहर

by अनुपम V/20

इस
'अल्फा मैन'
को रोकें तो
कैसे? हमारे वार
तो इसके आर-
पार हो रहे
हैं।

कोशिश
करते रहना ही
एकमात्र रास्ता है,
शक्ति!

तुम्हारी
अग्नि के कारण
ये नजर आ रहा
है। वरना हम तो
इसे देख भी न
पाते।

120 पृष्ठों
में फैली
राज कॉमिक्स
की एक
गौरवशाली
भेंट

अप्रैल 2000
में उपलब्ध

कुछ भी हो
जाए दोस्तो, पर इसे, इस
अंधी बच्ची तक नहीं पहुंचने
देना है क्योंकि सिर्फ यही एक है
जिसकी दृष्टि इसके रेडिएशन रूप
को देख सकती है।...अगर इसे
कुछ हो गया, तो अल्फा मैन
मचाता रहेगा, पूरी
दिल्ली में...

कौहराम

ऐसा कहर न तो पहले कभी पृथ्वी पर बरसा है और न ही बरसेगा।

by
अनुपम